अथ शशिवृतावर्णनं नाम प्रस्ताव ।

(पचीसवां समय ।)

शशिव्रता की आदि कथा वर्णन की सूचना ।

दूहा ॥ आदि कथा शशिहत्त की । कहन अव्व संमूल ॥
दिल्ली वै पतिसाहि ग्रहि । कढ्ढि लच्छि उन मूल ॥ छं० ॥ १ ॥

ग्रीष्म में पृथ्वीराज का विहार करना ।

अरिल्ल ॥ ग्रीषम ऋतु क्रीड़त[1] सुराजन । षिति उकलंत षेह नभ साजन ॥
विषम वायु तपित[2] ततुभाजन । लग्गि सीत सम्मीर सुकाजन[3] ॥ छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ लग्गि सीत कल मंद । नीर निकटं सु रजत घट[4] ॥
अमित सुरंग तुर संष । ततह उवटंत रजति पट ॥
मलय चंद मल्लिका । धाम धारा ग्रह सुब्बर ॥
रंजि बिपन बाटिका । तीस द्रुम छांह रजति तरु ॥
कुमकुमा अंग उवटंत अति । मधि केसर घनसार घति ॥
क्रीलंत राजं ग्रीषम सुरिति । आगम पावस भइय भति ॥ छं० ॥ ३ ॥

ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आरम्भ होना ।

गाथा ॥ ग्रीषम वित्तिय कालं । आगम पावस दीह मझ्झेनं ॥
दिसि दष्षिन वर देशं । नाइक[5] आइ चंद्रोदयं नामं ॥ छं० ॥ ४ ॥

राजा सभा में बैठे थे कि एक नट आया, राजा ने आदर कर उसका परिचय पूछा ।

सभा विराजित राजं । तहां नट आइ पत्त संगीतं ॥
मिलत मानं दिय राजं । पुच्छिय विगति देस रच मझ्झं[6] ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) ए०—कृ०—को०—क्रीलंत ।
(२) मो०—कृ०—को०—तपि तम तन ।
(३) मो०—राजन ।
(४) मो०—पट ।
(५) ए०—कृ०—को०—नाइक ।
(६) ए०—कृ०—को०—मध्यं ।

नट को गुण दिखलाने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ इम संभरि न्रप उच्चरिय। अहो सु नट गुरराइ ॥
गुन उधार[1] कछु किज्जियै। ज्यों दिज्जै दानाइ ॥ छं० ॥ ६ ॥

नट का कहना कि मैं नाटक आदि सब गुण जानता हूं आप देखिए सब दिखाता हूं।

गाथा ॥ नाटक प्रमान कथयं[2]। सुनि राजन श्री ढिल्लीसं ॥
पाचं घर के सव्वं। गुन सुनियै चितयं लायं ॥ छं० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ अवसर नत्त प्रगट्ट किय। जंच म्रदंग सुतान ॥
करिय राग श्री उंचकर। करन न्रत्य बहु गान ॥ छं० ॥ ८ ॥

देवी की बन्दना करके नृत्य आरम्भ करना।

आदि सकल अस्तुति करिय। पहुपंजलि पटिदेव ॥
करि मंगल[3] धरनी निरषि। करन न्रत्य अति भेव ॥ छं० ॥ ९ ॥
चंद चारु मागध सुभट[4]। गीत प्रबंध प्रसन्न[5] ॥
उघटि चिघटि सब प्रमुष दै। देषि विगति सुर भिन्न[6] ॥ छं० ॥ १० ॥

नट का नाच के आठ भेद बतलाना।

तब सुनह इम उच्चरिय। हो राजन नर इंद ॥
बहु विवेक संगीत कल। अष्टह न्रत्य सुनंद ॥ छं० ॥ ११ ॥

आठों भेदों के नाम।

श्लोक ॥ म्रदंगी दंडिका ताली। कच्छी अुत घुंघरी[7] ॥
न्रत्य गीत प्रबंधं च। अष्टांगो[8] न्रत्य उच्यते ॥ छं० ॥ १२ ॥

नृत्य देख कर बैठने का हुक्म देना।

दूहा ॥ करिय नृपति अष्टंग सुधि। रंजि राज कल गान ॥
बहुरि हुकंम बैठन्न दिय। फिरि पुच्छिय थच्च न्याम ॥ छं० ॥ १३ ॥

(१) ए.--उधार। (२) मो--कथियं।
(३) मो.--धरती। (४) मो.--सुहय। (५) मो.--प्रमान। (६) मो.--तान।
(७) मो. घधरी। (८) ए.--क.--को.--अष्टांगो।

राजा का नट से उसके निवासस्थान का नाम पूछना।

तब राजन यों उच्चरिय। अहो सु नटवर राय ॥
कोन ग्राम ठौरह सु तुम। कहो सु गुन प्रति भाय ॥ छं० ॥ १४ ॥

नट का कहना कि देवगिर में मैं रहता हूं वहां का राजा सोमवंशी जादव बड़ा प्रतापी है। राजा की बड़ाई।

तब नट नमि करि उच्चरिय। सुनहु राज दिल्लीस ॥
होम वंश जद्दव नृपति। देव गिरी वसि जीस ॥ छं० ॥ १५ ॥

कवित्त ॥ देवगिरी जद्दव नरेश। अति प्रबल तपत तप ॥
संगीतह बर कला। लच्छन शुभ ग्यान सुभत बय ॥
ग्याम[1] ताम[2]गुन लच्छन। भेद सुन ग्यान बिचारं ॥
तास राज संमीप। रहों नट विद्य उचारं।
ता ग्रह सु पाय अनेक गुन। रहैं सु तर्ह निशि दीह पर ॥
राजंत राज जद्दव नृपति। ज्यों सुदेव[3] पति ताक्र गुर ॥ छं० ॥ १६ ॥

मैं उनका नट हूं आपका नाम सुन यहां आया।

गाथा ॥ तिहि ग्रह नट बर रूपं। आए संगेव सीव करषेतं ॥
तुम गुन अति संभरियं[4]। आइन हूअ एम दिल्लि मझेनं ॥ छं० ॥ १७ ॥

राजा का पूछना कि उनकी कन्या का बिवाह किसके साथ निश्चय हुआ है।

कहि संभरि नृप राजं। हो नट राइ सुनहु बर बचनं ॥
किहि व्याहन बर संगं। को राजन बयन धर मझं ॥ छं० ॥ १८ ॥

नट का कहना कि उज्जैन के कमधज्ज राजा के यहां सगाई ठहरी है।

पर धर उजेन मझं। करि पामरि सगप्पनं राजं ॥
शुभ अंत करि आदं। व्याहन मन कीन राइ कमधज्जं* ॥ छं० ॥ १९ ॥

---

(१) मो०—तान। (२) मो०—मान।
(३) ए०—कृ०—को०—इंद। (४) ए०—कृ०—को०—संभरिय।
* व्याहन कीन कमधज्जं।

उसका रूप सुन राजा का आसक्त हो जाना और नट से पूछना कि इसकी सगाई मुझ से कैसे हो ।

अरिल्ल ॥ सुनि राजन्न लगो ध्यानं । लग्गो मीन केतु तन बानं ॥
कहै नट सों राजन बर बैनं । मथ सग न मो करहि सुरेनं ॥ छं० ॥ २८ ॥

नट का कहना कि इसका उत्तर पीछे दूंगा । मुझ से इस में जो हो सकेगा उठा न रक्खूंगा ।

दूहा ॥ पुनि नट बर यों उच्चरिय । गिरि कहियो राजिंद ॥
जो मुझ कोई होइ है । सो करि हौं नृप इंद ॥ छं० ॥ २९ ॥

राजा का नट को इनाम देकर विदा करना, नट का कुरुक्षेत्र की ओर जाना ।

तब राजन नट सौंप दिय । गज सु एक है पंच ॥
चल्यौ दिसि कुरषेत प्रति । परसन हरि चरनंच ॥ छं० ॥ ३० ॥

ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आगमन हुआ, राजा का मन शशिव्रता के ओर लगा रहा ।

अरिल्ल ॥ ग्रीषम रितु बित्तो सुन राजं । पावस आगम भई समाजं ॥
सुनि नट बैन अपुब जद्दव बथ । [illegible] ॥ छं० ॥ ३१ ॥

राजा का शिव जी की पूजा करना, शिव जी का प्रसन्न होकर आधी रात के समय दर्शन देना ।

दूहा ॥ हर सेवा राजन करन । दमिय मास जब अंग ॥
अद्ध निसा शिव आइ कै । दिय सु स्वपन रन रंग ॥ छं० ॥ ३२ ॥

शिव जी का मनोरथ सिद्ध होने का बर देना ।

जो कामन मन संभई । सो पूरे हर ईस ॥
तन चिंता करि राज पुर । आयौ गुन नछ दीस ॥ छं० ॥ ३३ ॥

राजा का स्वप्न में बर पाकर प्रसन्न होना और किसी तरह वर्षा ऋतु काटना ।

कवित्त ॥ हुअ प्रभात जब राज । सुपन मन मंझ राग रस ॥
प्रसन होइ शिव शिवा । काम सोभै सु इंद जस ॥

मन जाने बर अप्प। लग्गि ओनान राज उर ॥
चिष मद्दावनगैंद[1]। बहुरि उतरैन अवर पर ॥
नन धीर करन पावस सुरिति। छिन छिन जुग जुग जात जिय ॥
दर मोर सोर दद्दुर बचन। लग्गि नपन नन असम किय ॥ छं० ॥ ३४ ॥

वर्षा की शोभा का वर्णन-राजा का शशिव्रता के विरह में व्याकुल होना।

कवित्त ॥ मोर सोर चिहुं ओर। घटा आसाढ़ बंधि नभ ॥
बच दादुर झिंगुरन। रटन चातिग[2] रंजत सुभ ॥
नील बरन बसुमतिय। पहिर आभ्रंन अलंकिय ॥
चंद बधू सिर व्यंज[3]। धरे बसुमत्ति सु रज्जिय ॥
बरषंत बूंद घन मेघ सर। तब सुमरै जद्दव कुँअरि ॥
नन हंस धीर धीरज सुनन। दूष फुट्टै मनमथ्थ करि ॥ छं० ॥ ३५ ॥

वर्षा वर्णन-राजा का विरह वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ घन घटा बंधि नभ मेघ छाय। दामिनिय दमकि जामिनिय जाय ॥
बोलंत मोर गिर बर सुहाइ। चातिग्ग रटत चिहुं ओर नाइ ॥ छं० ॥ ३६ ॥
दादुरन सोर दस दिस डराइ। रह पंथ पथिक थकि पाइ साइ ॥
विरहिनी दूरि जिन[4] पंथ नाह। निहि बुंद लगत जनु ईष आह ॥ छं० ॥ ३७ ॥
दंपती करै क्रीला उमंग[5]। मनमथ्थ रहसि बढि अंग अंग ॥
बिरहनी रटत पप्पीह[6] नार। प्रफुल्लित लता लल्लरिय बार ॥ छं० ॥ ३८ ॥
घन हच्छ लता लग्गिपुफ्फ[7] नेत। सब रंग रंग पावसह कंत ॥
उभ्भरिय चल्लिय सल्लिता संपूर। चलि मिल्लिय संग सायरह नूर ॥ छं० ॥ ३९ ॥
रति करन क्रीलनह[8] राज थाह। नन हंस धीर नन सुष्ष ताह ॥
नहि सजे सुष्य लवि बिषम बाइ। नन होत तपनि शीतन सुहाइ ॥ छं० ॥ ४० ॥
नन प्रीत सुहथ गय नारि मांहि। अतिताप जंत तन रोम मांहि ॥
नन नींदसुष्ष[9] नन राज अंग। लग्गेतु बाग मन मथ्थ पंग ॥ छं० ॥ ४१ ॥

---

१ ए० कृ० को०--गयंद, गयँद। २ मो०--चातुक। ३ मो०--व्यद।
४ ए०--तिन। ५ मो०--कृ०--उतंग। ६ शा०--बप्पीह।
७ ए०--पुप्प। ८ ए० कृ०--कील। ९ मो०--सुषं।

भेदेव अंग अँग रोम राइ । जानै न कोइ बर अवर भाइ ॥
यों करत गई पावसी विषम्म । किय सुमन[1] दसा दरुन करंम ॥छं०॥४२॥

वर्षा बीत कर शरद का आगमन ।

दूहा ॥ गत पावस आगम शरद । गई गुडन नभ मान ॥
ज्यों सद गुरु मिलि अंदरद । [2]मिलि प्रगट्ट गुरु ग्यान ॥ छं० ॥ ४३ ॥

शरदागमन-शरद वर्णन ।

सुक्कि पंक उत्तरि सरित । गय बल्ली[3] कुमिलाइ ॥
जलधर बिन यों मेदिनी । ज्यों पति हीन तियाइ ॥ छं० ॥ ४४ ॥

छंद पद्धरी ॥ निम्मलिय[4] कला उग्गयो सोम । कंदर्प प्रगट उद्दित[5] व्योम ॥
सरिता सुनीर आए निवांन । पंगु रन चरै चिय द्रग लजान ॥
मल्लिका फूल सुगंध वाइ[6] । संजोगि कंत रहिं लपटाइ ॥
फल फूल सकल लूटंत अंब । जस प्रभा सुभ्भ सुनि राज थंब ॥
देवास पूजि न्रप रजि बिवेक[7] । सिर छत्र चौंर राजंत[8] नेक ॥
आगम्म शरद रितु चलन साज । आनंद उभ्भर उमगे सु राज ॥
अति प्रीति सूर सामंत काज । पति नाक सभा हेमंत लाग ॥
किय सुमन चलंन गिरि दर्चनेस । आनान राग लग्यो अदेस ॥ छं०॥४५॥

अरिल्ल ॥ पावस रितु कीलंत सु राजन । फिरि आइय दिन सरद समाजन ॥
करन राज कीला आषेटं । संक्रमि देस मद्धि मन भेटं ॥ छं० ॥ ४६ ॥

राजा का अपने सरदारों के साथ शिकार के लिये तय्यारी करना ।

कवित्त ॥ सम सिकार कजिराज । सबर चतुरंग सु सज्जिय ॥
सघन सूर सामंत । अप्प अप्पन भर गज्जिय ॥
रंजि राज प्रथिराज । राज कीलन मन लाइय[4] ॥
बर पट्टन जद्दवन । दूत राज पै पठाइय ॥

---

(१) मो०--दिसा । (२) मो०--मिले पगट । (३) मो०--बेली ।
(४) मो०--निर्म्मली । (५) मो० कृ० को०--उद्दित सु । (६) ए० कृ० को०--बाइ ।
(७) ए०--कृ०--को०--बिमेक । (८) मो०--राजत अनेक ।

आनन राग चहुआन हुअ । कथा जंगि सुनिवृत्त किय ॥
अब कथन कथ विस्तार किय । जो राजन दूतन करिय ॥ छं० ॥ ४७ ॥

राजा का शिकार के लिये सवार होना ।

गाथा ॥ कुछ दिन अन्तर कमियं । राजं[1] कीलंत अप्प धर मझं ॥
एक सुदिन राजानं । कीलन आखेट अस्व चढ़ि चलियं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

दूहा ॥ कीन राज आखेट चढ़ि । अन्तर दिन कुछ आदि ॥
जिन जिन जोग विधि लिखियवर । करि सनद्ध चढ़ि सादि । छं० ॥ ४९ ॥

माघ बदी मङ्गलवार को शिकार के लिये निकलना ।

अरिल्ल ॥ कीलन राजं[2] चढ़े आखेटं । माघ बद्दि दुतिया दिन भेटं ॥
दिन सुभवार सु मंगल लहियं । कानन सिकार अस्व चढ़ि चलियं ॥ छं० ॥ ५० ॥

राजा की धूमधाम का वर्णन ।

कवित्त ॥ चढ़िय राज प्रथिराज । साज आखेट तिन सज्जि ॥
सथ्थ सुभट सामंत । संग सेना सु तुच्छ भज्जि ॥
जाम देव का कन्ह । अत्त तई निडर गुर ॥
मति मंत्री कैमास । राव चामंड जुभम्म[3] भर ॥
परमार सिंघ सूरन समथ । रघुवंसी राजन सुबर ॥
इतनें सहित भर भेंन चलि । उडी रेनु आकास पर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

बन में जानवरों का वर्णन ।

बागुर जाल बयल्ल । हिरन चीते सु स्वान गन ॥
कालबूत, खग, विहंग । विवाह नहीय चलत बन ॥
सर नावक बंदूक । हरित जन बसन विरंज्जिय ॥
गै जिमि गिरि करि आग । अप्प बन संपति सज्जिय ॥
है भारि भईथ कानन सकल । मग अमंग दल संचरिय ॥
पिष्षन सिकार चढ़िय नृपति । प्रथियराज मंचि संभरिय ॥ छं० ॥ ५२ ॥

शिकार का वर्णन ।

(१) मो०--दलणेश । (२) मो०--भारय । (३) मो०--षट्टीन ।

सब सरदारों का भी वहां पहुंचना, एक वधिक का आकर सूकर का पता देकर राजा से पैदल चलने के लिये निवेदन करना ।

और सकल सामंत भर । आइ संपने तथ्य ॥
अरज राज प्रथिराज सम । कही बधिक इह[1] कथ्य ॥ छं० ॥ ५९ ॥
चय सु दिवस राजन क्रमिय । तीस कोस चै अग्ग ॥
जंगल धरतें बेद चय । सिल नालूर सुरंग ॥ छं० ॥ ६० ॥
बधिक कही इह राजप्रति । घात करै सुभ संच ॥
दल सम्मह तजि चल्लिये । तुबक गही तुर तंच ॥ छं० ॥ ६१ ॥

राजा का तुरंत घोड़ा छोड़ तुबक कन्धे पर रख बाराह की खोज में चलना ।

तब राजन्न तुरंग तजि । गहि दिढ़ तुबक सुकंध ॥
कोहर मध्य बराह दर । करिय चोट सुर सध ॥ छं० ॥ ६२ ॥

सूअर को राजा ने मार कर बधिक को इनाम दे कर सुन्दर बारी में विश्राम किया, समय होने पर भोजन की तय्यारी होना ।

कवित्त ॥ हनिग राज बाराह । अप्प बधिक इन्नाम दिय ॥
सुभर सकल सामंत । रंजि राजन्न[2] सुभंतिय ॥
बारी को सहुआन । तास धरा अह सुब्बर ॥
तहं विराम करि राज । अवर सामंत अप्प जुर ॥
जब भई गोठि तथ्यह सुवर । तब परिहार सु सह किय ॥
सामंत सुभर राजंन[3] अर । आहारे विंजन सुनिय[4] ॥ छं० ॥ ६३ ॥

चारों ओर राजा के शिकार की बड़ाई होना ।

दूहा ॥ दिल्ली वैहै वैगहन । खना* अषेटक राज ॥
चावदिसि सुर जंपई । धन चहुआन समाज ॥ छं० ॥ ६४ ॥

---

(१) मो० इक । (२) मो०--राजप्रति । (३) मो०--राजान ।
(१) मो०--धारौं । (२) मो०--राजान । (३) मो०--लय ।
* ए--क्ट०--को०--वैगहन बरन अखेटक राज ।

कवित्त ॥ उभय सत्त मृग मुदित । बंधि फै दैत रत्तति बर ॥
यों बंधे मृग बीय । कहै ओपमा चंद बर ॥
मन बंधि कुलटा विटप । ग्यान बधि मुकतिन आवै ॥
दिन बंधि आवै कुमति । काल नर बुद्धि डुलावै ॥
आनई लज्ज गुन जस पकरि । आंनि संचि आवै अजस ॥
आनई क्रोध धर कलह को । यौं आने मृग बीय गस ॥ छं० ॥ ६५ ॥
नाम स्वान गति सीह । पत्त पर भवन वाय पुर ॥
कल हढ़ अग्गि सु ज्वाल । जीव पुच्छौ न ।त्त सुर ॥
दीय नयन प्रज्जरै । कल्ल लंबे कंध डारै ॥
कहि ओपम कवि चंद । बीज चंचल गति हारै ॥
अति ज्वाल परिग्रह रोसभर । दुति नरंग क्रिति जल ग्रलिय ॥
पामर कपाट पंजर बिहर । राज पास दसदिसि चलिय ॥ छं० ॥ ६६ ॥

राजा का अकेले बधिक के साथ शिकार के पीछे चलना और सरदारों का राजा के पीछे पीछे चलना ।

कवित्त ॥ इक्क समय राजन्न । करन कीना धर अप्पं ॥
विपन मध्य संक्रमन । करन आपेट सु तप्पं[१] ॥
ग्रह करि नुपक सु राज । स्रग कती धर चल्लिय ॥
अवर सूर सामंत । फौज पच्छें धरि हल्लिय ॥
कर हथ्थ डार हक्कन सुपर । चले राज तुक्क बधिक सथ ॥
लग्यौ सुरंग आषेट कौ । कस्यौ राज पर भूमि पथ ॥ छं० ॥ ६७ ॥

शुकी का शुक से पूछना कि दिल्ली के राजा के गन्धर्व विवाह का समाचार कहो शुक ने कहा कि जादव राजा ने नारियल देकर ब्राह्मण को भेजा ।

पुच्छ कथा शुक कहे । समह गंध्रवी सुप्रमहि ॥
स्रवन लंमि संजोगि । रज सनधरी सुनेमहि ॥

(४) उपमा सु । (२) मो –सु ।
(१) आखेटक ।

... ... । इम चिंतिय मन मझ्भि ।
कै करो पति जुगगनि ईसह । ईस पुज्जै सु जग्गीसह ॥
शुक चिंति बाल अति लघु सुनन । ततविन विस उपजै तिहि ॥
देव सभा न अद्दुव न्रपति । नाल केर दुज अनुसरहि ॥ छं० ॥ ६८ ॥

ब्राह्मण का जैचन्द के यहां जाकर उसके भतीजे वीरचन्द से शशिव्रता की सगाई का संदेसा देना। एक गन्धर्व यह सुनता था वह तुरंत देवगिरि की ओर चला।

नाल केर दुज गहिय । द्वार जै चंद गयो वपु ॥
करी षबर हे जमह । अप्प अंदर बुलाइ न्रप ॥
नाल केर दुज आनि । कह्यो राजन अब धारी ॥
देव सु गिरि न्रिप भ्रात । पुंज ससि वृत्त कुमारी ॥
सो दइय बंध नृप वर कहु । लगन मास दिन पंच वर ॥
सुनि श्रवन एह गंध्रव कथ । चल्यौ सु दक्किन देव धर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

गन्धर्व का शशिव्रता के पास आना, वह बन में विचर रही थी।

दूहा ॥ चल्यौ सु दक्खिन देव गिरि । जहां शशिवृत्त कुमारि ॥
विपन मद्धि क्रीड़ा करन । रमइ बाल चितचारि ॥ छं० ॥ ७० ॥

सोने के हंस का रूप धरकर गन्धर्व का दिखलाई देना, शशिव्रता का उसको पकड़ना और पूछना कि तुम कौन हो। हंस का कहना कि मैं गन्धर्व हूं देवराज के काम को आया हूँ।

कवित्त ॥ हेम हंस तन धरिय । विपन मद्ध विश्राम लिय ।
दिष्षि तास शशिव्रत्त । अनिहि अचरिज्ज मानि जिय ॥
बल कर गहिय सु तत्व । हत्थ लै करि तिहि पुच्छिय ॥
कवन देव तुम थान । कवन माया तन अच्छिय ॥
उच्चर्यौ हंस ससिवृत्त सम । मति प्रधान गन्धर्व हम ॥
सुरराज काज आए करन । तीन लोक हम बाल गम ॥ छं० ॥ ७१ ॥

शशिव्रता का पूछना कि हम पहिले कौन थीं और हमारा पति कौन होगा हंस का कहना कि तू चित्ररेषा नाम की अप्सरा थी, अपने रूप और गान के गर्व में इन्द्र से लड़ गई इससे दक्षिण के राजा की बेटी हुई।

कवित्त॥ कहै बाल सुनि हंस। कवन हम पुब्ब जम्म कह॥
कवन पत्ति हम लहैंहिं। लेष बिचार लहो इह॥
तबै हंस उच्चस्यौ। सुनहि शशिहत्ता नारी॥
चित्ररेष अपच्छरि। सगीन अति रूप धरारी॥
तिहि गरब इन्द्र सम कलह करि। क्रोध देवबंडी सुरम॥
दच्छिन नरेस न्त्रप तात बँधु। पुंज ग्रहे अवतार सुम॥ छं०॥ ७२॥

हंस ने कहा कि पङ्ग अर्थात् कान्यकुब्ज नरेश के भतीजा वीरचन्द्र के साथ तुम्हारे मा बाप ने सगाई की है पर वह तुम्हारे योग्य बर नहीं है।

चौपाई॥ कहै हंस सुनि बाल बिचारी। पंग बधुर बीर सु पुत्तारी॥
तिहि तु दई मातु पितु बंधं। सो तुम जोग नहीं बर कंधं॥ छं०॥ ७३॥

उसकी आयु एक ही वर्ष है, इस लिये दया करके राजा इन्द्र ने मुझको तुम्हारे पास भेजा है।

तेम रहै बर बरष इक्क महि। हय गय अनन भुभिक्ख है समतहि॥
तिहि चार करि तुमहि पै आयौ। करि करुना यह इन्द्र पठायौ॥ छं०॥ ७४॥

शशिव्रता ने कहा कि तुमने मा बाप के समान स्नेह किया सो तुम जिससे कहो उसी से मैं ब्याह करूं॥

तब उच्चरिय बाल सम तेहं। तुम माता सम पिता सनेहं॥
मुझ्झ सहाय अवरि को करिहौ। पानि ग्रहन तुम चित अनुचरिहौ॥
छं०॥ ७५॥

हंस का कहना कि दिल्लीपति चौहान तुम्हारे योग्य बर है।

चौपाई ॥ तब हेन्यो हुजराज विचारं । सुनि ससिव्रत्त कथ्य इक सारं ॥
दिल्ली वै चहुआन महा भर । सो तुम जोग चिन्तयौ छम बर ॥
छं० ॥ ७६ ॥

उसके सौ सरदार हैं, उसने गजनीपति को पकड़कर
दण्ड लेकर छोड़ दिया ।

सत सामंत सूर बलकारी । तिन सम जुद्ध सु देव विचारी ॥
जिन गहियौ सर बर गज्जन वै । दब गय मंडि छंडि फुनि थिय वै ।
छं० ॥ ७७ ॥

महा बली चालुक्य भीमदेव को जीता है । यह सुन शशि-
व्रता का प्रसन्न होकर कहना कि तुम जाओ और उन्हें
लाओ जो वह न आवेंगे तो मैं शरीर छोड़ दूंगी ।

गुज्जर वै चालुक भीमनर । ते दिन राति डरै जंगल धर ॥
बरन जोग तुम तेह विचारं । सुनि की सुंदरि हरष अपारं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
तहां तुम किता छल करि जाउ । दिल्ली वै अनुराग उपाउ ॥
मांस पटह हों इत्तह मंडों । प्युना आवै तो तन छंडों ॥ छं० ॥ ७९ ॥

हंस वहां से उड़कर दिल्ली आया ।

तब उड़ि चल्यौ देह दिस उत्तरि । ढिग ससिव्रत रष्षि निज सुंदरि ॥
जुग्गिनि पुर आयो हुजराजं । सोवन देह नगं नग साजं ॥ छं० ॥ ८० ॥

बन में शिकार के समय हंस का आना उसे देखकर आश्चर्य
में आकर पृथ्वीराज का पकड़ लेना ।

कवित्त ॥ बय किसोर प्रथिराज । रम्य हा रम्य प्रकारं ॥
सेत पष्य बिय चंद । कला उहित तन मारं ॥
विपन मध्य चहुआन । हंस दिष्यौ ऋप अष्षिय ॥
चरन भाग दुति होन । हेम पक्की वियलष्षिय ॥
आचिज्ज देषि प्रथिराज बर । धाइ न्नपति बर कर गहिय ॥
आपुब्ब दुज्ज गति हून कथ । रहवि राज सों सब कहिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दूहा ॥ विपन मध्य आचिज्ज इह । दिष्षि राज प्रथिराज ॥
भूत दूत कमज्जौन तन । हंस सरुप विराज ॥ छं० ॥ ८२ ॥

संध्या को हंस रूपी दूत का सबको हटाकर राजा को पत्र देना ।

संझ सपत्तौ न्रपनि पै । दून सु जहव राइ ॥
बर कग्गद न्रप हथ्थ दै । कहि श्रोतान बधाइ ॥ छं० । ८३ ॥

दूत का कहना कि एकान्त में कहने की बात है । इतना कहकर चुप हो जाना ।

कह्यो दून मन अप्पनै । जो व्रंनो विधि जोइ ॥
दोषु[1] जानि नन व्रंन वहि । न्रप श्रोतान न होइ ॥ छं० ॥ ८४ ॥

चौपाई ॥ अति सु मनह चिंते परि मांन । मानहु थके सिंध जल थांन ॥
दाहन अप्प एक सोइ जाइ । चिंतौ कथा सु अंनह पाइ ॥ छं० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ इह कहि बत्त ठठुक्कि रहि । उत्तर एक न आइ ॥
मानो उरग छछूंदरी । कंठ लगावहि धाई ॥ छं० ॥ ८६ ॥

गाथा ॥ मुष जंपी मन बत्तं । दूतं जे नवाइ सिर पुछं ॥
बर चहुआन कमानं । किम जहां नमों नम नाउं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

हंस का कहना कि शशिव्रता का गुण कहने को शारदा भी समर्थ नहीं है ।

दूहा ॥ इह अष्षी चहुआन सों । नतो मार कहि आइ ॥
सुनिवेकों ससिहत्त गुन । सारदज लजचाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥

चन्द्र और सूर्य के बीच में शशिव्रता ऐसी सुशोभित है मानों शृङ्गार का सुमेर हो ।

राका अरु सूरज्ज विच । उदै अस्त दुहु बेर ॥
बर ससिहत्ता सोभई । मनों स्रृङ्गार सुमेर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

शशिव्रता के रूप का वर्णन ।

इन वै मन रूपह तरुनि । बन गुन आवै मान ॥
सो बर बर कविचंद कहि । सुनहु तो कहूं प्रमान ॥ छं० ॥ ९० ॥

(१) मो०—देषु ।

छंद मोटक ॥ बय संधिह बाल प्रमान ब्रनं। कहि मोटक छंद प्रमान सुनं ॥
बय स्यांम5ह ग्रीषम अंकुरयं। अह अंत निसागम संकरयं ॥ छं० ॥ ९१ ॥
जल सैसव सुद्ध समान भयं। रवि बाल बचिक्रम लै अथयं[1] ॥
बरसै सब जोवन संधि अनी। सु मिलैं जनु पित्तह बाल जनी ॥ छं० ९२ ॥
कुर ज्यों लगि सै सब जुब्बनता*। सुमनों ससि रंतन राज[2] छिता ॥
जु चलै मुरि मारुत झंकुरिता। सु मनों सुरवेस मुरी मुरिता ॥ छं० ॥ ९३ ॥
कलकंठ सु कंठय पंच अली। गुन जंपि कवित्त सु चंद बली ॥ छं० ९४ ॥

कवित्त ॥ ससिर अंत आवन बसंत। बालह सैसव गम ॥
अलिन पंच कोकिल सुकंठ। सजि गुंड मिलत भ्रम ॥
सुर मारुत मुरि चले। मुरे मुरि बैस प्रमानं ॥
तुच्छ कौं परसिस फुट्टि। आन किस्सोर रँगानं ॥
लीनी न भ्रमि नक स्यांम तन। मधुप मधुर धुनि धुनि करिय ॥
जानी न बयन आवन बसत। अग्याता जोवन अरिय ॥ छं० ॥ ९५ ॥

कवित्त ॥ पत्त पुरातन झरिग। पत्त अंकुरिय उट्ठ तुच्छ ॥
ज्यों सैसव उत्तरिय। चढ़िय सैसव किसोर कुच्छ ॥
सीतल[3] मंद सुगंध। आइ रिति राज अचानं ॥
रोम राइ अंकुच नितंब। तुच्छं सरसानं ॥
बट्ठे न सीत कटि छीन हवै। लज्ज मांन टंकनि फिरै ॥
ढंकै न पत्त ढंकै कचै। बन बसंत मंत जु करै ॥ छं० ॥ ९६ ॥

पृथ्वीराज का शशिव्रता का रूप सुनकर उसके मिलने की चिन्ता में रात दिन लगे रहना। सबेरे उठते ही राजा के दूत से पूछना।

दूहा ॥ श्रवनन भव श्रोतान व्रप। मन बंछै पहुआन ॥
मनु ससिव्रत्त कुंआरि कौ। पत्थो उर द्वार बान ॥ छं० ॥ ९७ ॥

---

(१) मो०—पत्थमियं। * मो०—सु लगी जनु सैसव योबनता।
(२) मो०—राज। (३) मो०—सीत।

कवित्त ॥ निसि नरिंद चहुआन। चित्त मनोरत्थ विचारै ॥
भई दीह सब निसा। निसा सयनंतर धारै ॥
सयनंतर ससिवृत्त। चाटु चटु बैन उचारै[1] ॥
चाह चाह बर बयन। मान माननि संभारै ॥
दैवान मनोरथ चित्त बर। भव भव कम्मन कच्छ करै ॥
भौ प्रात दूत पुच्छै न्रपति। जहोवै चित्तै धरै ॥ छं० ॥ ९८ ॥

हंस का राजा देवगिरि का जैचन्द के यहां सगाई भेजने और शशिव्रता के पण ठानने का वृतान्त कहना।

दूहा ॥ बर बंध्यौ ससि वृत्त कौ। अरु न्रप भान कुंआर ॥
बंधी दिन कमधज्ज कै। नाम बीरबर भार ॥ छं० ॥ ९९ ॥
ससिवृता वृत आइ चै। बहु देख्यौ बर कीन ॥
न्रप वै भान स्वयंबरच। एक व्रत्त बल लीन ॥ छं० ॥ १०० ॥
जैत षंभ मंड्यौ नृपति। बान चनन वृत लीन ॥
ता काजै दिसि दिसि नृपति। धर धर कग्गर दीन ॥ छं० ॥ १०१ ॥
दूच अमंत[2] न्रप बर जितै। कियौ न मन्नै नाम ॥
दारुन वृत लीजै नचौं। दूच कहि पूरि सु ठाम ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दूच सुनंत प्रस्थान दै। बर पंचमि रवि बार[3] ॥
पच्छ चलाइ मवन्न सुनि। कांनन बीरन[3] बार ॥ छं० ॥ १०३ ॥
दोऊ बाल पावक्क बनि। सुनि परि उट्ठच गात ॥
मानों चौय चतुर्द्दशी। कै शशि उट्ठिय प्रात ॥ छं० ॥ १०४ ॥
सुनि कै आसन उट्ठि बर। ढुंढत फिरत सु जोइ ॥
कंत कंत के करत ची। कान भनक कछु होई ॥ छं० ॥ १०५ ॥
बीर चंद जैचंद बंधु। देवह पुंज कुंआरि ॥
न्रप पठये चहुआन पै। दै शशिवृत्ता नारि ॥ छं० ॥ १०६ ॥

शशिव्रता की विरह जल्पना का वर्णन।

---

(१) ह०--क०--को०--उचारे। (२) मो०--अमूत।
(३) क०--बार।

आगम वीर बसंत कौ। शिशिर संपने अंत॥
ग्रीषम पतन सु ग्रीत कौ। दैन बांह हो कंत॥ छं०॥ १०७॥

कवित्त॥ शिशिर सु विधुरन बन। वियोग बिकुरत बन कंते॥
दुबन आस रहि मास। कंत आयो न बसंते॥
उपवन पत्त भंभरिय। बिरह पंजर संझंभरि॥
आस अनदिन हुलसि। बिपन हुलसै सु समंभरि॥
अनमेष अपत इच्छा रुघन। आनंद उर भूषन तजै॥
दोऊन होइ कवि चंद कहि। असु रष्पिह धज सम सजै॥ छं०॥ १०८॥

शशिव्रता का चित्ररेषा के अवतार होने तथा पृथ्वीराज के पाने के लिये रात दिन शिव जी की पूजा करने का वर्णन।

कवित्त॥ चित्र रेष बाला विचित्र। चंद्री चन्द्रानन॥
स्वर्ग मग्ग उत्तरी। चित्त पुत्तरि परमानन[1]॥
काम बान सुंजुरी। बाल अंजुरी सु लच्छिय॥
मार कलह उत्तरी। पुब्ब अच्छरी सु लच्छिय॥
लछिन बत्तीस लच्छी सहज। रति पति चित्त समंधरै॥
संग्रहै हत चहुआन कौ। गवरि पुज्ज दिन प्रति करै॥ छं०॥ १०९॥

दूहा॥ बरनी जोग बरन्न को। बर भुम्मै करतार॥
तिहि कारन ढुंढ़त फिरै। सत्त समुद्रह पार॥ छं०॥ ११०॥

वह आप अब मिल गए देर न कीजिए चलिए।

जा कारन ढुंढ़त फिरत। सो पायौ दीनीस॥
अब जहव ससिहत चढ़िय। दीनी ईस जगीस॥ छं०॥ १११॥

मैं महादेव जी की आज्ञा से तुम्हारे पास आया हूं।

शिवा बानि शिव बचन करि। हो येठयो प्रति तुम्झ॥
कारन कुंअरि हत्त कौ। मन कामन भय मुम्झ॥ छं०॥ ११२॥

शशिव्रता के रूप गुण का वर्णन।

(१) मो०—समानन।

सुभ लच्छ जइव प्रिया। कहियै का सु विवेक ॥
हंस कहै राजन सुनिय। उत्तिम लच्छिन केक ॥ छं० ॥ ११३ ॥

काव्य ॥ पीनो छपीन उरजा, सम शशि बदना, पद्म पत्रायताक्षी ॥
रक्तंबोष्टी तुंग नासा, गज गति गमना, दक्षना हस्त नाभी ॥
संस्निग्धा चारु केशी, मृदु प्रथु जघा, वाम मध्या सु वेसी ॥
हेमांगी कंति हेला, वर रुचि दसना, काम बाना कटाक्षी ॥ छं० ॥११४॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम सब शास्त्र जानते हो सो चार प्रकार की स्त्रियों के गुणादि का वर्णन करो।

अरिल्ल ॥ सुनि प्रथिराज हंस फिरि पुच्छिय। तुम सब जान सु लच्छिन लच्छिय ॥
चारि जुगत्ति त्रिया परकारं। कहु दुजराज सु लच्छिन सारं ॥ छं० ॥११५॥

हंस को देर होने के भय से कोई बात अच्छी नहीं लगती।

दूहा ॥ कही हंस जहां सु कथ। लगि श्रोतान सुराज ॥
छिनन हंस धीरज धरै। लगै बान सम साज ॥ छं० ॥ ११६ ॥

हंस कहता है कि स्त्रियों की बहुत जाति हैं पर शशिव्रता पद्मिनी है।

कहै हंस बर राज सुनि। अति अनेक है जाति ॥
पदमनि है जद्दव कुंअरि। आंन तरुनि अनि भांति ॥ छं० ॥ ११७ ॥

राजा का उत्तम स्त्रियों का लक्षण पूछना।

राज कहै दुजराज सुनि। करि बरनन कथि सोइ ॥
को लच्छिन उत्तिम त्रिया। कहियै सो सब जोइ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

हंस का पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रणी, और संखिनी इन चारों का नाम गिनाना।

चारि जाति है त्रीय तन। पदमिनि हस्तिनि चित्र ॥
फुनि संषिनिय प्रमान इय। मन नह रंजिय मित्त ॥ छं० ॥ ११९ ॥

राजा का चारों के लक्षण पूछना।

छंद पद्धरी ॥ सुनि हंस बैनं उर लगी बत्त। विधिना लिषंत क्यों मिटै पत्त।
श्रोतान राग उर लगे राज। तन लगे बान समरत्थ सु साज ॥ छं० ॥ १२० ॥

वुझ्झस राज फिरि हंस बत्त । सुनि श्रवन बेंन मन भयौ रत्त ॥
पुच्छनह राज सब चिय विवेक । उच्चरयौ* हंस सो बत्त एक ॥ छं० ॥ १२१ ॥
तुम देव अंस जानौ सु भेउ । हम कहत परम दुज लहै केउ ॥
लच्छिन प्रकार चव चिय विवेक । करि बरन सुनावहु भांति नेक ॥ छं० ॥१२२॥

हंस का लक्षण वर्णन करना ।

गाथा ॥ कहै विवेक सुहंसं । चीय प्रकार चार लहि इंदं ॥
सुनि राजन सुभ बांनी । आनंदे श्रवन मझ्झनं ॥ छं० ॥ १२३ ॥
दूहा ॥ तब दुजराज सु उच्चरिय, रे संभरि पुर इंद ॥
पदमिनि हस्तिनी चित्रिनी, संषिनि संषन नंद ॥ छं० ॥ १२४ ॥

स्त्रियों के उत्तम गुणों का वर्णन ।

अरिल्ल ॥ रक्त जीभ मृग अंक सु लच्छिन बान इहि ॥
बचन सु अमृत धार रती रति जांनि जिहि ॥
इला[1] सील कुल वाल क्रती क्रामोदरी ॥
इन गुन नृप भय चारु सु चार जु सुंदरी ॥ छं० ॥ १२५ ॥

पद्मिनी का वर्णन ।

कवित्त ॥ कुटिल केस पदमिनी । चक्क चस्लन तन सोभा ॥
स्निग्ध दंत सोभा विसाल । गंध पद्म आलोभा ॥
सुर सम्रह हंसी प्रमांन । निंद्रा तुछ जंपै ॥
अलप वाद मित काम । रत्त अभया भै कंपै ॥
धीरज्ज छिमा लच्छिन सहज । असन बसन चतुरंग गति ॥
आनंक छोड़ लग्गै सहज । काम बांन भूलं[illegible] ॥ [illegible] १२६ ॥

[illegible]स्तिनी का वर्णन ।

उर्द्ध केस [illegible] । वक्र अस्तन दसनं दुति ॥
मधुर गंध [illegible]रनाट । भुक्ति भ्रम कांम बाम रति ॥
गूढ़ सवद मन जा । विधान रंगन क्रामोदरि ॥
चित्र नयन चंचल्ल । विसाल बरनी जंमोदरि ॥

मो०—करि हंस राज यों बत्त यक्क । (१) कृ० ह०—इली ।

छिन हृदय हसय बिहसय लहय। बसि चित्तह चित पुत्तलिय[1] ॥
नीत्रीय मान जानैं बहुन। कंत चित्त जाइ न कलिय ॥ छं० ॥ १२७ ॥

चित्रनी का वर्णन।

दीर्घ केस चित्रिनी। चित्त हरनी चंद्रानन ॥
गंध सग चिच निद्र। कोक शब्दन उच्चारन ॥
सील नील लज्जा प्रमांन। रत्ति ... रै ॥
आलस ... रस बलित। ... उचारै ॥
... रज्ज ... छबि लोक कारि। अवलोकन गुन औसरै ॥
विस्तीर्ण अंच मोहन पढै। चित्त वित्त कंतहु हरै ॥ छं० ॥ १२८ ॥

संषिनी का वर्णन।

अलप केस कुच स्थूल। थूल दंती उच्चारन ॥
थूल उद्र लंकीस। थूल क्रिस लंगध बारन ॥
घोर निद्र[2] तन तास। अलप रसना रस छंडै ॥
अलप सील गंभीर। प्रबद् कलहंतर मंडै ॥
आचार भ्रंन नहि सुद्ध मन। विधि बिचार बिभचार घन ॥
आसंष संष संषिनि गुननि। सुष्य नाह पावै न तन ॥ छं० ॥ १२९ ॥

शशिव्रता के रूप तथा नखशिख शोभा का वर्णन।

दूहा ॥ सुनौ श्रवन चहुआंन बर। देवगिरि न्रप भान ॥
रूप अनूप अनूप गति। कहि ओपम सुनि कान ॥ छं० ॥ १३० ॥

छंदनाराच ॥ चढंत बेस सामयं। अरंभ प्रेह कामयं ॥
उठंति पचि चल्लिता। बियह चंद्र चल्लिता ॥ छं० ॥ १३१ ॥
नषं सुरंग रंजनं। तरक्क दर्प्प कंजनं ॥
चलंत पेंड रुच्चयौ। अरुन्न नील कच्चयौ ॥ छं० ॥ १३२ ॥
रही सु कंति थावकं[3]। चलंत हंस सावकं ॥
दो हंस अंग अंगुरी। उपंम काक बिज्जुरी ॥ छं० ॥ १३३ ॥

---

(१) मो०—पुत्तरिय। (२) मो०—नीद।
(३) ए० कृ० को—तायकं।

मराल छोड़ मुक्कियं । चरंन चंपि लुक्कियं ॥
सुरेष पिंड सुभ्भियं । अनंग अंग लुभ्भियं ॥ छं० ॥ १३४ ॥
दीपंत जंघ पिंडुरी । भराइ काम सुंदरी ॥
दुती उपंम जंघ की । किधों उर्ल्टि रंभ की ॥ छं० ॥ १३५ ॥
त्रितिय उपंम जंघरी । धराद् काम की करी ॥
कनक्क थंभ रंभ सी । अनंग रंग रंग सी ॥ छं० १३६ ॥
नितंब तुंग मंडली । सयन्न काम की चली ॥
उतंग भाग अग्रता । मनों तुलाकि दंडिता ॥ छं० ॥ १३७ ॥
छछीन छीन लंकयं । कमांन काम अंकयं ॥
सरोम राइ राजई । उपंम कव्वि साजई ॥ छं० ॥ १३८ ॥
सुमेर शृंग कंदकै । चढ़ै पपील चंद कै ॥
उपंम कव्वि ठहई । धनक्क मुठ्ठि चड्ढई ॥ छं० ॥ १३९ ॥
थनं विपान थोरयौ । अनंग बान ओरयौ[१] ॥
सुरंग रोम बाल सी । जु केवलं प्रवाल सी ॥ छं० ॥ १४० ॥
उपंम चंद ग्रीव की । मनो अनंग सीव की ॥
दुती उपंम तं लचै । कपोत कंठ कंक चै ॥ छं० ॥ १४१ ॥
चिबुक्क चारु बिंद कौ । चच्यौ कलंक चंद कौ ॥
दसन्न जोति कामिनी । मनों दमक्कि दामिनी ॥ छं० ॥ १४२ ॥
हसंत छव्वि में कही । सु लच्छि रंक ढंकही ॥
सुरंग ओठ अद्ध सी । सु अद्ध रेष चंद्र सी ॥ छं० ॥ १४३ ॥
दसन्न चारु मानयं । प्रभात कै प्रमानयं ॥
दिपंत जोति नासिका । सु गत्ति कीर चासिका ॥ छं० ॥ १४४ ॥
षुभी जराइ राजई । उपंम कव्वि साजई ॥
मनों तरक्क बिक्कुरे । मिलंत चंद उक्कुरे ॥ छं० ॥ १४५ ॥
तटंक कन्न राजई । उपंम ता समाजई ॥
सुकांम बाम चाढ़िकै । धरे षरास बाढ़िकै ॥ छं० ॥ १४६ ॥

(१) ए० कृ० को०—आरयौ ।

सुमत्ति नास जीपकै । चुनंत कीर सीपकै ॥
सुभाइ बंक नैन की । हरंत चित्त मैंन की ॥ छं० ॥ १४७ ॥
चलंत नैंन भ्रूव ले । धरंत चंद ज्रुव ले ॥
लिलाट आड़ सोभई । अनंग थान लोभई ॥ छं० ॥ १४८ ॥
सुरंग केस पासयं । सु मुत्ति मंडि भासयं ॥
किरंन सूर साजकी । अहार दूध भार्स की ॥ छं ॥ १४९ ॥
चिपंड मंडयौ गुही । उपंम काक विज्जुही ॥
सोवन्न षंभ दुत्तरी । उरग्ग बीय उत्तरी ॥ छं० ॥ १५० ॥
श्रृंगार भार भारियं । विलोकि काम पारियं ॥
श्रवन्न मंडनं धरी । अनंग चित्त ज्यों हरो ॥ छं० ॥ छं० ॥ १५१ ॥
विसाल बाल विभ्भरी । कविंद बुद्धि विस्तरी ॥ छं० ॥ १५२ ॥

राजा का पूछना कि अप्सरा का अवतार क्यों हुआ ।

दूहा ॥ जंपि राज दुज राज सम । तुम मति रूप अलोइ ॥
कवन काज अवतार इत । सत्य कहौ तुम सोइ ॥ छं० ॥ १५३ ॥

हंस का विवरण कहना ।

हंस कहै राजन्नसुनि । [1]कहौं उतपत्ति चियेन ॥
सुनहु राज मन प्रसन होइ । विवरि कहौं सब बेंन ॥ छं० १५४ ॥

इन्द्र और चित्ररेषा के झगड़ा तथा शाप का वर्णन ।

कवित्त ॥ एक समै सुर ईस । अप्प पुर इन्द थान गय ॥
आगम देव सुनेव । नाग पति अति उछाह भय ॥
अरघ पाद करि धूप । करै मंगल अपुव्व सुर ॥
सुभ आसन रजि रुद्र । करैं घर सार बारि नर ॥
अस्तुत्ति करन लग्गौ सुरिंद । तब प्रसन्न भय ईस प्रति ॥
उच्चरिय कूट जट इंद सों । सुभ दिघ्यौ अच्छर नृपति ॥ छं ॥ १५५ ॥

पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप इन्द्र का देना ।

रंभ घृताची मैन । मंजुघोषा सुरंग चिय ॥
उरबसि केसी नारि । तुरत तिल्लोत्तमानि पिय ॥

(१) मो०—कह उतपति तिय तैन ।

किय श्रृंगार सुंदरिय । आइ उभ्भी सुर बामं ॥
देषि त्रिया मन प्रमुदि । हुआ मन उद्दित कामं ॥
अब सरस नृत्य कारनह कजि । जंच मृदंग [1]उपन्न सजि
अस्तुति अनेक पढि घोष त्रिय । पहुपंजुलि सुर इंद्र कजि ॥छं०॥१५६॥

अनेक स्तुति करने पर शिव जी का प्रसन्न होना ।

तब सु कोप धरि ईस । दियौ सुर श्राप पतन धरि ॥
और रंभ किय नृत्य । सुबर अनेक विदि पर ॥
बहु बिबेक कल मान । ताल मंडै त्रिग्गन सुर ॥
रंजि राज सुर ईस । दीन बर बानि रंभगुर ॥
अति प्रमुदि चित्त कैलास पति । उभय देव आनंद हुअ ॥
सुभ सभा बिराजै राज सुर । सुबर प्रमोदिय मन सँभुअ ॥ छं० ॥ १५७ ॥

शिवजी का प्रसन्न होकर बर देना कि तेरा जन्म राजकुल में होगा और ब्याह भी छत्रधारी से होगा । पर तेरा हरन होगा और तेरे कारण घोर जुद्ध होगा ।

दूहा ॥ करि प्रसंन सुर राज त्रिय । मुष अस्तुति सुर कीन ॥
बर बानी पुर इंदकै । [2]यह सुवाक्य सिव दीन ॥ छं० ॥ १५८ ॥
परै तुम्भ उत्तिम घरनि । पुन्नी भूमि नरिंद ॥
हुअ पथ्थी सिर छत्रचै । करि सेवा बर इंद ॥ छं ॥ १५९ ॥
बचन ईस तें बर लहै । हरन होइ तुअ नारि ॥
कलह केलि भावन भवन । ह्वै है जुद्ध अपार ॥ छं० ॥ १६० ॥

शिव की उसी बानी के अनुसार वह अपने समान पति चाहती है ।

कही बांनि कैलास पति । मैनकेस सुनि नारि ॥
परस दोष भरतार सम । करत सु क्रीड अपार ॥ छं० ॥ १६१ ॥

(१) मो०--उपम्म । (२) किय वधाय दिवतीन ।

दिन पूरा होने पर उत्तम पति पाकर फिर अप्सरा योनि पावेगी ।

गाथा ॥ तुझ दिन अंतर क्रमियं । आगम भरतार पामि उड्ड लोकं ॥
फिरि अच्छरि अवतारं पामै तुभ्भ ईस बर बांनी ॥ छं० ॥ १६२ ॥

शाप के पीछे शिव जी कैलस गए अप्सरा मृत्युलोक में गिरी, वही जादव राज की कन्या शशिव्रता है और तुम्हें उसने पति बरन किया है ।

कवित्त ॥ दै सराय सुर नारि । अप्प करि ईस थान चलि ॥
घन अस्तुति कर इंद्र । प्रमुदि अति रुद्र बानि फलि ॥
चलै थान कैलास । परी अच्छरी [1]मृतं पुर ॥
जद्दव ग्रह चिय जाइ । उअर उप्पजी कुंअरि बर ॥
देवास थान तपि भान न्रप । तिहि पुची ससिव्रत कुंअरि ॥
सोई बाच रुद्र देवह सुचिय । तुअ कारन कायह उअरि ॥ छं० ॥ १६३ ॥

हंस कहता है कि इस अप्सरा का अवतार तुम्हारे ही लिये हुआ है ।

दूहा ॥ और सुबर संकेत [2]सुनि । हंस कहै नर राज ॥
मैंन केस अवतार इह । तुअ कारन [3]कहि साज ॥ छं० ॥ १६४ ॥

हंस कहता है कि राजा जादव ने शशिव्रता को कान्यकुब्जेश्वर को व्याहना बिचारा है पर शशिव्रता ने तुम्हें मन अर्पण कर शिव की आराधना की । शिव की आज्ञा से मैं हंस रूप धर तुम्हारे पास आया हूं । शीघ्र चलो । राजा का प्रस्तुत होना । दस सहस्र सेना सजना ।

(१) मो०—धारा । (२) मो०—कर । (३) मो०—करि ।

छंदगाघा॥ हंस कहै न्रप राज बिचारं। जो पुछै कारन कत्यारं॥
देव गिरि जद्दो न्रप भानं। ता पुत्री ससिहत्त सुजानं॥ छं०॥ १६५॥
सो मंगी कम धज्ज सुराजं। तिहि गुन सुनि चहुवानं सुताजं॥
छंडे नमि पित मात सुआनं। बरन हत्त कीनै चहुवानं॥ छं०॥ १६६॥
हर सेवा सुमंडय कलेसं। तप आचरन क्रम्म संदेसं॥
वैां गुन तास हंस भय रूपं। पुछि चिय कारन सुनिय सु भूपं॥छं०॥१६७॥
ढील्ली वै अच्छे हढ़ नेमं। हों पठयौ सु तुम्ह प्रति प्रेमं॥
प्रसन ईस अंबिका समेतं। बुल्यौ राज सैल संकेतं॥ छं०॥ १६८॥
चढ़न कहिय राजन सो हेसे। उड्डि चल्यो दक्षिण तुम देसं॥
सुनत श्रवन चल्यौ न्रप राजं। कहि कहि दूत दुजन सिरताजं॥छं०॥१६९॥
भय अनुराग राज ढिल्ली वै। दस सहस्र सज्जी न्रप छेवै॥ छं० ॥१७०॥

राजा का कहना कि जादव राजा के गुणों का वर्णन करो।

गाथा। जंपै दुज सम राजं। तव गुन व्रंन कीन अपारं॥
श्रम गुन किम संभरियं। लग्गे श्रोतान राग किम जद्दों॥ छं०॥ १७१॥

हंस का राजा भानु जादव के गुण प्रताप का वर्णन करना।

दूहा॥ हंस कहै राजन्न सुनि। इच्छ उतपति अनुराग॥
श्रवन सुनौ संभरि सु पहु। कहौं वृत्त संजाग॥ छं०॥ १७२॥

कवित्त॥ देवगिरि नृपभान। सोम वंसी सुतपै नृप॥
तिन अनंत बल तेज। बहुल है गै पैदल तप॥
नयर मध्य कोटीस। बसै बानिक्क अनंत लछि॥
धर्म तप्पनह पार। न कोऊ दास रहै इकु॥
सा एक लष्ष पयदल पुलत। बग्ग जोर [1]घूनं बहै॥
जद्दव नरिंद सब गुन कुसल। धन प्रताप दिन दिन लहै॥ छं०॥ १७३॥

उनके बेटे और बेटी के रूप गुण का वर्णन।

तास पुत्र नारेन। पुत्रि ससिवृत्ता प्रमानं॥
दुष्म अनंत सूरत्ति। रूप मकरंद सु जानं॥

(१) मो०--खूनी।

भगिनि भ्रात दुष प्रीत। पिता माता प्रिय मानं॥
अति उछाह रंग रमै। असन हुक ठाम प्रधानं॥
सबरिष्य भई सबहरु दुष। अति अभूत लच्छिन प्रबल॥
लालित सरूप पिय चंद सम। राजकुंअरि राजै अतुल॥ छं० ॥१७४॥

एक आनन्दचन्द खत्री था उसकी बहिन चन्द्रिका कोट में ब्याही थी, वह विधवा हो गई और भाई उसको अपने यहां ले आया।

तिन राजन कै मंच। नाम आनंद चंद भर॥
तिन भगिनी चंद्रिका। ब्याह ब्याही सु दूरि धरि॥
नैर कोट हिस्सार। तास पिचौय प्रमथ बर॥
अति सु प्रीति नर नारि। सुष्य अनुभवै दोह पर॥
कोइक्क दिवस भर तार वहि। तुच्छ दीह परलोक गत॥
आनई बहनि फिर अप्प ग्रह। अति सु दुष्य निसि दिन करत॥ छं० ॥१७५॥

वह गान आदि विद्या में बड़ी प्रवीणा थी।

दूहा॥ अति प्रवीन विद्या लहन। गान तान सुभ साज॥
केइक दिन अंतर वहिग। गइ अंते बर राज॥ छं० ॥ १७६॥

उसके पास शशिव्रता विद्या पढ़ती थी।

तिन संगह ससिव्रत्त सुअ। पठन विद्य सुभ काज॥
देवि कुंवरि अदभुत अवय। रंजित है अति लाज॥ छं० ॥ १७७॥

उसी के मुख से आपकी प्रशंसा सुन कर वह आप पर मोहित हो गई है।

कवित्त॥ जब पिचिन चंद्रिका। कहै गुन नित चहुवानं॥
जेस पराक्रम राज। तेइ बरने दिन मानं॥
राजकुंअरि जब सुनी। तबै उभभरै रोम तन॥
फिरि पुच्छै ससिव्रत्त। सदि एकंत मत्त गुन॥

जे जे सु पराक्रम राज किय। सोइ कहै षिचिन समय॥
श्रोतान राग लग्यौ उभर। तो हत्त लिनौ सुनौ सुकथ॥ छं०॥ १७८॥

यों ही दो वर्ष बीत गए, बाल्यावस्था बीतने पर काम की चटपटी लगी।

दूहा॥ यों वरष्ष दुअ विति गय। भइय वैस बर उंच॥
तब कामन सु कलेव सुर। करै सेव सुचि संच॥ छं०॥ १७९॥

तभी से नित्य शिव की पूजा कर के वह तुम्हें मिलने की प्रार्थना करती रही।

हर सेवा निस प्रति करै[1]। मन वचा क्रम वंध॥
बर चहुआन सुकामना। सेवा ईस सुगंध॥ १८०॥
कवित्त॥ कहै हंस सुनि राज। करौं ब्रंनन सु कह्यो गुर॥
दिवस च्यार प्रजंत। और मो सरन लहो पर॥
सेवत नित प्रति ईस। मास पंचह विति्तय वर॥
एक सुदिन सिव सिवा। वचन संपुट लग्गो कर॥
देवाधि देव सुनि ईस बर। करि सुचित्त कूंआरि सु व्रत॥
पारथ्थ रुंड माली सरस। पर संगा गवरी करत॥ छं०॥ १८१॥
दूहा॥ इह सुनि दस दिन गए बहि। सुनि रहि वचन सुईश॥
एक सुदिन ससिव्रत्त ने। किय द्रढ नेम जगीश॥ छं०॥ १८२॥
बर वरिहों संभरि सु पहु। वियौ पुरुष मुझ भ्रात॥
मिलन किया हर मास प्रति। भषिवै संनर घात॥ छं०॥ १८३॥

शिव पार्वती का प्रसन्न हो कर सपने में बर देना।

बचन सिवा सिव वाच दिया। पति पावै चहुआन॥
बर प्रमुदिय प्रथमाधि पति। हुअ सुपनंतर मान॥ छं०॥ १८४॥
कै जानै मन अप्पनौ। कै षिचिन कै ईस॥
और शिवा सुनि ईस प्रति। किय अस्तुति बर दीस॥ छं०॥ १८५॥

(१) मो.—करन।

प्रसन्न हो कर शिव पार्वती ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि जयचन्द ब्याहने आवेगा सो तुम रुक्मिणी हरण की भांति इसे हरण करो।

कवित्त ॥ हुअ प्रसंन सिव सिवा। बोलि हूं पठय तुझ्झ प्रति ॥
इह बरनी तुम जोग। चंद जोसना वान हत ॥
ज्यों रुकमिनि हरि देव। प्रीति अति बढ़ै प्रेम भर ॥
इह गुन हंस सरूप। नाम दुजराज भनिय चर[1] ॥
बुल्लिय सु पिता कमधज्ज नर। व्याहन पठयौ सु गुर दुज ॥
आवै सु भ्रात जैचंद सुत। कमध पुंज व्याहन सुकज ॥ छं० ॥ १८६ ॥

राजा ने फिर पूछा कि उसके पिता ने क्यों व्याह रचा और क्यों प्रोहित भेजा।

दूहा ॥ फिरि राजन यों उच्चरिय। सुनि दुजराज सुजान ॥
पिता व्याह क्यों कर रचिय। क्यों प्रोहित पठवान ॥ छं० ॥ १८७ ॥

हंस का कहना कि राजा ने बहुत ढूंढ़ा पर दैव की इच्छा उसे जयचन्द ही जंचा। वहां श्रीफल ले प्रोहित को भेजा।

कवित्त ॥ कहै दुज सकल बांनि। अहो ढिल्ली नरेस सुनि ॥
देवगिरी जद्दव नरेस। रचि बहु भांति व्याह गुनि ॥
अति रचना विधि करिय। तासु गुन कहि न सकों बर ॥
संपपक दुज कही। सुनि रु राजंन वहै नर ॥
प्रोहित सुहत्थ जदुनाथ लै। पठइय श्रीफल सुदिन धरि ॥
कनवज्ज दिसा इकमास प्रति। चलि[2] राजन गुर मिल्लि सुजुरि ॥ छं० ॥ १८८ ॥

प्रोहित ने जयचन्द को जाकर श्रीफल और वस्त्राभूषण आदि अर्पण किया।

मिले राज जयचंद। सु गुर प्रोहित्त समत्थं ॥

(१) मो—वर। (२) मो.—चल्लि राजगुर।

पठए अदव सुनाय। वस्त श्रीफल सुभ सत्थं॥
हय साकति सजि पंच। सहस इक वस्त्र पटंबर॥
मुत्ति माल जुरि पंच। अवर जो वस्त ब्याह पर॥
हेमंग पंच सत लेइ दुज। सुर राजन अग्गै धरिय॥
ते बस्त अनेकं बिधि सुबर। रंजि राज अप्पन सु जिय॥ छं०॥ १८८।

टीका देकर प्रोहित ने कहा कि साहे को दिन थोड़ा है सो शीघ्र चलिए।

मिलि प्रोहित जैचंद। दियौ श्रीफल सुविंद कर॥
जे पठई बर वस्त। अग्ग लै धरिय राज बर॥
सोइ श्रीफल कमधज्ज। दियौ सुइ अवध पुंज नर॥
अति उछाह माननिय। मिले रस हास परसपर॥
बोलयौ तब प्रोहित सुबर। अहो राज पंगुरन सुनि॥
लै चलै बींद ननकरि [1]बिलंब। दिन तुच्छै साहौ सु पुनि॥ छं०॥१९०॥

प्रसन्न होकर जयचन्द का चलने की तयारी और उत्सव करने की आज्ञा देना।

दूहा॥ चढ़ै प्रसन्न बहु पंगुरै। दियौ हुकुम सुभ्र बंध॥
प्रेरि सथ्थ जब अप्प पर। अति पर घर सुभ्र नंघ॥ छं०॥ १९१॥
सज्जि सेन चतुरंग नर। देवग्गिरि कज ब्याह॥
अति अगनित सथ द्रव्य लिय। नर उछ्छव करनाह॥ छं० ॥१९२॥

हंस कहता है कि वह पचास सहस्र सेना और सात सहस्र हाथी लेकर आता है अब तुम भी चलो। पृथ्वीराज ने दस सहस्र सेना लेकर चलना विचारा।

छंद पद्धरी॥ चढि चलिय सब्ब रठ्ठौर सेन। उडि रैंन रथ्थ रुक्किय सुगेन॥
दस लष्ष सेन सज्जिय कमंध। वारुनिय गंध दै सजि मदंध॥छं०॥१९३॥
सा अद्ध लष्ष पै पुलिय नैर। हज्जार सात मैंगल सु भैर॥

(१) मो.- विरम।

दर कूच धरे बल बंस [1]बीर। ब्याहनह काज उच्छवे सु बीर ॥ छं०॥१९४॥
कह हंस राज राजन सु बत्त। चढ़ि चलौ कलू रष्षन सुकत्थ ॥
तुम योग नारि बरनी [2]कुमारि। हूं पठय ईस तुम्र हत्त नारि ॥ छं०॥१९५॥
उन लियौ हत्त तुम्र हद्द नेम। नन करि विरम्म राजन सु एम ॥
इक मास अवधि दुजकहै वत्त। व्याहन सु काज मन करौ [3]रत्त॥ छं०॥१९६॥
बर ईस भयौ अरु सिवा बानि। सुख लह्यौ बहुत हम दुज बषानि ॥
सुनि सुनि श्रवन अनुराग कीन। तन रोम अंग उब्भारि चीन्ह॥ छं०॥१९७॥
दस सहस सेन सजि पास राज। चढ़नैं सु चित्त करि बाज साज ॥ छं०॥१९८॥

पृथ्वीराज का शशिवृता से मिलने के लिये संकेतस्थान पूछना।

दूहा ॥ कह संभारि बर हंस सुनि। कह जहौं संकेत ॥
कोन थान हम मिलन है। कहन बीच संमेत ॥ छं० ॥१९९ ॥

ब्राह्मण का संकेतस्थान बतलाना।

गाथा ॥ कह यह दुज संकेतं। हो राज्यंद धीर ढिल्लेसं।
तेरसि उज्जल माघे। व्याहन बरनीय थान हर सिद्धिं ॥ छं०॥२००॥

राजा का कहना कि मैं अवश्य आऊंगा।

दूहा ॥ तब राजनं फिरि उच्चरै। हो देवस दुजराज ॥
जो संकेत सु हम कहिय। सो अप्पौ चिय काज॥ छं० ॥ २०१ ॥

हंस का कहना कि माघ सुदी १३ को आप वहां अवश्य पहुंचिए।

अरिल्ल॥ सो अप्पिय हम नेम सु दृढ्ढं। तुम अवस्य आवो प्रभु गढ्ढं ॥
सेत माघ त्रयोदसि सा वहि। हर सुकलेव थांन सुति भावहि॥ छं०॥२०२॥

इतनी वार्ता करके हंस का उड़ जाना।

दूहा ॥ इह कहि हंस सु उड़ि गयौ। लग्यौ राज ओतान ॥
छिन न हंम धीरज धरत। सुख जीवन दुख प्रान ॥ छं० ॥ २०३ ॥

---

(१) मो.-धरि। (२) मो.-कुंआरि। (३) मो.-सत्त।

दस हजार सेना सहित पथ्वीराज का तैयारी करना।

दस सहस हैंवर चढ़िय। न्रप दिल्ली चहुआन ॥
हुकम सहि साइन कियौ। दै ढूरन विसहान ॥ छं० ॥ २०४ ॥

राजा का सब सामंतों को हाथी घोड़े इत्यादि बाहन देना

छंद भुजंगी ॥ दियौ कन्ह चहुआन मानिक बाजी। जिनैं देषतें चित्त की गत्ति ला
मुषं मझ्झ पायं कढ़ै वाज राजं। मनो वग्ग भीषं सतं कढ़िढ पाजं ॥ छं० ॥
दियौ बाजि इंदं बरं जाम देवं। दिपै तेज ऐसैं चिरं पंष एवं ॥
धरै पाइ ऐसे इलं मझ्झि जेसे। मुनै जैन भ्रमं धरै पाइ तेसे ॥ छं० ॥
चढ्यौ राव कैमास चिन्तं तुरंगी। रहै तेज पासं उछद्दंत अंगी ॥
[1]चमक्कंत [2]नालं विसालं खुरंगी। मनो बीज छब्बी कि आभा अनंगी छं०॥
उड़ै झार झारं पयं नाल झारी। समं बूंद धावै मनौं वार तारी ॥
चढ़े राजहंसं सु चामंड [3]जोटं। मनो तेज बंधौ मुनी बाइ मोटं ॥ छं० ॥ २०
डुलै [4]कंन नांहीं सिल्लोका सुग्रीवं। मनों जोति बंधौ [5]सुनूवात दीवं ॥
चढ्यौ राज षीची प्रसंगं पहूपा। उड़ै वास ज्यों वाय [6]वग्गै अनूपा ॥ छं० २०
बंध चैंर चित्तं चमक्कंत चाहं। हरद्दार छुट्टै कि गंगा प्रवाहं ॥
चढ्यौ राज पट्टं अजानंत बाहं। कही कव्विराजं उपम्माति चाहं ॥ छं० ॥ २१
दिये [7]बीच तारी कोई नाहि पुज्जै। बलं ताहि दिप्पै सरित्ता अमुझ्झै
दियै म्रग्गराजं चढ्यौ देवराजी। उड़ै पंखि पाजी रही पच्छ लाजौ ॥ छं० ॥ २१
चढ्यौ निड्डुरं राइ अंगं अभंगं। छुटै जानि तारान के व्योम मग्गं
चढ्यौ हाहुली राइ जंबू नरिंदं। बढ्यौ बांन ज्यों तज कम्मान चंदं ॥ छं० ॥ २१
चढ्यौ लंगरी राव लंगा सुबीरं। किधौं वाय बढ्यौ बुझ्झं जानि धीरं ॥
चढ्यौ राज गोइंद आहुट्ठ राजं। किधौं वाय बुंदं स छुट्टीय साजं ॥ छं० ॥ २१
चढ्यौ राव लष्षं सु लष्षं पवारं। भ्रमें अंग ऐसे उपम्मा विचारं ॥
किधौं अग्गि दंडं भ्रजं बाल फेरैं। किधौं भोर हथ्थं किधौं चक्र हेरैं ॥ छं० ॥ २१

(१) मो.--चमक्कांति। (२) मो.--तालं।
(३) ए.--जोतं। (४) ए.--कैन। (५) ए.--मुनि बात।
(६) मो.-वेगै। (७) मो.--वाच।

किधों राति बोहिथ्थ भ्रमि भोर नारं। कही चंद कवी उपमाति चारं।
चढ्यौ चंद पुंडीर राजीव नामं। तिनं [१]ओपमा चंद देषी बिरामं॥छं०॥२१५॥
जिनें गत्ति जीती सयम्भं पगारं। चली अंषि के पंघ चित्तं बधारं॥
चढ्यौ अत्त ताई उतंगं तुरंगा। मनों बीज की गत्ति आभा अनंगा॥छं०॥२१६॥
चढ्यौ राव रामं [२]रघूवंस बीरं। गतिं सूर जित्ती मृगं चंद भीरं॥
चढ्यौ दाहिमं देव नर सिंघ कैसे। मनो चित्त की अर्थ की गत्ति जैसे॥छं०॥२१७
चढ्यौ भोज राजं पहारं चिनैतं। फुटै सद्द तेजं अवाजं [३]चितेतं॥
चढ्यौ बीर जोद्धं कनक्कं कुमारं। चली हत्य पूरब्ब आचार पारं॥छं०॥२१८॥
चढ्यौ राव पज्जून कूरंभ बीरं। बढ़े लोह अग्गं धनं जैतपूरं॥
चढ्यौ सामलौ सूर सारंग ताजी। गही होड़ बंधी वयं वाम पाजी॥छं०॥२१९॥
चढ्यौ अल्हनं बीर बंधव्व पानं। चढ्यौ दान ज्यों ग्रहनं जुद्ध वानं॥
चढ्यौ लष्य लष्षी सलष्षं बघेला। बढ्यौ नेत ज्यों देह देषै सु हेला॥छं०॥२२०॥
चढ़े सब्ब सामंत छल बलत बीरं। मनों भान छुट्टी [४]किरन्नी कि तीरं॥
चढ्यौ बाज राजं प्रथीराज राजं। तबै पष्षरयो बाज साकत्ति साजं॥छं०॥२२१
उडैं सूर ज्यों हंस तुट्टै कमंधं। बरं ओपमा चंद जंपी कविंदं॥
द्रुमं ज्यों मरोरै [५]शिरं स्वामि हेतं। मयूरं कला बाज रची बंधि नेतं॥छं०॥२२२॥
चढ़े सब्ब सामंत सामंत बीरं। तबै जग्गियं जानि जोगाधिधीरं॥
जगी जोग माया सु जग्गीय थानं। प्रलीनं प्रलै ज्यों प्रलीनं प्रमानं॥छं०॥२२३॥
जगें बीर बीराधि डोरू बजावैं। नचै नद्द नंदी चिघाई चिघावैं॥छं०॥२२४॥

माघ बदी पञ्चमी शुक्रवार को पृथ्वीराज का यात्रा करना।

दूहा॥ [६]आगम निगम जांनि कै। चलि न्रप [७]सुक्र वार॥
माह वद्दि पंचमि दिवस। चढ़ि चलिये तुर तार॥ छं० ॥ २२५ ॥

चन्द का सेना की शोभा वर्णन करना।

छंद चोटक॥ कवि चंद सु ब्रंनन राज करं। सोइ चोटक छंद प्रमान धरं॥

(१) मो.-उप्पम्म। (२) मो.-रघोबंस।
(३) मो.-त्रिनेतं। (४) मो.-किरन्नं।
(५) ए.-सिरं। (६) ए.-अगम निरागम।

जिहि च्यार परे सगना सगनं। सुभ अच्छिर लाइ तजै अगनं॥छं०॥२२६॥
विवहार धरै बरनं सु बरं। पढ़ि पिंगल बाहन कोन हरं॥
वर चोजन चारु सुरंग दूलं। तहां भौर न मोर सुरंग फुलं॥ छं०॥२२७॥
गज उप्पर ढाल ढलक्कि तरं। सुकहौं तहां केलि [1]अचिज्ज बरं॥
तहां पल्लव [2]लल्लित रत्त बचं। तहां जे धन दंतिय पंति रचं॥ छं०॥२२८॥
झमकैं बर नंग मयूष कसी। निकसी तहां केतक सी बिकसी॥
सु चलें बर मंद सुगंध प्रकार। बढ़ी दिसि दस्स सु उज्जल मार॥छं०॥२२९॥
बजै महु रंग सु गंधन भ्रंग। बजे सहनाइ न फेरि [3]उपंग॥
हलै बर लत्त पवन्न झकोर। घरघ्घर होहिं पिलप्पित जोर॥ छं० ॥२३०॥
बुलै कल कंठ सु कंठह सद्द। तहां चढ़ कब्बि वसीठ उवद्द॥
सकेस कुसंम रु अंकुस पानि। हने हर काम असो [4]गज जानि ॥छं०॥२३१॥
अतसी बर पुप्फ सु वाढ़हि भृंग। बजै गज पांनि सु इंदुब रंग॥
लता ललिताइ हलावन ढाल। उतह जम लग्गय रूपतिताल॥छं०॥२३२॥
विकासित केसर [5]कुंकुम कांम। सरोज [6]सुरंभ अनूपम नांम॥
उहां मिटि ताल तरंगिनि कांम। उहां चलितेनिय ना तिहि ठांम॥छं०॥२३३॥
उहां बरहा जनु उप्परि केल। किने तब ढीठ हिया छबि मेल॥
हलं जनु नेजे षजूर बसंत। ढलौ बन राइ सुढालह मंत॥छं०॥२३४॥
तजी बर बाल सुरंग सुभेस। चल्यौ प्रथिराज सु दष्षिन देस॥
विरदै चहु विप्र कहै कविचंद। सही चहुआन प्रथी पर इंद॥छं०॥२३५॥

दूहा॥ चढ्ढि चलिय प्रथिराज बर। देवग्गिरिधर राज।
ता सुकन्ह बरदाय बर। पुच्छिय बिगत सुकाज॥ छं० ॥ २३६॥
कहत कन्ह बरदाय बर। अहो राज सुभ मांनि॥
कहो पयांन सज्यौं कहां। सोहम कहों प्रमांन॥ छं० ॥ २३७॥

चलने के सयम राजा को भय दिलानेवाले सकुनों का होना।

(१) मो.--अचज्जि। (२) मो--ल्लित।
(३) ए.--उतंग। (४) मो.--गिन।
(५) ए.--कुसुम। (६) मो.--सरूप।

कवित्त ॥ चढ़त राज प्रथिराज। सगुन मैं भीत उपन्नौ ॥
स्यांम अंग तन छिद्र। कलस संमुहं सपन्नौ ॥
रत्त वस्त्र आरुह्य। रत्त तिलकावलि छुट्टिय ॥
मुकत माल छुट्टियं। केस छुट्टिय कस तुट्टिय ॥
लुट्टिय अनंग भय भीत गति। मन अलुभ्भ निद्रा [1]असति ॥
विभ्भाइ भाइ उनमोद पति। मंद मंद सक्रति हसति ॥ छं० ॥ २३८ ॥

राजा का इन शकुनों का फल चन्द से पूछना।

अरिल्ल ॥ सो भय भीत देषि कवि पुच्छिय। जंपि कह्यौ मति मोहि सु अच्छिय ॥
तुम सब जांन त्रिमान प्रमानं। जंपि कह्यौ कविराज सुजानं ॥ छं० ॥ २३९ ॥

चन्द का कहना कि इस शकुन का फल यह होगा कि या तो कोई भारी झगड़ा होगा या ग्रहविच्छेद।

दूहा ॥ पाछे बीर सगुन्न भय। ते कहंत कविचंद ॥
कै दंदग्गेनय उपजै। कै नवीन ग्रह दंद ॥ छं० ॥ २४० ॥

चन्द ने राजा को जैचन्द के पूर्व वैर का स्मरण दिलाकर कहा कि इस काम में हाथ देना मानों बैठे बैठाए भारी शत्रु को जगाना है।

कवित्त ॥ मोह डोलि कविचंद। चित्त अंदेह उपन्नौ ॥
पुब्ब बैर चहुआन। बैर कमधज्ज दिपन्नौ ॥
सबर जोर संग्राम। निबर अंगम्यौ न जाइय ॥
को जम हथ्थ पसारि। लेह [2]ग्रह अप्प बुलाइय ॥
[3]मंडाय पेट डंकिन सरसि। कोन बांह सायर तिरै ॥
[4]अपसगुन जानि चहुआन चलि। दै विधान त्रिम्मित करै ॥ छं० ॥ २४१ ॥

वय, पराक्रम, राज और काम मद से मत्त राजा ने कुछ ध्यान न दिया और दक्षिण की ओर शीघ्रता से वह चला।

(१) मो.-असित (२) मो.-सह। (३) ए. कृ. को.-मैंडाप। (४) ए. कृ. को.-अमग्भ।

कवित्त ॥ बेस मद्द बल मद्द । और बंध्यौ सुरतानौ ॥
राज मद्द उनमद्द । काम मद्दह परिमानौ ॥
अरु अवनी औतांन । तौन बंध्यौ चहुआनं ॥
दल बद्दल पावस्स । चल्यौ दछिन धर वानं ॥
[1]छतीस कुलौ बर वंस विय । चढ़ि प्रथिराज नरिंद चलि ॥
उपवन्न बंब बज्जी विषम । खान थान द्रिगपाल हलि ॥छं०॥२४२॥

पृथ्वीराज से पहिले जैचन्द का देवगिरि पहुंचना।

दूहा ॥ इन अग्गैं कमधज्ज लै । आइ संपतौ थान ॥
माघ नवमि चंवक बजै । चहुआना परिमान ॥ छं० ॥ २४३ ॥

जैचन्द के साथ की एक लाख दस हजार सेना का वर्णन। जैचन्द का आना सुन शशिवृता का दुखी होना।

कवित्त ॥ [2]एक लष्ष दस अग्ग । सेन सज्जे कमधज्जं ॥
बीय सहस बारुन्न । सत्त हज्जार फवज्जं ॥
अद्ध लष्ष पैदल्ल । अद्ध साइक वहंतं ॥
सजि समूह चतुरंग । दिसा दछिन [3]परजंतं ॥
सुनि श्रवन कुंअरि शशिवृत्त लिय । सुनि अवाज बर बीर घन ।
चहुआन वृत्त लीनौ अधम । प्रान हौन कढ्ढन सुमन ॥छं०॥२४४॥

शशिवृता मन ही मन देवताओं को मनाती है कि मेरा धर्म न जाय और उसका प्राण देने को प्रस्तुत होना।

दूहा ॥ मिलि पूजै बर बीर कौ । करी भगति घन भाइ ॥
बाला प्रान [4]सुकढ्ढनह । अंतर ध्रम्म न जाइ ॥ छं० ॥ २४५ ॥

सखी का समझाना कि व्यर्थ प्राण न दे, देख ईश्वर क्या करता है। ईश्वरी लीला कोई नहीं जानता। सखियों

(१) मो.-छत्रीस। (२) ए.कृ. को.-एह।
(३) ए. कृ. को.-फरजंतं। (४) मो.-फढ्ढतॉह।

का श्रीरामचन्द्र, पाण्डव आदि के प्राचीन इतिहास सुनाकर धीरज धराना ॥

[1]कहै सषी समझाइ कर। पुब्ब कथा कहुं मंडि ॥
धरी अद्ध जो सुनिहि तुम। प्रान बाल नन छंडि ॥ छं० ॥ २४६ ॥
छंद पद्धरी ॥ मिलि बाल ताहि रचि कहै बत्त। संग्रहन भवन क्यों मिटै पत्त॥
दैवान बत्त जानै न कोइ। लिष्षे जु अंक मिट्टय न सोइ ॥छं०२४७॥
बल बीर जुद्ध पंडव नरेश। बन ग्रह्यौ राज मुक्क्यौ सुदेश॥
[2]जिष्यनह सब्ब दृगपाल जोग। संध्यौ सुजोग तजि राज भोग ॥छं०॥२४८॥
बलि राइ जग्य आरंभ सत्य। जित्तनह इंद्र आरंभ पत्त ॥
मुक्किय सुथान तिन मान षंडि। सेवइ सुदेव पाताल मंडि ॥छं०॥२४९॥
कट्टन कलंक शशि जग्य कीन। का कुष्ट अंग छिन मान हीन ॥
नघु राइ कीन राज सु अनूप। का कुष्ट काल संहर्यौ कूप॥छं०॥२५०॥
श्रीराम हथ्थ पकर्यौ प्रवीन। आरन्य बहुत दुष सीय कीन ॥
गुरुदेव त्रिया तारा प्रमान। झकझोरि परी देवन समान॥छं०॥२५१॥
सिय लई निशाचर रूप चीन्ह। मिलि देव जुद्ध आरंभ कीन॥
आतम्म घात [3]मंडो विशाल। पावै न सुष्य व क्षमें काल॥छं०॥२५२॥
तिय मात तात बंधह सु देहि। बाला विचित्र ते [4]हत्त लेहि॥
कुलजाहि भ्रंम ग्रह राजनीति। जे मँडहि बाल गुर जनन जीति॥छं०॥२५३॥
शशिव्रत्त जु वत्तिय मत्ति मानि। हित काज मत्ति हम दै प्रमान॥
पंषी न पच्छि को लगै धाइ। आवै न हत्त पै जंम जाइ।।छं०॥२५४॥
आवै न मेह ग्रह लगै अग्गि। पावै न जीव को दान मग्गि॥
मानै न विनति तिन मंत सुझ्झ। जनु कान हीन गुर कही गुझ्झ॥२५५॥
मंनै न बाल उर मत्त मान। चिंत्यौ सुतात कढ्ढन परान॥छं०॥२५६॥
चौपाई ॥ मिलि मिलि बाल रचावैं बाले। तन मन मने न चित व्रत साले॥
बहुत करे सिंगार सार। मनो मृतक नन रंग न धारे॥छं०॥ २५७॥
छंद पद्धरी ॥ राजन अनक पुत्री त्ति व्याह। शशिव्रत्त देव कन्या सिवाह॥

(१) मो.-कही। (२) मो.-जिप्पतह।
(३) मो.-मंडै। (४) ए. कृ. को.-हृद।

चहुआन चिंत जुग्गिन [1]पुरेस। आहत्त बीर जिन करहु भेस॥ छं०॥२५८॥
निव्वरै बाद जौ करौ मंच। साभ्रम्म वीर कढ्ढै [2]जु कंत॥छं०॥२५९॥

राजा का पृथ्वीराज के आने और शशिवृता के प्रेम का समाचार जानकर हंमीर संमीर (?) से मत पूछने लगा।

दूहा॥ कंति कंति प्रति बढ्ढई। चढ़ै चाइ चहुआन॥
मो पुच्छै प्रति तान जो। बीर चंद दै दान॥ छं०॥ २६०॥

हंमीर संमीर का मत देना कि वीरचन्द को कन्यादान दीजिए।

गाथा॥ बीरं चंद सुदानं। पानं विधाय नित्तयौ गुरयं॥
बुल्लै न्रप हंम्मीरं। साइ संमीरं साइ मंगायं॥ छं॥ २६१॥
दूहा॥ ज हंमीर संमीर गति। समुह सु दुज्जन भेव॥
जिन बड़वानल कुप्पयौ। सार मत्ति प्रति सेव॥ छं०॥२६२॥
सार भार संसार कौ। नव निधि नव प्रति पान॥
व्याह वीर शशिव्रत्त कौं। अप दीजैं प्रति दानं॥ छं०॥ २६३॥

कन्या के प्राण देने के विचार और शकुन विचार से राजा भानु ने चुपचाप पृथ्वीराज के पास दूत भेजा।

बाल प्रान कढ्ढत सुपुनि। सगुन एक मन मान॥
बढि अवाज चहुआन की। अली सुन्यौ अप कान॥ छं०॥ २६४॥
यों सु सुनिय न्रप भांन नैं। पुचि प्रलय व्रत कौन॥
चर [3]पिष्पिय चहुआन पै। जद्दव [4]मोकल दीन॥ छं०॥ २६५॥

राजा ने पत्र में लिखा कि शिव पूजा के बहाने शिवाले में तुम को शशिव्रता मिलेगी।

मुक्कार मति वंतिनौ। न्रप कग्गद दै हथ्थ॥
पूजा मिसि बाला सुभर। संभु थान मिलि तथ्थ॥ छं०॥ २६६॥

---

(१) ए. कृ. को.- प्ररेस। (२) मो.-सु।
(३) ए. कृ. को.-छिप्पय। (४) मो.-कलि।

इधर पृथ्वीराज के सरदारों का उत्साहित होना।

कवित्त ॥ हय गय दल चतुरंग। कंक मंझौति कन्ह सिर ॥
राजद्व वग्गरी। रांम रघुवंस जुद्ध जुर ॥
निड्डुर रा रट्ठौर। सेन सज्जै ध्रत रज्जै ॥
एक एक संपज्ज। एक एकन गुन लज्जै ॥
जुग्गिनि डहकि बंबरि लसथ। जिम जिम शंकर सिर [1]धुनिय ॥
श्रत ताइ उत उत्तंग बर। बावारी सारह [2]सुनिय ॥ छं० ॥ २६७ ॥

कवि कहता है गन्धर्व व्याह शूरवीर ही करते हैं।

गाथा ॥ सार प्रहारति भेवो। देवो देवत्त जुद्धयौ बलयं
गंध्रव्वी प्रति व्याहं। सा व्याहं सूर कलयामं[3] ॥ छं० ॥ २६८ ॥

पृथ्वीराज का आना सुनकर मन ही मन राजा भान का प्रसन्न होना, परन्तु वीरचन्द का सशंकित होना।

कवित्त ॥ सेन [4]सद्धि संमुह्यि। भान आवाज राज सुनि ॥
प्रान लद्धि जो मद्धि। लाज लब्भी जु सूर धुनि ॥
प्रिय विरह्निनि रिधि रंक। कै ध्यांन लब्भै जोगिंदं ॥
बलह काम कलहंत। कि कह विश्ववासत इंदं ॥
संभरिय कान संभरि न्रपति। वीर चंद आगम विषम ॥
निह काल काल भंजन गढ़ै। बढ़ै सार सारह विभ्रम ॥छं०॥२६९॥

दूहा ॥ सार धार पूजै नहै। पिति सामंत न नाथ ॥
आवृत बीर क्यों पूजई। दैव दैवतह साथ ॥ छं० ॥ २७० ॥

गाथा ॥ दुश्र वंस श्रंस सारसं। बज्जं बाहु बलयो बलयं ॥
बज्जं दृष्टिति रिष्टं। मानिष्टं श्रष्टयो किलयं ॥ छं० ॥ २७१ ॥

अरिल्ल ॥ बर बरिष्ट बर लोभ प्रकार। लष्य लष्य सा मंतह सार ॥
तिन बर बरं श्रंगम प्रति जानिय। सो देवत देवत्तह मानिय ॥छं०॥२७२॥

कवित्त ॥ अति-प्रचंड बलवंड। बैर [5]बाहरू तत्ताइय।

(१) मो.-धुनय। (२) मो.-सुनय। (३) कलयामि। (४) मो.-मध्य।
(५) मो.-बाहरू तताइय।

माया हीन मसंद। दंद दारुन डर नाइय ॥
दल दंदन सिंधु रहि। बाहु दंतन उप्पारहि ॥
एक एक संग्रहै। एक शस्त्र करि डारहि ॥
दैवत्त वाह दैवत्त भर। दवग्गिरि संमुहौ चलिय ॥
बर बीर धीर साधन सकल। अकल महूरति मति कलिय ॥छं०॥२७३॥

दूहा ॥ अकल वीर रस अफल भुज। कलि न जाहि सामंत ॥
भीम भयानक बल सु हत। जे भंजे गज दंत ॥ छं० ॥२७४॥
[1]लभ्भै जस लिष्षीय बर। दैव जोग नह[2] हथ्थ ॥
पुब्ब दई प्रथिराज कौं। सोइ प्रन मन समरथ्थ ॥ छं० ॥ २७५ ॥
चाहुआन कै कृत सयन। मरन सरन प्रथिराज ॥
उभै सिंघ दुअ बीच पल। उभै सिंघ सिर ताज ॥ छं० ॥२७६॥

गाथा ॥ घटिका उभय सु देवो। रहियं निकट राजनं ग्रामं ॥
जानिज्जै न्रप नैरं। दिष्ष न काजैव सोभियं नैनं ॥ छं० ॥ २७७॥

दूहा ॥ रंभ गवष्यनि नैर मधि। जारि न चिंत प्रमान ॥
मानहु न्रप प्रथिराज कौ। रंभ नैन [3]प्रत प्रान ॥ छं० २७८ ॥

पृथ्वीराज का नगर में होकर निकलना, स्त्रियों का झरोखों से देखना। शशिव्रता का प्रसन्न होना।

कवित्त ॥ दुहूं पास न्रप नयर। राज दिप्पै प्रति राजं ॥
मनों हथ्थ बर नयर। राज संमुह प्रति साजं ॥
कोट कठिन मेखल सु। कटि दि्ग पलक उघारिय ॥
राज कित्ति संभरन। गोष श्रवनन संभारिय ॥
किंकिनि सुपाइ घुंघर सु गज। राज निसान सबद्द प्रति ॥
चहुआन राव आगम सुव्रत। कमल हीय बढ्ढिय मुरति॥छं०॥२७९॥

राजा भान के हृदय में पृथ्वीराज का आना सुनकर हर्ष शोक साथ ही उदय हुआ।

(१) मो. लभै सुजन लिक्खंत बर (२) मो.-नन।
(३) मो.--तजि।

दूहा ॥ काम कलह रत बढ्ढि प्रति। सुनिय भान न्रप कान ॥
आनंदह दुष उप्पज्यौ। मरन सु निश्चय मान ॥ छं २८० ॥

श्लोक ॥ मंगलस्य सदा व्याहं। अव्याहं सु मंगलं ॥
ब्रह्मा चकितं समो दृष्टे। [1]जेक कंज सु कंजभिः ॥ छं० २८१ ॥

पृथ्वीराज की सेना का उमङ्ग के साथ नगर में घूमना।

कवित्त ॥ फिरिग पंति चिहु पास। सूर उभ्भौ चाव हिसि ॥
चतित जुद्ध आवद्ध। मत्त[2] बरषंत बीर असि ॥
और व्याह मंगलह। व्याह मंगल अधिकारिय ॥
परि पिशाच दानव। सु बुधि मग्गह विच्चारिय ॥
नन करहु तात दुष पुत्त कौ। घर लीनौ जम सद्दकैं ॥
प्रथिराज राज राजन बलिय। को पुज्जै रन बद्दिकैं॥ छं० ॥ २८२ ॥

दूहा ॥ को पुज्जै बद्दत [3]सुरन। बयन सयन प्रथिराज ॥
अद्दत जित्ति जित्तिय सयल। [4]को मंडै कृत काज ॥ छं० ॥ २८३ ॥

गाथा ॥ को मंडै कृत काजं। साजं जाह्नय सूर योवनं ॥
तारिज्जैं सजि राजं। बंकिम भूमायं विषमयं होई ॥ छं० ॥ २८४ ॥

देवालय में शिव पूजा के लिये शशिवृता का जाना। पृथ्वीराज का वहां पहुंचना।

देवालय भगवती। पूजैवं पूजयो बालं ॥
सुबर पुछ्यौ प्रथिराजं। कुज संसा बीरयो हथ्थं ॥ छं० ॥ २८५ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा ॥ विषम ठौर बंकम विषम। कल [5]सोभित हत कंद ॥
जो प्रथिराजह अंग में। मनों प्रथी पुर इंद ॥ छं० ॥ २८६ ॥
मनों राज पृथ्वी पुरह। धनि सुध्रम्म लवलेश ॥
मानहु बीर नरिंद कौ। रति आयौ अविशेष ॥ २८७ ॥

---

(१) मो.-कंजे कंज सुकं कंजसि। (२) ए. कृ. को.-बरषन्न।
(३) ए. कृ. को.-नर। (४) मो.-मंडै को। (५) मो.-सोभत।

सखी का शशिव्रता से कहना कि तू जिसका ध्यान करती थी वह आ गया, देख।

यों करंत [1]दुत्तिय बियौ। कथा श्रवन सुनि मंत॥
जाकौ तें पतिव्रत्त [2]लिय। सो आयौ अलि कंत॥ छं०॥ २८८॥

शशिव्रता का आँख उठाकर देखना। दोनों की आँखे मिलना।

श्रवन नयन का मेल कै। भय चंचल चल चित्त॥
श्रोताने दिष्टांन अरु। मिलि पुच्छै [3]दोइ मित्त॥ छं०॥ २८९॥

मारे लाज के कुछ बोल न सकी पर नैन की सैन से ही बात हो गई।

चंद्रायना॥ कर्न प्रयंत कटाछ सुरंग विराजही।
कछु पुच्छन कौं जाहिपै पुच्छत लाजही॥
नैंन सैंन में बात स्रवनन सों कहै॥
काम किधौं प्रथिराज भेद करिना लहै॥ छं०॥ २९०॥

नैन श्रवण का संवाद।

दूहा॥ नैंन श्रवन्नन पूछई। तुम जानैं वह भंत॥
मेरे जीय अंदेस है। कही न मैं पिय जंत॥ छं०॥ २९१॥
श्रवनन सन नैंना कही। [4]तुम जानौ चहुआन॥
काम न्टपति कौ रूप धरि। आवत है इन थान॥ छं०॥ २९२॥

हंस ने पहुँचकर शशिव्रता से कहा कि ले पृथ्वीराज शिवालय मे तुझ से मिलने आ गया।

ताम हंस आयौ समषि। कह्यो अहो शशिव्रत्त॥
चाहुआन आयौ प्रछन। मिलन थांन हर सित्त॥ छं०॥ २९३॥
कवित्त॥ [5]घरि गांम जद्दव नरिंद। उभ्भे चिहु पासं॥

---

(१) मो.-दुद्दिय। (२) मो.-लियौ।
(३) मो.-दोय। (४) ए. कृ.--जिन। (५) ए.-घोरि

पल नंषिय रंभा सु। करन आरंभ प्रवासं॥
एक एक गुन करहि। सब्ब फूले सत पत्रं॥
तिन मध्यह शशिवृत्त। भई कम्मोदनि मंत्रं॥
[1]पित पुच्छि पुच्छि परिवार सब। पुच्छि बंध रज्जन सकल॥
आवृत्त तात अग्या सुग्रहि। भईय बाल बुध्या विकल॥ छं०॥ २९४॥
दूहा॥ विकल बाल जहं सकल हुअ। बुद्धि विकल प्रति साज॥
[2]भान वचन सच्चै सुकरि। जिन अप्पौ प्रथिराज॥ छं०॥ २९५॥
गाथा॥ वीरं चंद सुव्याहं। सो व्याहं जोगिनीपुरयं॥
संभरि क्रन शशिवृतं। अगम वीराइमं जनंत तयौ॥ छं०॥ २९६॥

माता पिता की आज्ञा ले शशिवृता का देवालय में जाना।

कवित्त॥ पुच्छि मात पित पुच्छि। पुच्छि परिवार ग्रेह सब॥
में व्रत लियौ निवद्ध। गवरि पुज्जनं बाल जब॥
तिन थानक सब देव। नौति आरंभ व्रत लीनौ॥
तव प्रसाद उप्पनौ। मोहि इच्छा व्रत दीनौ॥
तिन काल व्रत्त लीनौ सुमैं। गवरि प्रसाद सु पुज्ज फल॥
बारंज वात तुअ मोह हुअ। कहै और अब लहि [3]अफल॥ छं०॥ २९७॥
दूहा॥ दुप दैवल को छंडनह। उर सिंचन अंकूर॥
दौह काल बल वीचि बदि। लिय समान संपूर॥ छं०॥ २९८॥

शशिवृता के रूप का वर्णन।

बाला बेनी छोरि करि। छुट्टै चिहुर सुभाइ॥
कनक थंभ तें ऊतरी। उरग सुता दरसाइ॥ छं०॥ २९९॥
कवित्त॥ तजि भूखन बर बाल। एक आचिज्ज उपन्नौ॥
लता हेम पर चंद। उभै षंजन ढिग चिन्नौ॥
श्रीफल उरज विसाल। बाववर अंग सुपन्नौ॥
सुकि सुत रंग अरन्नि। करी भग्गावल वन्नौ॥
सोभंत उरगपति भुअ भरन। हंस मुक्ति चर [4]बर करी॥
सुध काज चढ़ै पप्पील सुत। काम पत्तिनी दुख डरी॥ छं०॥ ३००॥

(१) मो.-पति। (२) मो.-तान। (३) मो.-नवल। (४) मो.-चर।

दस दासियों के साथ शशिवृता का शिवालय में आना।

दूहा ॥ ते दासी दस बाल ढिग। तिर बरने कवि चंद ॥
तिन में बाल सुसोभियै। मनों प्रथीपुर इंद ॥ छं० ॥ ३०१ ॥

शशिवृता का रूप वर्णन।

छंद चोटक ॥ मय मंजन मंडित बाल तनं। घनसार सुगंध सुघोरि घनं ॥
नव लोइन अंजित मंजि चली। कि मनो कस कुंदन थंभ इली ॥ छं० ॥ ३०२ ॥
सुभ वस्त्र सुअंग सुरंगनसी। सुहली मनु साष लदन्न कसी ॥
जरि जेहरि पाइ जराइ जरी। सजि भूषन नभ्भ मनो उतरी ॥ छं० ॥ ३०३ ॥
सिगरी लट यों बिथरी बिगसैं। शशि के मुख तें अहि सें निकसैं ॥
रँग रत्त उवट्टन उज्जल के। तिन में कछु सेत सुधा चलि के ॥ छं० ॥ ३०४ ॥
नव राजियरोम बिराज इसी। जमना पर गंग सरस्वति सी ॥
परि पान सु कुंकम मज्जन कै। नव नीरज अंजन नैननि कै ॥ छं० ॥ ३०५ ॥

दूहा ॥ छुटि मृग मद कै कांम छुटि। छुटि सुगंध की बास ॥
तुंग मनों दो तन दियौ। कंचन थंभ प्रकास ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

कुंडलिया ॥ धर उप्पर कुच कनि परी। राजस तामस रंग ॥
तीजौ तिहि सत काम मिलि। सो ओपम कवि अंग ॥
सो ओपम कवि अंग। नदिन मिलि काम पतंगी ॥
चढ़त घरं संमूह। करी भइ फेरि पतंगी ॥
*बरं सिर दार बिमार। संभु चहुआन नाह नर ॥
गंग यमुन भारथ्थ। हथ्थ जोरंत सु अद्धर ॥ छं० ॥ ३०७ ॥

दूहा ॥ तिमिर बीर गवनं कुवट। चिगुन तेज रवि बास ॥
चवनित विक्रम परिस की। [1]काम ज्वाल बल हास ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कुंडलिया ॥ करि मज्जन सज्जन सुक्रम। आभूषन न समान ॥
कोहं काके कोहि दिसि। सजि सषि नैन कमान ॥
सजि सषि नैन कमान। केश वागुरि विस्तारिय ॥

---

* छंद ३०७ के दोनों अंतिम पद अशुद्ध हैं। पाठ चारों प्रतियों में समान है।

(१) मो.-हूल।

हावभाव कटाच्छ । ठुंकि पुट्टी दिय भारिय ॥
बेठि नैन न्रप मूल । पेम [1]देषन गइ सज्जन ॥
मन म्रग पिय हत काज । ताकि बंधन किय मज्जन॥ छं०॥ ३०९॥

छंद नाराच ॥ सुगंध केस पासयं । सुलग्गि मुत्ति छंडियं॥
अनेक पुप्प बीचि गुंथि । भासिता बिषंडियं ॥
मनों सनाग पुप्फ जाति । तीन पंथि मंडियं॥
दुती कि नाग चंदनं । चढ़ंत दुञ्च पंडियं॥ छं० ॥ ३१० ॥
सिंदूर मध्य गुच्छता । म्रगंमदं बिराजयं॥
मनो कि सूर उग्गतें । [2]गहे सु पुब लाजयं॥
सु सुच्छ सुच्छ पाट आट । पेम बाट सोभियं॥
मनो कि चंद राह बान । बे प्रमान लोभयं॥ छं० ॥ ३११ ॥
कनक काम कुंडिलं । झलंत तेज उभ्भरे ॥
ससी सहाइ मान भाइ । सज्जि सूर दो करे ॥
दुती उपम्म बिंद की । किरन्न चंद दिठ्ठयं ॥
मनों कि सुर इंद गोदि । अप्प आनि बिठ्ठयं॥ छं० ॥ ३१२ ॥
भुवन्न बंक संक जूअ । नैन म्रग्ग जूवयं ॥
उरद्धता चपल्ल गत्ति । [3]अच्छ आनि ऊवयं ॥
कटाक्ष नैन बंक संक । चित्त मान बंकयं ॥
सुछंडि वै सु कुंचितं । श्रवन्न बान नंघयं॥ छं० ॥ ३१३ ॥
सुगंधता अनेक भांति । चीर चारु मंडियं ॥
सु केहरी कटिं प्रमान । बीच बंधि छंडियं ॥
सुरंग [4]अंग कंचुकी । सुभंत गात ता जरी ॥
बनाइ काम पंच बांन । ओट जोट लै धरी ॥ छं० ॥ ३१४ ॥
सुरंग [5]माल्ल लाल बाल । ता बिसाल छंडयं ॥
सु पुब्ब बैर जानि काम । अग्गि संभ मंडयं ॥
[6]दुती उपम्म मुत्ति माल । यों बिसाल ता कही ॥

(१) मो.-पेदन ।　(२) मो.-गहंत रहे लाजयं ।　(३) ए. कृ. को.-अर्च्छ ।
(४) ए. कृ कां.-रंग ।　(५) मो.-लाल माल　(६) ए.-उदी

जु भारथी सु [1]गंग लै। सुमेर शृंग तें बही ॥ छं० ॥ ३१५ ॥
जराइ चौकि स्याम पाट। रत्ति पत्ति तें घुली ॥
सुरंग तिथ्थ थान मंडि। ईस शीश तें चली ॥
सुवर्न छुद्रघंटिकादि। षोडसं बषानयं ॥
सु मुत्ति तात मोर तन्न। [2]गोदरं बषानयं ॥ छं० ॥ ३१६ ॥
सुगंध गोप चिन्ह मंडि। पीत रत्त जावकं ॥
अभूषनं धरंत चित्त। मित्त हित्त श्रावकं ॥
बनाइ कें चौंडोल लोल। चढ्ढिता सु सुंदरी ॥
सुदोपिता सुरंग थान। अस्तु तास उच्चरी ॥ छं ॥ ३१७ ॥

शशिवृता का चंडोल पर चढ़ कर देवी की पूजा को आना।

दूहा ॥ सजि शृंगार शशिव्रत्त तन। चढ़ि चौंडोल सुरंग ॥
पूजन कौं बर अंबिका। आई बाल सु अंग ॥ छं० ॥ ३१८ ॥

तेरह चंडोलों को चारों ओर से घेरकर राजा भानु की सेना का चलना।

सज्जि सेन जद्दव न्रपति। दसत तीन चौंडोल ॥
लकरि लाल से पंच अग। दस दिसि [3]लष्षन लोल ॥ छं० ॥ ३१९ ॥

सूर्योदय के समय पूजा के लिये आना। राजा की सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ अरुनोदय उद्यमह। सुच्छि लिन्नै सु बंध भर ॥
उभय सहस बाजित्त। ढोल च'बकी सुमत गुर ॥
अद्ध सहस नप्फेरि। सहस सहनाइ सुरंगी ॥
सुवर बीर पूजा प्रमांन। कीनी मति चंगी ॥
बिन पुंज सग सेना सकल। अकल अपूरब बत्त लर ॥
चर सकल विकल अलि कुलन कौं। सुचित मित्त इकह सु थिर। ॥ छं० ॥ ३२० ॥

---

(१) मो.-मग (२) ए.-सादरं
(३) मा. टिप्पन।

गाथा ॥ गुज्जर वै गुज्जर धनी। सथ्थं सेनाइ सब्बयौ वीरं ॥
जांनैनि सबर अद्दं। उग्ग वा तिमिर तप हरनं ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

मन्दिर के पास पहुंचकर शशिव्रता का पैदल चलना।

हरनंत पति तुरंगं। साहस मंचाय गिद्धयो रनयं ॥
देवालेयं पासं। सा पासं बालयं चालं ॥ छं० ॥ ३२२ ॥

शशिव्रता के उस समय की शोभा का वर्णन।

छंद नाराच ॥ चली अली घनं बनं। सुभंत सथ्थ संघनं ॥
विहंग भंगयो पुरं। चलंत सोभ नोपुरं ॥ छं० ॥ ३२३ ॥
अलीन जुथ्थ आवरं। मनो विहंग सावरं ॥
चुवंत पत्त रत्त जा। उवंत जानि अंबजा ॥ ३२४ ॥
कलिंद सोभ केसयं। अनंग अंग लोभयं ॥
उठंत कुंभ कुच्चयं। उपंम कब्बि सुच्चयं ॥ छं० ॥ ३२५ ॥
मनों अरंत आल की। धरी सु आनि लालकी ॥
सुभंत रोमराजयं। [1]प्रपील पंति छाजयं ॥ छं० ॥ ३२६ ॥
मनोज कूप नाभिका। चलंत लोभ आलिका ॥
सुरंग सोभ पिंडुरी। धरादि काम पिंडुरी ॥ छं० ॥ ३२७ ॥
नितंब तुंग सोभए। अनंग अंग लोभए ॥
मनौ कि रथ्थ रंभ के। सुरंभ चक्क संभके ॥ छं० ॥ ३२८ ॥
नषादि आदि अच्छनं। मनों कि इंद्र [2]दृप्पनं ॥
ढरंत रत्त एड़ियं। उपम्म कब्बि टेरियं ॥ छं ॥ ३२९ ॥
मनौ कि रत्त रत्तजा। चिकंत पत्त अंबुजा ॥ छं० ॥ ३३० ॥
गाथा ॥ [3]मढ़ मे रष्षत बाले। लग्गा सेनाय पास चिहु वीरं ॥
धरि धीरं तन दुरयं। रोमं राज रोमयं अंचं ॥ छं० ॥ ३३१ ॥

कान्यकुब्जेश्वर को देख कर शशिवृता का दुखी होना और मन में चिन्ता करना।

दूहा ॥ बाल धरक्कति वचनि गति। ग्यान मोह विष पान ॥
त्यों कमधज्जै देषि कै। बर चिंतै चहुआन ॥ छं० ॥ ३३२ ॥

(१) मो.-पपील। (२) मो.-दर्प्पनं। (३) को.-पढ़।

एक ओर कान्यकुब्जेश्वर की सेना का जमाव होना और दूसरी ओर पृथ्वीराज की सेना का घेरना।

कवित्त ॥ देषि सुभर [1]लच्छिनति। फौज चतुरंग रिंगावै ॥
अरी सेन सम भार। धार भंजत मग पावै ॥
बहु गिरष्टता रिष्ट। इक्कि अप्पन पर धावहु ॥
सुबर म्यंघ आलस्य। स्याल सूधौ करि पावहु ॥
उट्ठै न बीर बोरहु उठत। सुबर मंच फुनि करिय बर ॥
अभ्भंग सेन भद्दव सरिस। अभँग अंग [2] सज्जे कहर ॥छं०॥३३३॥

पृथ्वीराज की सेना का चारों ओर से घेरना।

दूहा ॥ चाहुआन सब सेन जुरि। भिरि रूंधे चहुंपास।
देव दुतिय देवह दरस। बल बढ्ढिय आयास ॥ छं० ॥ ३३४ ॥

जैचन्द और पृथ्वीराज की सेना की तुलना।

कवित्त ॥ असुर सेन कमधज्ज। सु सुर प्रथिराज सेन बर ॥
अम्रत किति संग्रह्यौ। मदह भौ क्रोध बीर [3]तर ॥
मदन मोह रंभनी। तहां शशिव्रता समानं ॥
दुहुन बीच सिभ्भयै। इत चहुआन सुजानं ॥
अकित्त राह पच्छै फिरग। चक्र तेग सज्जिय सुबुधि ॥
अलि सकति सेन माया विषम। सुबर बीर बढ्ढिय सु सुधि ॥छं०॥३३५॥

दोनों सेनाएं तलवार लिए तैयार हैं। जिसने द्रोपती का पण रक्खा वही शशिवृता का पण रक्खेगा।

दूहा ॥ दुहूं तेग तारुन्य तन। सयन सुक्रति प्रतिकाल ॥
जिन रष्यो द्रोपत्त पन। सो [4]रष्षै प्रति बाल ॥ छं० ॥ ३३६ ॥
देह कंचुकि दह दून अलि। बिच सुंदरी अमूल०।
डोल तौस संयोग भति। भौ भारथ्थ समूल ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

(१) मो.-लष्षिन सु। (२) मो.-सज्जै।
(३) ए. कृ. को.-त्रासि। (४) ए. कृ. को-रष्षै।

गाथा ॥ भारथ्थं प्रति राजं। सज्जे सेनाब वीर वीरयं ॥
धीरं धीर सधीरं। अधीरं (१)सब्ब सेनायं ॥ छं० ॥ ३३८ ॥

दूहा ॥ देषि बाल पारस फिरिय। मेर भान प्रति मान ॥
ज्यों शशि पछ पारस सुभति। शंकर सोभत थान ॥ छं० ॥ ३३९ ॥

मठ को देख कर शशिव्रता के मन में काम उत्पन्न हुआ और उसने मनही मन शिव को प्रणाम किया।

शंकर रस आचार किय। मद्द दिष्षिय प्रति जोइ ॥
मन लग्गिय बंधत सु पय। मन कंद्रप रस भोइ ॥ छं० ॥ ३४० ॥

तीस डोलियों के बीच में शशिव्रता का चौंडोल था जिसको ५०० दासी घेरे हुई थीं। ५००० सवार और ५०००० पैदल सिपाही साथ में थे।

कवित्त ॥ (२)दहति तीन चौंडोल। मध्य चौंडोल बाल भय ॥
भमर टोल झंकार। दासि विंटिय सु पंच सय ॥
सित्त पंच असवार। पंति मंडिय चावद्दिसि ॥
अड लष्ष पैदल्ल। सथ्थ आयो सुअंग कसि ॥
मंगल विवेक विधि उच्चरे। बंधी बंदन मार करि ॥
उत्तरी बाल देवल सुढिग। लग्गि पाइ परदच्छि फिरि॥ छं० ॥ ३४१ ॥

शशिव्रता ने चौंडोल से उतर कर पृथ्वीराज के कुशल की प्रार्थना की।

दूहा ॥ उतरि बाल चौंडोल तें। प्रीति हेत प्रथिराज ॥
जिन देवत्त जु संपज्जौ। सो मंडन प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

बाजों का शब्द सुनकर सामंतों का चित्त पलट जाना।

मंडन रन छंडन कलह। दल देवत्त सु जुद्ध ॥
बर वज्जं बाजिच सुनि। भौ सामंत विरुद्ध ॥ छं० ॥ ३४३ ॥

(१) मो.-सर्व, सरब। (२) ए. कृ. को.-दसत।

विरुध जुद्ध बंधन सुदल। स्वामि भ्रंम्म चित पान॥
दुतिय भ्रंम जानै नही। धनि सामंत बषान॥ छं०॥ ३४४॥
गाथा॥ बद्ध दलं समूरं। लष्षं सेनाय अद्दतं बलयं॥
ते जग्गे रस बीरं। जानिज्जै जोग जोगायं॥ छं०॥ ३४५॥

सेना में बीर रस का जागृत होना।

छंद भुजंगी॥ जग्यौ बीर बीरं सु डौंरू बजावै।
महा चित्त चित्तं सुमंतं निपावै॥
जग्यौ बीर बीराधि बिराधि रूपं।
मनो ईश शीशं नचै बीर [1]रूपं॥ छं०॥ ३४६॥
दूहा॥ भयौ बीर बीरह तिगुन। नच्यौ रुद्र बहु भेद॥
सो दिष्यौ दिष्यौ [2]नहै। सो देषन गुन छेद॥ छं०॥ ३४७॥
नह तारकि सु जुद्ध बर। नह देवा सुर मान॥
सो दिष्यौ कमधज्ज सौ। चाहुआन बलवान॥ छं०॥ ३४८॥
चाहुआन कमधज्ज बर। बरै षटक सुबद्द॥
देवग्गिरि [3]उग्गाहिये। करि भारथ्थ न सद्द॥ छं०॥ ३४९॥

देवालय के पास सब लोगों का चित्रलिखे से खड़े रह जाना।

छंद भुजंगी॥ सुसद्दे विसद्दे विसद्दे निसानं।
[4]रह देव थांनं [5]बटे देव थानं॥
रहे सब्ब योंही टगी टग्गा लग्गे।
मनो चित्रलिष्षि विचित्तं ठग्गे॥ छं०॥ ३५०॥
गाथा॥ जो दुज्जै मन चरियं। हरियं एक कग्गयौ सबदं॥
सब सेना कमधज्जं। विंटे वा बाल सर सायं॥ छं०॥ ३५१॥

सखियों का जैचंद के भाई को शशिवृता का बर कहना जो उसे बिष सा लगा।

(१) ए. कृ. को.-सूपं। (२) मो.-नहीं।
(३) मो.-सु उगाहिए। (४) मो.-रह (५) कृ. को.-वद्दे, ए.-वद्दे

बर जैचंद सुबंधं। प्रोहित पंग रक्खियं ¹आइवं ॥
सहचर चारु सुपढ़ियं। बालाइलं बालवं मनयं ॥ छं० ॥ ३५२ ॥

अपनी सेना सहित वह भी शिवपूजन के लिये वहाँ आया।

दूहा ॥ चढ्यौ पुंज नव साज बर। भरु भर लिन्ने सत्थ ॥
शंभु थान पूजन मिसह। चलि बर आयौ तत्थ ॥ छं० ॥ ३५३ ॥

तब तक पृथ्वीराज के भी ७००० सैनिक हथियारबंद कपट भेष धारण किए हुए भीड़ में धँस पड़े।

तब लगि दल चहुआन के। ग्रह गुपंति कर आइ ॥
रुक्कि सकै नन मध्थ लिय। बोलै संमुह धाइ ॥ छं० ॥ ३५४ ॥

कवित्त ॥ सहस सत्त कप्परिय। भेष कीनौ तिन बारं ॥
गोप तेग गहि गुपत। कपट कावरि सब भारं ॥
किहुन फरस किहुं छुरी। चक्र किन हाथन माही ॥
किन त्रिसूल किन डंड। सिंगि सब सथ्थ समाही ॥
सा अंग सिद्ध चहुआन लै। दूतन दूत बताइ हरि ॥
सा अंग बाल उतकंठ करि। पै लग्गी परदच्छि फिरि ॥ छं० ॥ ३५५ ॥

शशिव्रता ने चौंडोल से उतर कर शिव की परिक्रमा की और पृथ्वीराज से मिलन होने की प्रार्थना की।

अरिल्ल ॥ फिरि परदच्छि बाल अपु लग्गी।
सुमन काम कामना सुभग्गी ॥
मन मन बंधि ²कियौ इथ लेवं।
सुमन मंच प्रारंभ सुदेवं ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

दोहा ॥ उतरि बाल चौंडोल तें। प्रीत प्रात छुटि लाज ॥
शिवहिं पूजि अस्तुति करी। मिलन करै प्रथुराज ॥ छं० ॥ ३५७ ॥

शशिव्रता का शिव जी की स्तुति करना।

(१) ए. कृ. को.-आहि।
(२) कृ.-किए, कियउ, कियत्र।
* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

छंद हनूफाल ॥ प्रारभं मंच सु राम । तिहि जपौ अजपा नाम ॥
हरि हरी बरुन विरत्ति । कवि कही चंद किरत्ति ॥ छं० ॥ ३५८ ॥
स्रुत कह्यौ बेद पुरान । ज्यौं सुन्यौ श्रवन निधान ॥
तन स्याम अम्मर पीत । रघुबंस राजस रीत ॥ छं० ॥ ३५९ ॥
दृग कमल कमला पान । मधु मधुर मिष्टत बान ॥
जिन नाम [1]अनमह [2]कोट । कंद्रप्प लावन मोट ॥ छं० ॥ ३६० ॥
गंभीर साइर मान । आदिष्टवान प्रमान ॥
नह बाल वृद्ध किशोर । उर वरन स्याम न गौर ॥ छं० ॥ ३६१ ॥
अरि दहन उग्रस कोट । पीवै कि गोपिन [3]पोटि ॥
भ्रम भूलि ब्रह्म भुलाइ । सुरनाथ नाथ नचाइ ॥ छं० ॥ ३६२ ॥
निज पानि पद्म कटाच्छ । जिन भ्रमिय भूतल लाछ ॥
आदित्य कोटि प्रकास । सय सक्र कोटि विलास ॥ छं० ॥ ३६३ ॥
आराम कलप निधान । सुर तीन कोट प्रमान ॥
नव रूप रेष अनंग । परकार गर्व विभंग ॥ छं० ॥ ३६४ ॥
पर पाप लिपत इहै न । भुअ भुक्ति मुक्ति सु दैन ॥
काकुस्थ करुना कार । गुन निद्धि सुभ्भर भार ॥ छं० ॥ ३६५ ॥
रन रंग धीर सधीर । भव पार कढ्ढन तीर ॥
सुर सुरी नाथ नचाइ । भ्रम भूल ब्रह्म भ्रमाइ ॥ छं०॥ ३६६ ॥
चतुरान घट्ट सु घूमि । सुरपत्ति फनपति तूमि ॥
तारुन्य रूप प्रकास । सहभूत अंग निवास ॥ छं० ॥ ३६७ ॥
जय मंच जंपित वार । हर दीन तँह हंकार ॥ छं० ॥ ३६८ ॥
अरिल्ल ॥ बाले त्रित्त विषम्म प्रमानं । हय गय दल रुंध्यौ चहुआनं ॥
कुंकुम कलस सलेवर हेमं । देव दैव साधारन नेमं ॥ छं० ३६९ ॥
पंगी पय सतह परिमानं । संमुह दलन रुंध्या चहुआनं ॥
गहह गहह कित्ती अविसेशं । सुवर चित्त चिंत जु नरेशं ॥छं०॥३७०॥
गाथा ॥ वर छित्ती छिति धारी । सारं संग्राम नेहयो बलयं ॥
अग्गैई म्रग जूथं । ना भुक्कै [4]म्रग्गयं राजं ॥ छं० ॥ ३७१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जनमाहि । (२) ए. कृ. को.-जोट । (३) मो.-फोटि ।
(४) ए. कृ. को. मृग्गयो ।

उद्धरे सेन सनो। [1]संग्रामं वीर सुभट्टायं ॥
कालिंदीय सुरंगे। सो अंगो सुद्ध [2]भूतायं ॥ छं० ॥ ३७२ ॥

पृथ्वीराज सात हजार कपट वेषधारी कामरथी वीरों के साथ देवी के मन्दिर में धँस पड़े।

कवित्त ॥ सहस सत्त कप्परिय। भेष कीनो तिन वारं ॥
कपट कंध कावरिय। धसिय देवी दरबारं ॥
सर्व शस्त्र आरंभ। हस्त आरंभ सुरी सल ॥
धसिय भीर सम्भूह। जूह पाई समंडि कल ॥
दल प्रबल उदधि ज्यों मथन कज। भुज सुकिल्ल चहुआन किय ॥
शशिव्रत्त बाल रंभह समह। मिलिय गंठि बंधन सुहिय ॥ छं० ॥ ३७३ ॥

पृथ्वीराज और शशिवृता की चार आंखें होते ही लज्जा से शशिवृता की नज़र नीची हो गई और पृथ्वीराज ने हाथ पकड़ लिया।

दिट्ठ दिट्ठ लग्गी समूह। उतकंठ सु भग्गिय ॥
निष लज्जानिय नयन। मयन माया रस पग्गिय ॥
छल बल कल चहुआन। बाल कुअंरप्पन भंजे ॥
दोषचौय मिट्टयौ। उभय भारी मन रंजे ॥
चौहान हथ्थ बाला गहिय। सो ओपम कविचंद कहि ॥
मानों कि लता कंचन लहरि। मत्त बीर गजराज गहि ॥ छं० ॥ ३७४ ॥

पृथ्वीराज के हाथ पकड़ते ही शशिवृता को अपने गुरुजनों की खबर आगई और इससे आंख में आंसू आने लगे पर उन्हें अशुभ जानकर उसने छिपा लिया।

चंद्रायना ॥ गहत बाल पिय पानि। सु गुर जन संभरे ॥
लोचन [3]मोचि सुरंग। सु अंसु बहे परे ॥

(१) ए. कृ. को.-संग्रामे। (२) ए. कृ. को.-भूताय। (३) मो.-कामचि।

अपमंगल जिय जानि । सु नैंन मुष बही ॥
मनौं षंजन मुष मुत्ति । भरक्कत नंषही ॥ छं० ॥ ३७५ ॥

दुहु कपोल कल भेद । सुरंग ढरक्कही ।
सज्जन बाल बिसाल । सु उरज परक्कही ॥
सो ओपम कवि चंद । चित में बस रही ।
मनु कनक कसौटी मंडि । म्रग्ग मद [1]कसरही ॥ छं० ॥ ३७६ ॥

गाथा ॥ म्रग मद कसयति चित्ते । मित्तं पुनरोपि चित्तयं बसयं ॥
अजहूं कन्ह वियोगे । कालिंदी कन्हयो नीरं ॥ छं० ॥ ३७७ ॥

गहियं गह गैह कंठो । बचनं संजनाइ निठ्ठयो कहियं ॥
जानिज्जै सत [2]पच्चं । बंधे [3]सदाइ भवरयं गहियं ॥ छं० ॥ ३७८ ॥

तप तंदिल में रहियं । अंगं तपताइ उप्परं होइ ॥
जानिज्जै कसु लालं । घटनो अंग एकयौ सरिसौ ॥ छं० ॥ ३७९ ॥

अपमंगल अल बाले । नैनं नषाइ नष किं सलयौ ॥
जानिज्जै धन क्रपनं । सपनंतरो दत्तयं धनयं ॥ छं० ३८० ॥

जिस समय पृथ्वीराज ने शशिवृता का हाथ पकड़ा पृथ्वीराज के हृदय में रुद्र, शशिवृता के हृदय में करुणा और उन शशि के शत्रुओं के हृदय में वीभत्स रस का संचार हुआ।

कवित्त ॥ गहि शशिव्रत नरिंद । सिढी लंघत ढहि थोरी ॥
काम लता कलहरी । पेम मारुत झकझोरी ॥
बर लीनी करि साहि । चंपि उर पुट्ठि लगाई ॥
मन सुरंग सोइ [4]बत्त । कंत लगि कान सुनाई ॥
न्रप भयौ रुद्र करुना सुचिय । बीर भोग बर सुभर गति ।
सगपन सुहास बीभच्छरिन । भय भयान कामधज्ज दुति ॥छं०॥३८१॥

---

(१) मो.- फरसही । (२) ए. पत्तं । (३) ए. कृ. को. शब्दाय ।
(४) ए. कृ. को.-बात ।

वरिवृत्त से एक घरी ठहर कर पृथ्वीराज शशिवृता को साथ ले कर चल दिए ।

दोहा ॥ बीर गत्ति संधिय सुमति । इत्त अहत्त न जाइ ॥
　　घरी एक आहत्त रषि । सुबर बाल अनुराइ ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

शशिवृता के पिता ने कन्या के बैर से और कमधज्ज ने स्त्री के बैर से लड़ाई का विचार किया और सेना सजी ।

　　बाल सु बैर स बैर त्रिय । भान विरुद्ध न कौन ॥
　　सकल सेन साधन घरी । कलहंछत गति [1]चौन ॥ छं० ३८३ ॥
अरिल्ल ॥ आहत्त इत्त गुन निग्रह राज । देव जुद्ध देवत्तह साज ॥
　　है गै दल सज्जै तिहि बीर । हरौ बाल बहुआन सधीर ॥छं०॥३८४॥

शशिवृता के पिता का कमधज्ज के साथ मिलकर पांच घरी दिन रहे सकट व्यूह रचना ।

कवित्त ॥ घरिय पंच दिन रह्यौ । मंत जद्दव प्रारंभिय ॥
　　मिलि कमधज्ज नरिंद । सकट व्यूह आरंभिय ॥
　　अर्द्ध सथ्थं अप्पनौ । चरन मंडिय बाम दिसि ॥
　　व्यूह चक्र बिय पाइ । सथ्थ उभभौ नरिंद कसि ॥
　　उडवन भार अंगत सकट । सबर पुंज अप्पन सजिय ॥
　　रघुनाथ साथ बलियं बिहसि । हंकि सु लछिमन तहँ रजिय ॥
　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ३८५ ॥

कमधज्ज की सेना का वर्णन ।

छंद रसावला ॥ भगं भीर भाजी । कहं क्रूह वाजी ॥
　　सुने पुंज राजी । मनो मेघ गाजी ॥ छं० ॥ ३८६ ॥
　　सनाहं सु साजी । चढ़्यो बीर बाजी ॥
　　बगं मेल्ल ताजी । सबं सेन साजी ॥ छं० ॥ ३८७ ॥
　　करौं काम आजी । मिरं मोहि लाजी ॥

(१) ए.-चिन्ह ।

उठी मुच्छि एनं । सिरं लग्गि गेनं ॥ छं० ॥ ३८८ ॥
कमंद्धं निहारी । सयंनं विहारी ॥
कमानै निहारी । तरकस्स झारी ॥ छं० ३८९ ॥
अरी तुंग तारी । फिरै [1]गज्ज भारी ॥
सरोसं विहारी । मया मोह जारी ॥ छं० ॥ ३९० ॥
महंतं विडारी । ....॥
किए नैन रत्तं । रसं रोस पत्तं ॥ छं० ॥ ३९१ ॥
मुरं बीन बीरं । करौ आज तीरं ॥
परै मोहि गत्तं । हरै शशिव्रत्तं ॥ छं० ॥ ३९२ ॥
असी जा पहारं । चढ्यौ धार धारं ॥
लियौ छत भारी । पगं सीस डारी ॥ छं० ॥ ३९३ ॥
पर्यौ मद्ध धाई । असीजा पुलाई ॥
बजी कूह कूहं । अवाजं सजूहं ॥ छं० ॥ ३९४ ॥

घरियाल के बजते ही सब सेना जुट गई।

कवित्त ॥ सुनि वज्जी [2]घरियाल । लाग [3]नीसानन बाजिय ॥
इक दिन दोऊ सेंन । चंपि चावद्दिसि साजिय ॥
महन रंभ सा जग्य । मध्य मोहन शशिव्रत्तं ॥
असुर सु सुर मिलि मथहि । सूर बंसी रजपूतं ॥
आरंभ पच मंड्यौ कपट । कपट मुक्कि कढ्ढिय लपट ॥
दुहूं बीच जद्दों कुंअरि । उभय सिंह सारह झपट ॥ छं० ॥ ३९५ ॥

चहुआन और कमधज्ज शस्त्र लेकर मिले।

दूहा ॥ चाहुआन कमधज्ज बर । मिले लोह अल छोह ॥
भर भर टट्टर बज्जही । बंसह लग्गिय कोह ॥ छं० ॥ ३९६ ॥

शत्रुता का भाव उच्चारण करके दोनों ने अपने अपने हथियार कसे।

---

(१) मो.-गत्र। (२) ए. कृ. को.-घरि, घरी पंच।
(३) मो.-नीसानत।

गाथा ॥ उच्चरियं अरि भायं । सायक कस्सेव अप्प अप्पायं ॥
कढ्ढे लोह करारं । मार मारं जंपि जो हाईं ॥ छं० ॥ ३९७ ॥
दूहा ॥ अहत घाइ घट भंग कौ । करन मतह बर बीर ॥
मनहु काल कपि दल निरति । लेन [1]लंक मति धीर ॥ छं० ॥३९८॥
[2]धर धीरत्तन बीर बर । करिय न पंग प्रवाह ॥
चच्चर सौचव रंग गति । विधि बंधन रिन चाह ॥ छं० ॥ ३९९ ॥

दोनों सेनाओं के युद्ध का वर्णन ।

छंद भुजंगी ॥ मिले घाइ [3]न्विघाइ सा पुंज राजै । लगे अंग अंगं सुरंगति छाजै ॥
मिले हथ्थ बथ्थं सु सथ्थं निनारै । मनो वारुनी मत्त [4]मय मत्त भारै ॥
छं० ॥ ४०० ॥
किधों जुद्ध लग्गे कि मल्लं सवारे ॥ . ... ॥
उरै लोह पंती परै श्रोन रुद्रं । मनों रत्त धारा बरष्षै समुद्रं ॥
छं० ॥ ४०१ ॥
उड़ै छिंछि इछं सनाहं सुभिज्जै । मनो पुफ्फरत्तं नभं देव पुज्जै ॥
सुनै ईस सद्दं निसानं गहारं । बजै धार धारं घनं कै प्रहारं ॥
छं० ॥ ४०२ ॥
मनो पट्टनं मंझि कंसी डकारं । दुती [5]ओपमा चंद जंपै विचारं ॥
बज झल्लरी देवलं द्वार मारं । उड़ै सार किंची कि रचै प्रहारं ॥
छं० ॥ ४०३ ॥
मनो भिंगनं भद्दवं रैनि भारं । . . . . ॥
*सबै सस्त्र मंचं भरं जम वाहे । षिभ्भै षग्ग कढ्ढै बिहथ्थै समाहे ॥
छं० ॥ ४०४ ॥
करं कंस मत्तं पलं धारि छंडै । रुधं धार हल्लै प्रसादेति मंडै ॥
सिवा लीति सोभै [6]प्रनाली अनेकं । फिरै अच्छरी पंति बिय बार वेकं ॥
छं० ॥ ४०५ ॥

(१) ए. कृ. को.-फलक । (२) मो.-धन ।
(३) मा.-निध्धाम । (४) मैं.-मै ।
(५) मो.-उप्पमा । (६) ए. कृ. को. गूनाली ।
* ए. कृ. को.-सबै शास्त्र मंत्रं भमैरं समाह । बिजै खग्ग कढै बिबी हथ्थ बाह ॥

बहे नाग मुष्षी सु सोडे बिकंतं। फटै हस्ति कुंभं ठनंकंत घंटं ॥
बियं बांह षंचै गिरै गज्जराजं। मनो द्रोन षंचे कपी काज पाजं ॥
छं० ॥ ४०६ ॥

घिजै दंत दंती भरं कंध डारै ॥ मनो कोपियं भीम हथ्थी उच्छारै ॥
भरं लोहि गिद्धौ भ्रमै भंति छुट्टै। मनो देवलं इष्ट चलि डोरि तुट्टै ॥
छं ॥ ४०७ ॥

लगी लोह हथ्थी सिरं बंबिभ्रारै। तिनं गात तिंदू जरै अग्गि लारै ॥
परै षोपरी तुट्टि भेजी सुभावै। दधी [1]भाजनं जानि वायस्स आवै ॥
छं० ॥ ४०८ ॥

फटै बीर बीरं सुबीरं सुघट्टं। मनो कर्क करवत्त बिहरंत कट्टं ॥
नचैजा कमंधं करै हाक शीशं। परंमं सुभज्जै हसै देषि ईशं ॥
छं० ॥ ४०९ ॥

युद्ध के समय शूरबीरों की शोभा वर्णन।

गाथा ॥ मानिक्कं प्रति ताजं। हेमं हेमेल्ल विद्द साधरियं ॥
आनिज्जै निसि मद्धं। निरमल तारक सोभियं गैनं॥ छं० ॥ ४१० ॥

मुच्छी उच्चस बंकी। बाल चंद सुभियं [2]नभ्भं ॥
[3]गज गुर घन नीसानं। रीसानं षंग षल याई ॥ छं० ॥ ४११ ॥

अरिल्ल ॥ दहाक बज्जि नीसानति [4]नद्दं। सबै सेन संग्राम बिवद्दं ॥
इक अंग चावद्दिसि सेनं। जरै राज रत्ते [5]रस नेनं ॥ छं० ॥ ४१२ ॥

छंद रसावला ॥ लगी कर कोह। लगें घन लोह ॥
छकै अति छोह। महा तजि मोह ॥ छं० ॥ ४१३ ॥
भरा भर भार। तुटै तरवार ॥
मची घन मार। परंत प्रहार ॥ छं० ॥ ४१४ ॥
धुकंत धरन्नि। सरोस मरन्नि ॥
निफूटत हन्नि। बरै सु बरन्नि ॥ छं० ॥ ४१५ ॥

---

(१) मो.- भोजनं। (२) मो.-गेनं।
(३) मो. को.-गात, गत। (४) ए. कृ. को.-नदै, बिघदै। ५ मो.-रन।

करै घन घत्त । मद्दा हुत मित्त ॥
लरै वर लत्त । फटै रिन पत्त ॥ छं० ॥ ४१६ ॥
कटारिय एक । लगंत अनेक ॥
सु चंदन साष । संजोइय भाष ॥ छं० ॥ ४१७ ॥
धषै अति धीर । मनों बर बीर ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

कमधज्ज की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ [1]सबर बीर कमधज्ज । अरघ अप्पिय षग मग्गं ॥
दुष [1]अच्छित उच्छरहि । जानि परिमानन मग्गं ॥
सार धार पुंधियै । बीर मंगल उच्चारै ॥
सबै साथ बंदियहि । सकल पूजा संभारै ॥
बर मुक्ति बरन बरनी सुबर । इह अपुब्ब पिष्यौ नयन ॥
उप्पनी बीर सिंगार सँग । रुद्र बीर चौरों नयन ॥ छं० ॥ ४१९ ॥

दूहा ॥ सिर सोहत बर सेहरौ । टोप ओप अति अंग ॥
बगतर बागे केसरं । रुधि भीजत विषमंग ॥ छं० ॥ ४२० ॥
[2]सकट भग्ग लइ बग्ग बर । कमधज बीर विसेज ॥
[3]मिले बीर बीरत्त बर । दोऊ दैवत तज ॥ छं० ॥ ४२१ ॥

शशिवृता का चहुआन प्रति सच्चा अनुराग था।

देव तेज दैवत्त गुन । अहत मत्ति गुन कंति ॥
शशिव्रत्ता चहुआन सैं । सुहत मंत गुन पंति ॥ छं० ॥ ४२२ ॥
सांइ सूर सांई सु गति । दल दुंदुभि दैवत्त ॥
विधरं कार वीरह करइ । सुबर बीर मारुत्त ॥ छं० ॥ ४२३ ॥
कालकूट कीनौ विषम । कोलाहल्ल घन कीन ॥
अहत हत्त अंतह भषै । सो भारथ्थ प्रवीन ॥ छं० ॥ ४२४ ॥
भारथ दिष्षिय तत्त मति । अहत चिंत बल छीन ॥
जिन गुन प्रगटित पिंड किय । सो भारथ्थ प्रवीन ॥ छं० ॥ ४२५ ॥

(१) मो.-अच्छित । (२) मो.-संगट ।
(३) मो.-मिलें ।

कंठ कील कीली सुहत। हतत जुद्ध सम पाइ ॥
सुवर वीर भारथ्थ गुन। उठे बीर विरुझाइ ॥ छं० ॥ ४२६ ॥
घल संकुल अंकुल प्रक्रित। चतुर चित्त विरुझाइ ॥
मनु बड़वानल मध्य तें। समुद सत्त गुन भाइ ॥ छं० ॥ ४२७ ॥
वीर थान विभ्रम भइय। नयन रत्त सम सार ॥
मानहु बर धरि अब्ब में। नाकपत्ति गिरि भार ॥ छं० ॥ ४२८ ॥

पृथ्वीराज की श्री शेषजी से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ नाक पत्ति संभरिय। उभै काया अधिकारिय ॥
वह जित्यौ बलि राइ। यहन दुज्जन मम सारिय ॥
छिति पत्ति अति अभ्भ। दुहुन आभा पति बुद्धं ॥
वह गोरी सुरतान। इहति दानवति विरुद्धं ॥
षग षुल्लै दुहुन पुज्जै न को। दोऊ बाउ बर बीर रन ॥
लै चल्यौ हरिव शशिहत्त को। पहु पंजलि पुज्जै तरुन ॥ छं० ॥ ४२९ ॥
दूहा ॥ तरुन तेज तम हरन बर। बाल वहिक्रम उच्छि ॥
मानों रति आरुढ़ करि। बर बारधि मति लच्छि ॥ छं० ॥ ४३० ॥
लच्छि सु लच्छिह लीन हरि। इह लीनी संग्राम ॥
घटि बढ़ि मंचह समन बरि। दोऊ बीर बढ़ि [1]वाम ॥ छं० ॥ ४३१ ॥
गाथा ॥ चावद्दिसि न्रप [2]विंथौ। पुंजं सेनायं सेनयौ बीरं ॥
धर धरनी आधारं। सा धारं डुलियं शीशं ॥ छं० ॥ ४३२ ॥

उस युद्ध में वीरों को आनन्द होता और कायर डरते थे।

[3]मुरिल्ल ॥ बढ़ि सत्त दुहाइय वीर रसं। दुहु सेन सुधावत अंग कसं ॥
मुष वीर विगस्सिय रेन ससी। भय कायर चंद प्रभात दिसी ॥
छं० ॥ ४३३ ॥
छंद विराज ॥ लगे लोह सारं। दोऊ बीर भारं ॥
महा तेज तारं। बरं कंज भारं ॥ छं० ॥ ४३४ ॥

(१) मो.-काम। (२) मो.-विटं।
(३) मो.-प्रति में यह छन्द त्रोटक नाम से लिखा है।

घरी यार सारं । परें कै प्रहारं ॥
भए पार पारं । मनों प्रात तारं ॥ छं० ॥ ४३५ ॥
करै मार मारं । बबक्कै बकारं ॥
चलैं रुद्धि धारं । पलं मच्चि गारं ॥ छं० ॥ ४३६ ॥
चर मंम चारं । दिषै प्रेत द्वारं ॥
धपै धार धारं । टरैं जे न टारं ॥ छं० ॥ ४३७ ॥
डकै भूत डारं । ढरैं सीस ढारं ॥
उड़ी बीर रैंनी । भ्रमै भैंर सेंनी ॥ छं० ॥ ४३८ ॥
अवध्यं न गोपं । इसे बीर कोपं ॥ छं० ॥ ४३९ ॥

दूहा ॥ कोपि बीर कायर धरकि । परषि पयंपन जोग ॥
यह गति छंडै बीर बर । परै परत्तर भोग ॥ छं० ॥ ४४० ॥

कवित्त ॥ बांन पथ्थ बलभीम । सत्त [1]सिवरी अधिकारी ॥
[2]गंभीरां गुर सिंघ । नेह करनह क्रत [3]धारी ॥
बल सुजग्य सक्रह बिसाल । पुरषारथ सारी ॥
सुर सिधि बुद्धि गनेश । क्रम्मन घुन घू अधिकारी ॥
सामंत सूर सूरह विरुध । बीर बीर पारस फिरिय ॥
बर सिंघ सिंघ रष्षै मरन । बर कोबिद कोबिद डरिय ॥ छं० ॥ ४४१ ॥

कवि का पृथ्वीराज को कलि में वीरों का सिरताज कहना ।

दुहा ॥ सु रिधि बुद्धि बुध्यां तरन । मिरन सूर दुति राज ॥
चाहुआन प्रथिराज कल । मंडि बीर सिर ताज ॥ छं० ॥ ४४२ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का मुकाबला होना ।

चाहुआन कमधज्ज बर । मिले लोह छुटि छोह ॥
धार मुरै मुष ना मुरै । मरट [4]मुच्छ क्रत जोह ॥ छं० ॥ ४४३ ॥
चाहुआन कमधज्ज दुति । रति नाइक प्रति धीर ॥
सारंगी सारंग बल । इह लग्गी अति बीर ॥ छं० ॥ ४४४ ॥

---

(१) मो.-सिवर । (२) मो.-गंभीरं ।
(३) मो.-भारी । (४) मो.-मूल ।

धन्य है उन शूरवीरों को जो स्वामिकार्य्य के लिये प्राणों का मोह नहीं करते।

अरिल्ल ॥ द्रव्य [1]वस्य नन छोड़ प्रमानं। अप्पन [2]प्रान स्वांम हत दानं॥
जिन जग जित्ति कित्ति बसि कीनी। मरन सूर सस्त्रह बर लीनी॥
छं० ॥ ४४५ ॥

दूहा ॥ कहां पंच पंचौ बसत। कहां प्रकृति प्रति अंग॥
कहां हंस हंसह बसै। कौन करै रन जंग॥ छं० ॥ ४४६ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का युद्ध।

इह कहि कढ्ढिय सार कर। षोलि षग्ग दोउ पानि॥
मानहु मत्त अनंग है। भूत छुट्टे [3]जम जांनि॥ छं० ॥ ४४७ ॥

घोर युद्ध वर्णन।

छंद भुजंगी॥ मिले हथ्थ वथ्थं न सथ्थं स धारे। मनौ बारुनी मत्त गज दंत न्यारे॥
उड़ै लोह पंती परै स्रोन [4]रुंदं। मनौ रुद्धि धारा बरष्षंत बुंदं॥
छं० ॥ ४४८ ॥

घुमे घाय घायं अघायं अघायं। भ्रुमै झार झारं झनंकै झकायं॥
करैं जोगनी जोग काली कराली। फिर पैट धाये महा विक्राली॥
छं० ॥ ४४९ ॥

परै सूर वाहै बहथ्थी क्रपानं। कढ़ी तांत बाढ़ी मलं चारि जानं॥
धमां धम्म मत्ती महो माहि [5]धानों। पिंजारे सतं रुव पीजंत मानों॥
छं० ॥ ४५० ॥

महादेव मालानि में गूथि मथ्थं। [6]कहैं वाह वाहं वहै सुर हथ्थं॥
छं० ॥ ४५१ ॥

मुरिल्ल ॥ [7]हाहरे रूप कायर प्रकार। [8]छंडीति लज्ज अरु बीर मार॥
अभ्यसै सूर जिन सूर रूप। दैवत्त भूप दिष्षै अनूप॥छं०॥ ४५२॥

---

(१) मो.-बसें। (२) ए. कृ. को.-काम। (३) मो.-यम।
(४) ए. कृ. को.-रुदं। (५) मो.-घानों। (६) मो.-वहै।
(७) मो.-हारे। (८) मो.-छंडी लज्ज भये बासि मार।

युद्ध की यज्ञ से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ विषम जग्य आरंभ। वेद प्रारंभ शस्त्र बल ॥
है गै नर होमियै। शीश आहुत्ति [1]स्वस्ति कल ॥
क्रोध कुंड वित्तरिय। कित्ति मंडप करि मंडिय ॥
गिद्धि सिद्धि वेताल। पेषि पल साकृत छंडिय ॥
तुंबर सु नाग किंनर सु चर। अच्छरि अच्छ सु गावहीं ॥
मिलि दान अस्स अप्पन जुगति। भुगति मुगति तत पावहीं ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

दूहा ॥ करि सुचार आचार सब। समद कित्ति फल दीन ॥
गुरुजन मिसि करुना करिय। कायर हाहर कीन ॥ छं० ॥ ४५४ ॥

कमधज्ज का सर्पव्यूह रचना।

कवित्त ॥ मिलि जद्दव कमधज्ज। अहिर व्यूहं आरंभिय ॥
पुच्छ सु लषि.लनि बंध। पांडु गुज्जर पारंभिय ॥
सुधर मंडि वर बीर। पंग बंधह रचि गढ्ढै ॥
फन अप्पन भय पुंज। जीभ कूरंभ सु ठढ्ढै ॥
हथनारि जोरि जंबूर घन। दसन हट्ठ हग मुष्ष करि ॥
मनि भयौ मेर मारूफ़ षां। [2]चच्चर सीचौ रंग परि ॥ छं० ॥ ४५५ ॥

गाथा ॥ अप्प' व्यूह अरंभो। प्रारंभो बीर भद्रायं ॥
जानिज्जै चव रंगं। चतुरंग इक घंटायं ॥ छं० ॥ ४५६ ॥

दूहा ॥ घटिय घट्ट अघटन घटिय। पढ़िय सार दुअ सैन ॥
पंगराइ बंध्यौ सु हत। किये रत्त बर नैन ॥ छं० ॥ ४५७ ॥
रत्ते नैन विषम्म गति। दावानल प्रथिराज ॥
बीर चंद घन उन्नयौ। सार सु बुट्ठन आज ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

पृथ्वीराज का मयूरव्यूह रचना।

कवित्त ॥ मोर व्यूह प्रथिराज। सथ्थ [3]सज अप्पन कीनौ ॥
चुंच केश मंडली। कन्ह चहुआन सु दीनौ ॥

(१) ए.-सुस्ति। (२) को.-चचर। (३) मो.-जल।

पांइ पिंड विधि पंष । गरुत्र गहिलोत बीर सजि ॥
पुच्छ राज रघुबंश । चरन पुंडीर चंद रजि ॥
दुह लोह कढ्ढि परियार तें । सारधार में अग्गि भर ॥
पल पंच तरंगनि रुक्कि जल । आंनि कमोदनि नंचि सर ॥छं०॥४५८॥
दिषि बर [1]लष्षिन फवज । चंपि चतुरंग रिँगावहु ॥
अरि सयन्न संभार । धोर भंजै मग पावहु ॥
बहु गरिष्ट तारिष्ट । रुक्कि अप्पन पर धावहिं ॥
सु बर सिंघ आलसैं । स्याल छूधौ करि ध्यावहिं ॥
उट्ठै न बीर बीरह उठत । सुबर [2]मंत फुनि फुनि करै ॥
बरसै न अंब सर मेघ कौ । जो न [3]समर सरवर भरै ॥ छं० ॥ ४६० ॥
गाथा ॥ समर सु मथ्यौ सेनं । तारं झंकार बीर भद्रायं ॥
केवल गति काल रूपं । भूयं बीर जुद्दयो समरं ॥ छं० ॥ ४६१ ॥

वीररस में श्रृंगाररस का वर्णन ।

दूहा ॥ समर जुद्द मच्चिय समर । हालाहल बर [4]मंत्ति ॥
कोलाहल पंषिन कियौ । कांम रूप बर जित्त ॥ छं० ॥ ४६२ ॥
छंद नाराच ॥ बरंत काम रूपयं । असी वहै अनूपयं ॥
लगै सु गौरि पासयं । परक्रिया कटाछयं ॥ छं० ॥ ४६३ ॥
सरंत तीर सोहयं । उरंद मुट्ठि छोहयं ॥
हला हलं हलं मलं । भिलंत अंग संभिलं ॥ छं० ॥ ४६४ ॥
[5]कडा कडी कडक्कयं । दडा दडी दडक्कयं ॥
पडै सिरं पडक्कयं । डकंत बीर डक्कयं ॥ छं० ॥ ४६५ ॥
घिसै न ज्यों घडक्कयं । तुटंत तजि डक्कयं ॥
हडा हडी हडक्कयं । .... ॥ छं० ॥ ४६६ ॥
निरष्षि पत्ति नाकयं । परंत हीय धाकयं ॥
बरंत अच्छरी बरं । भषंत गिद्धनी भरं ॥ छं० ॥ ४६७ ॥
लगंत लोह [6]सो लरं । अरिंम मत्त संमरं ॥ छं० ॥ ४६८ ॥

(१) ए. कृ. को.-लच्छन । (२) ए कृ. को.-मंत्र । (३) मो.-समूर ।
(४) को.-सत्ति । (५) ए. कृ. को-कटा कटी । (६) मो.-सोलरं ।

अरिल्ल ॥ आरिष्टन सम दिष्टम दिष्षिय । बीर चंद गह गह मुष भष्षिय ॥
यद भरि होंव न परम सुबंधं । बर भारथ बीर रस संधं ॥
छं० ॥ ४६९ ॥

गाथा ॥ उट्ठहि एक प्रमानो । धावंताय पंचयो सयनं ॥
[1]वाहंतं बर लोहं । साइनं देषयौ बीरं ॥ छं० ॥ ४७० ॥
रुधिरं पच तसतयौ । हो मझ्झ [2]काय इकयौ सिरयं ॥
अति गज्जि दुह मकारं । अगिमत होइ बीर सम सेनं ॥ छं ॥ ४७१ ॥
अगनित गने न जानं । ई कोइ कोपि रुक्कयो सहसं ॥
बर बीरार सुभट्टं । दावानलं पंगयौ बीरं ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

पृथ्वीराज की आज्ञा पाकर कन्ह का क्रुद्ध होकर झपटना।

दूहा ॥ तव चहुआन सु कन्ह वर । ठड्डौ करि गुरराज ॥
हुकम नृपति छुट्टौति इम । [3]जनु तीतर पर बाज ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

कवित्त ॥ मुष छुट्टत नृप बैन । नैन दिट्ठौ धावंतौ ॥
क्रम बंध बल मोह । छोह बंध्यौ सु बरत्तौ ॥
सु बर सेन चहुआन.। सिंग जद्दूनं [4]नवाई ॥
जनु मंदिर बिय बार । ढंकि इक बार बनाई ॥
तकतीर करन दोउ अंस बर । किति मग्ग करतव्य कर ॥
अथवंत रविह आदित्य दिन । अगनि सार बुट्टिय कहर ॥
छं० ॥ ४७४ ॥

गाथा ॥ मुष छुट्टा नृप बैनं । कै दिट्ठाय धावता नैनं ॥
बज्जी बाहु सुबारं । धारं ढारि [5]मत्तयौ धरयं ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

कन्ह का युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ मत्त ढरहि संमुष भिरहि । स्वामि सनाह सहूर ॥
आज मुष्य चहुआन कन्ह । सिंधु सत्त कौ नूर ॥ छं० ॥ ४७६ ॥

गाथा ॥ सद्दं सिद्धत नूरं । कारूरं करनयो नथ्थी ॥
एको अंग सुरंगो । दिब्बे वा बीरयं बीरं॥ छं० ॥ ४७७ ॥

---

(१) को.-व्याहंतं ।　(२) मो.-काम ।　(३) मो. मनु
(४) मो.-नमाई ।　(५) ए. कृ. को-मत्तवो ।

धनयं लहि नरिंदं। तिहि संचिय सायरो नथ्यौ॥
कलहंतं बल विषमं। अुषमं देहीय लज्जती सूरं॥ छं०॥ ४७८॥
कहूं लोह दुहथ्थं। सत्तं घरियाय बज्जयौ अंगं॥
चावद्दिसि चतुरंगी। अनुरंगी सेन सब्बाइं॥ छं०॥ ४७९॥
दूहा॥ अनुरंगी सेना [1]सकल। सह सुरह विरुद्ध॥
अबुध बुद्ध भारथ्थ में। दान मान सु [2]प्रवद्ध॥ छं०॥ ४८०॥
गाथा॥ वर अथवंत सु दीहं। भुम्भं विन जोतयं कलयं॥
घरिघट अघट नरिंदं। सा बुद्धं बीर भद्रायं॥ छं०॥ ४८१॥

पृथ्वीराज के बीर सामंतों का प्रशंसा।

मुरिल्ल॥ बीरभद्र अरु रुद्र जलप्पिय। कहौ मत्त संकरषन थप्पिय॥
तुम सकल कलित भारथ फिरि दिष्यौ। इन समान कोइ बीर विसष्यौ॥
छं०॥ ४८२॥
गाथा॥ को [3]दिठौ सम बीरं। सामंतं स्वामयौ [4]क्रमयं॥
इक्कं करन प्रमानं। अंगद कामेय रावनो [5]भिरयं॥ छं०॥ ४८३॥
चौपाई॥ राम कांम अंगद अधिकारी। स्वांमि कांम सामंतव धारी॥
जिन हय गय तन तिन वर जान्यौ। सुमत भ्रंम स्वामित्त पिछान्यौ॥
छं०॥ ४८४॥
[6]सुपति भ्रम्म जिन तंत प्रमानिय। मुकति सुर्ग केवल सुनि बानिय॥
घट्टिय घट्ट विघट्ट सुषंध्यौ। सुपथ साथि आपथं सु मंध्यौ॥छं०॥४८५॥
जिन छंडिय मंडिय क्रत धारिय। सार कट्टि हय तज्जि सु धारिय॥
[7]परनि प्रहार सार तजि सारं। जड़ता तज्ज लगत तम तारं॥ छं०॥४८६॥
छंद विराज॥ लगे बीर सारं। किए मत्त पारं॥
बहथ्थंत धारं। अनुज्जा प्रहारं॥ छं०॥ ४८७॥
तुटै धार धारं। मनों स्रुत्त तारं॥
अवित्तं विहारं। कलिंदी कहारं॥ छं०॥ ४८८॥

(१) ए. कृ. को.-सुबल। (२) ए. कृ. को.-प्रबुद्ध।
(३) मो.-नट्ठौ। (४) को मो.-कृतयं।
(५) मो.-भरयं। (६) ए.-सुमति। (७) मो.-पराति।

मनौं नभ्भ धारं । सु भारथ्थ सारं ॥ छं० ॥ ४८९ ॥
चौपाई ॥ सार धार भारथ प्रहारं । मानहु दुत्तिय अंग बिहारं ॥
धार तिथ्थ कै तिथ्थह राजं । जनक काम कामनि सिरताजं ॥
छं० ॥ ४९० ॥

कवित्त ॥ बर अथवंत सु दीह । झुझ्झि [1]लष्षिन जद्दव भर ॥
लोह धार लगि विषम । ईस लीनौं जु शीश कर ॥
रह्यौ न तन दझ्झन सु मंस । पल चरन न पाइय ॥
अश्व शस्त्र पष्षर [2]पलान । ढुढंत नन पाइय ॥
बरि लियन बीर अंतर मिल्यौ । [3]अच्छर [4]सुच्छर ना लियौ ॥
मिलि गय सु भान सुत भान कौ। दिव दुंदुभि बज्जत वियौ ॥ छं० ॥ ४९१ ॥
अगनि झार धर धार । सार वज्जी प्रहार असि ॥
कंक दिष्ट सिंघा सुरारि । भग्गौ नल गंभरि ॥
शस्त्र घात आघात । बथ्थ अन बथ्थ सु लग्गा ॥
सुरत अंतरित सेत । मिले दूती मन भग्गा ॥
सिरदार सैन नृप है करिय । दोउ घाव घन घुम्मि घट ॥
उबर्‌यौ कन्ह प्रथिराज क्रम । झुझ्झि पुंज बंध्यौ सुभट ॥ छं० ॥ ४९२ ॥

इस युद्ध को देख कर देवताओं का प्रसन्न हो कर पुष्पवृष्टि करना ।

छंद भुजंगी ॥ बजी दुंदुभी आज आयास थानं । करे लोह लोहं [5]सुलोकंति गानं ॥
कहै चंद सूरं महावीर पाई । परै पुप्फ बर विष्ट बज्जै बिघाई ॥ छं० ॥ ४९३ ॥

सांझ हो गई परंतु कमधज्ज की अनी न मुड़ी ।

कवित्त ॥ जीति लियौ जै पत्ति । चारु चतुरंग म मोरी ॥
बर बंध्यौ नृप पुंज । ढाल जद्दव न ढँढोरी ॥
बर [6]लच्छिन परि षेत । कन्ह चहुआन उपारिय ॥

* मो.-प्रति में अतिरिक्त । (१) मो. लन ।
(२) मो.-प्रमान । (३) मो.-अच्छर । (४) मो.-सुच्छर ।
(५) ए. कृ. को.-लोकेमु । (६) मो०—लच्छिन ।

चेत ढूंढ़ि प्रथिराज। सुभ्रत झोरी करि डारिय ॥
इतनें सु भान अस्तमित भये। दोऊ सेन बर उत्तरिय ॥
मुकी न बग्ग कमधज्ज की। रोस राह विसरन भरिय ॥छं०॥४९४॥
बजी संझ घरियार। सार बज्यौ तन झंझर ॥
जनु कि बज्जि झननंक। ठनकि घन टोप स [1]उब्बर ॥
अनल अग्गि सम जग्गि। जेन धज बंधि सलग्गा ॥
मनु द्रुप्पन में बैठि। नेत बडवा नल जग्गा ॥
घन स्यांम पीत रत रंग बर। विविध बीर गुन बर भरिय ॥
हर हार गंठि रुठि उमां। किम उतारि पच्छो धरिय ॥ छं० ॥ ४९५॥

कमधज्ज का अपने वीरों को उत्साहित करना।

छंद भुजंगी ॥ भिर्यौ राम रन बीर कमधज्ज बीरं।
करो आज सर्वं [2]सुन्निब्बीर धीरं ॥
गुहै माल ईशं नचैं जोग बीरं।
भिरं तंत प्रेतं धरं धीर हीरं ॥ छं० ॥ ४९६ ॥

सब रन भूमि में तीन हाथ ऊँची लाशें पड़ गईं।

दूहा ॥ परि पथ्थर सथ्थर सुरन। गनक गनें नहिं जाइ ॥
हथ्थ तीन लुथ्थह चढ़ी। मुरबी [3]मझ न माइ ॥ छं० ॥ ४९७ ॥
संझ सपत्त न्रपति बर। नव नव रस अरपंत ॥
बर प्रथिराज नरिंद दुति। सो ओपम कविकंत ॥ छं० ॥ ४९८ ॥

तीन घड़ी रात्रि होजाने पर युद्ध बंद हुआ।

कवित्त ॥ घरिय तीन निसि गइय। बार बर सुक्र सु आगम ॥
पंति परी अरिजूह। बीर विंझौ अरि जागम ॥
कोट पलन सोभै। विसाल सामंत सूर थंभ ॥
जस देवल उप्पनौ। बीय गय गिरी सेत रंभ ॥
प्रथिराज देव दानव दलन। लच्छि रूप जद्दव कुंअरि ॥
नव रस विलास पूजा करहि। बर अच्छरि भइ पहुप सरि ॥छं०॥४९९॥

(१) ए.—उब्बर। (२) ए०—सन्निवीरे। (३) ए०-मद्ध।

पृथ्वीराज की सेना की समुद्र से उपमा वर्णन।

स्रम सु अंग बिंटयौ। सुधा [1]बिंटयौ जु बाल रस ॥
अमिय चंद बिंटयौ। समुद बिंटयौ बडवा तस ॥
अरि कैं दिल विष उरग। मंच ससि वृत्त प्रेम झर ॥
लहि न सुद्धि मव बसन। आइ लग्गेति रोस भर ॥
बजि बीर बार दुज दल सघन। लाग निसानन नृत्य पर ॥
प्रथिराज सेन बंधौ स अति। सु कविचंद उच्चारि बर॥ छं०॥५००॥

युद्ध में नव रस वर्णन करना॥

भान कुंअरि शशिव्रत। नैन शृंगार सुराजै ॥
बीर रूप सामंत। रुद्र प्रथिराज बिराजै ॥
चंद अदभ्भुत जानि। भए कातर करुना मय ॥
बीभछ अरिन समूह। सात उप्पनौ मरन भय ॥
उप्पज्यौ हास अपछरि अमर। भौ भयान भावौ बिगति ॥
कूरंभराव प्रथिराज [2]बरं। लरन लोह चिंते तरनि ॥ छं० ॥ ५०१ ॥

राम रघुवंश का कहना कि जिस बीर ने युद्धरूपी काशी क्षेत्र में शरीर त्याग करके इस लोक में यश और अंत में ब्रह्म पद न पाया उसका जीवन वृथा है।

कहै राम रघुवंस। सुनौ सामंत सूर तुम ॥
अमर नरन बंछहि सु। जुद्ध किन कथ्थ नरिंद भ्रम ॥
धार तिथ्थ बर आदि। तिथ्थ काशी सम भज्जै ॥
असि वरुना तिन मध्य। लोह तज सम गज्जै ॥
सिव सिद्ध जोग सज्जै सकल। अकल अपूरब बत्त इह ॥
लभ्यौ न बीर जिन ब्रह्म पद। छिनक मद्धि गति लभ्भि इह॥छं०॥५०२॥

गुरुराम का पृथ्वीराज को विष्णु पंजर कवच देना।

पढ़ि सुमंत्र गुर राम। विष्णु पंजर सनाह दिय ॥

(१) मो.-बींध्यौ। (२) ए. कृ. को.-छर।

केस कंस मरदन्न । नंद नंदन खिलाट किय ॥
भोह भुअह्वर धरि समुह । नैंन निज्जिय नाराइन ॥
बदन दिह्व औक्षप्प । हृदय थप्पौ मथुराइन ॥
कटि जंघ गुविंद रक्षा करन । चरन थप्पि असरन सरन ॥
गुर इष्ट समरि प्रथिराज कौ । इष्ट सुदिह्व रक्षा करन ॥ छं० ॥ ५०३ ॥

कमधज्ज और जद्दव की मृत फौज की शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ परि पारस अह्व सयन । मिलि कमधज्ज प्रमान ॥
षट बिय ग्रह मनु नछित लै । [1]पंति सु मंडिय भान ॥ छं० ॥ ५०४ ॥

किन किन बीरों का मुकाबला हुआ ।

छंद चोटक ॥ परि पारस पंग नरिंद घनं । मनो भान सुमेर कि पंति बनं ॥
घन सद्द सुरंग निसान धुनं । मनौं बज्जत दुंदुभि[2] देव तनं ॥ ५०५ ॥
चव दून निसान सु कन्ह धनी । जु कियौ सिरदार सु पंग अनी ॥
दिसि पच्छिम बालुकराय अर्‌यौ । तिनके मुख कन्ह पजून लर्‌यौ ॥
छं० ॥ ५०६ ॥
हुअ ईस दिसान दिसा नृप माम । तिन कें मुष भौ रन भाटिय भांन ॥
दिसि पूरब भो षुरसान षँधार । तिन कै मुष मंडि सलष्ष पवार ॥
छं० ॥ ५०७ ॥
अगिनेव दिसा वन सिंघ अचाइ । तिन के मुष मंडिय निढ्ढुर राय ॥
दिसा जम लच्छिन बंधिय फौज । तिन के मुष चामंड दाहर कौज ॥
छं० ॥ ५०८ ॥
सुनै रति छच उब्यौ कर बीर । तिन कें मुष मंडिय चंद पुंडीर ॥
जु बायु दिशा दिशि इंद्रयपाल । [3]तिनें मुष भौम भिरं रिनमाल ॥
छं० ॥ ५०९ ॥
[3]सु उत्तर दै प्रभु पंग कुंआर । तिनें रघुवंस बजावत सार ॥
बढै गुर जंबुर [4]हथ्यह नार । मनौं गज भद्दव कौ उनिहार ॥
छं० ॥ ५१० ॥

(१) ए.०--पति ।
(२, ३) पंक्ति मो.-प्रति में नहीं है । (४) ए. कृ.०को.-हथं हय ।

छुट्टे गुरजं बवियानन सें । पह तें पलटे मनों तारक सें ॥
पति बंधि सनाह सयान करैं । अरि के मुष सामँत सूर लरैं ॥
छं० ॥ ५११ ॥

रात्रि व्यतीत हुई और प्रातःकाल हुआ ।

भयें प्रात जगंतय सूर घरे । तिन कें लरतें ब्रह्मण्ड डरे ॥
गय सञ्च निशा पहु फट्टि ननं । दोउ संगम अंग बिहंग घनं ॥
छं० ॥ ५१२ ॥

प्रिय प्रातक सीत चलै मधुरं । निशि षोय उसास निसास डरं ॥
बर तोरत तारक भूषन सो । मुष मूंदि कमोदनि ना बिगसो ॥
छं० ॥ ५१३ ॥

पहु फट्टिय बीर प्रमांन नषै । रवि [1]रत्त सुतत्त वियोग लषै ॥
जु भई गति सिथ्थल ता सगरी । सर छिप्पन केलि कला निसरी ॥
छं० ॥ ५१४ ॥

[2]बजि दुंदुभि देव निसान धुअं । प्रगटे सत पत्त सुरंग हुअं ॥
बर रंग [3]जवा सन ओति फिरी । घन देहि असीस चकी चतुरी ॥
छं० ॥ ५१५ ॥

घन रोर चकोर कमोद भगे । जु गए दुरि चोर सु देव जगे ॥
जमुना हुलसी अमराज हंस्यौ । जु गयौ तिमरं भजि तेज सज्यौ ॥
छं० ॥ ५१६ ॥

बर इंद अनंदिय चंद कह्यौ । जु सज्यौ रथ उंच अरुन गह्यौ ॥
सु चल्यौ चक्र एकहु चक्र कह्यौ । सु गयौ कमलं कर को अकरयौ ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

बर उड्डग नीर पवन्न उछं । जु चले सब क्रमज अग्गि गछं ॥
जु भयौ धन ध्रंम मिटी बनिता । बल आप अआप न सो अपता ॥
छं० ॥ ५१८ ॥

गाथा ॥ गई सर्ब्बरी सु सबं । फट्टी पहुवं नट्ठयौ तिमिरं ॥
तम चूरन प्रति किरनं । तरुनं बिराइ तरुनयो रचयं ॥ छं० ॥ ५१९ ॥

---

(१) को.-वृत्त ।　　(२) को.-वट्टि ।　　(३) ए.-जवासनि ।

प्रातःकाल होते ही घोड़ों ने ठीं लगाई, शूरबीरों ने तयारी की और दोनों तरफ के फौजी निशान उठे।

कवित्त ॥ [1]सुफट किरनि पहु बीर। परिय आरन्नि निसा गय ॥
उभय षट्ट प्रगटीय। हक्क बोलंत हयनि हय ॥
तिमिर तेज भंजन। प्रमान कमधज्ज नरिंदह ॥
मांन तुंग चहुआन। जग्य जंपिय कवि चंदह ॥
नव ग्रेह नवम्मिय नव निसा। नव निसान दिशि मान धुरि ॥
सामंत सूर भुज उप्परै। रहसि राज प्रथिराज फिरि ॥ छं० ॥ ५२० ॥

शूरबीरों के पराक्रम से और सूर्य्य से उपमा वर्णन।

गाथा ॥ सुघटं किरनं बीरं। पारस मिसह सेन कमधज्जं ॥
उदयं अस्तमि भानो। मेर पच्छि दच्छिनो फिरयं ॥ छं० ॥ ५२१ ॥
दूहा ॥ दष्षिन पत्त सुमेर फिरि। यों पारस पहु पंग ॥
सार धार धारह मिले। सुबर बीर प्रति अंग॥ छं० ॥ ५२२ ॥
चौपाई ॥ सार धार प्राहार प्रकार। मनौं मत्त घन पंति विभार ॥
उठे बीर सत्तों विरझाइ। भान पयान न मत्त सुचाइ॥ छं०॥५२३॥

पृथ्वीराज का शुद्ध हो कर विष्णु पंजर कवच को धारण करना।

गाथा ॥ ग्रह सुद्धा प्रथिराजं। अष्ट ग्रहं बंकमो विषयं ॥
विष्णुं बीर सुधारं। पंजर भंजे राजयो अंगं ॥ छं० ॥ ५२४ ॥

उस पंजर में यह गुण था कि हजार शस्त्र प्रहार होने पर भी शस्त्र नहीं लगता था।

दूहा ॥ सा पंजर दिय राज बर। सस्त्र लगै नहिं चाइ ॥
कोटि अंग घावह घने। भुज प्रमान सो पाइ ॥ छं० ॥ ५२५ ॥

बैकुंठ बासी विष्णु भगवान पृथ्वीराज की रक्षा पर थे।

गाथा ॥ बैकुंठह बर वासी। सासी गहनाय गिरन सा धरियं ॥
सो रक्षा चहुआनं। अनरष्षा मंचयो धरयं ॥ छं० ॥ ५२६ ॥

(१) ए. कृ. को.-भट।

इधर से पृथ्वीराज उधर से कमधज्ज की सेना की तैयारी होना।

दूहा ॥ बज्जि राग चौहान भर । उत कमधज्ज नरिंद ॥
सार धार बज्जिय विषम । कहि ब्रंनन कविचंद ॥ छं० ॥ ५२७ ॥

आगे यादवराय की सेना तिस पीछे कमधज्ज की सेना, तिस के पीछे हाथियों की कतार देकर रूमी और अरबी, का सेना सज कर युद्ध के लिये चलना।

छंद चोटक ॥ सुर तौन फवज्ज सु बंध थपी ।
अग जद्दव राइ नरिंद रूपी ॥
तिन पच्छ सु वीर सुरंग अनी ।
बिच बंधिय हत्थिय पंति घनी ॥ छं० ॥ ५२८ ॥
बर हब्बसि किन्नर रूमि बिचै ।
झननंकत पाइक पंति नचै ॥
तिन सौर सुगंध बिछाइ घनं ।
बहु जुझ्झ कपट्टिय मंडि डनं ॥ छं० ॥ ५२९ ॥
हय उच्छरि पेह अयास लगी ॥
नव तुट्टि [1] तिनं बनि बारि भगी ॥
अरची सरसीरुह [2] संकुचिता ।
चकई चक मूंकति चूक तता ॥ छं० ॥ ५३० ॥
पवनं गवनं नन पंथ वहै ।
नव नेज धजा [3] धज लग्गि रहै ॥
फन फूंक फनं पति को बिसरी ।
मुदरी दिग अट्ठ दगं धुँधरी ॥ छं० ॥ ५३१ ॥
घन बज्जत घंट सघंट घनं ।
नव नोरथ नारि निभंग मनं ॥
ढलकै गजं ढाल सुनेज बनं ।
[4] चमकै बल के मल चौज मनं ॥ छं० ॥ ५३२ ॥

(१) मो. नितम्बनि । (२) ए.-कृ. को.-संकुरित, संकरित ।
(३) मो.-धन । (४) मो.--चमकें वलकें यमकें जमनं ।

तिन की उपमा कविचंद करी ।
मनौं मेघ महेंद्रव बीज झरी ॥
घन मन्निय नद्द बिबंक सुरं ।
सुभिहै बिब हथ्थ धजा वियुरं ॥ छं० ॥ ५३३ ॥
गज नद्द जंजीरन के घुरयं ।
मनौं बंधिय झिंगुर सा सुरयं ॥
तिन के कछु दान कपोल झरे ।
सु मनौं नभ के वरसे बदरे ॥ छं० ॥ ५३४ ॥
बजि लाग निसान धमंक सजी ।
सहनाइन सिधुंअ राग बजी ॥
नव नारद सारद ते किलकै ।
नव बंदि बिरह नदे हलकै ॥ छं० ॥ ५३५ ॥
घन देषि अरिष्ट सुबाल डरी ।
मुदरी नव आनद चित्त हरी ॥
कमधज्ज कला चढ़ती बर पेषि ।
मुंदरी ससिवृत्त दइ [1]शशि [2]लेखि ॥ छं० ॥ ५३६ ॥

सेना की सजावट की शोभा वर्णन और उसे देख कर भूत वेताल योगिनी आदि का प्रसन्न हो कर नाचना ।

निसाणी ॥ फौज रची तिन दोय घन मध्य मसंदा ।
जालिम जोध जुवान सेर रस बीर रजिंदा ॥
अग्गैं उभ्भा अप्प आइ जादव्व नरिंदा ।
मनौ उभ्भै मेर कै अड्डी अग डंदा ॥ छं० ॥ ५३७ ॥
पीछै ठाढ़े राठ बड़ बल जे विचरंदा ।
जानकि उत्तर उन्नया घन लोह सहंदा ॥
पाइक पंति अपार वर जनु मोर नचंदा ।
बाग गहिग्गहि बाज कीन रन बीर मषंदा ॥ छं० ॥ ५३८ ॥

(१) ए. कृ. को.--गति । (२) मो.--पेषि ।

बीरा रस्स उतावल न रहै बरजिंदा ।
अलबेला सु उछंछला अनमी अबलंदा ॥
गाहड़ मल्ल गुमान गुर गुन गात गुरंदा ।
बज्जे निसान नफेरियान घोर घुरंदा ॥ छं० ॥ ५३९ ॥
सत्त बीर सुनंत तन तामस्स भरंदा ।
सुनि चौसट्ठी जुगिन किलकि किलकंदा ॥
भूत भयानक भाव भरि भहरें भहरंदा ।
थेइ थेई गति षेच पाल किलकार करंदा ॥ छं० ॥ ५४० ॥
बावन बीर [1]बलिष्ट बर बल करि बिलसंदा ।
देषें देव बिमान चढ़ि कौतिग्ग अनंदा ॥
तारी दै दै तान तुट्टि नारद नचंदा ॥ छं० ॥ ५४१ ॥
गाथा ॥ नंचै नारद सिद्धं । बुद्धे बुद्धिवंत सुभट्टाई ॥
बंधे बुधिवर भट्टं । सहकारं बीर [2]भट्टायं ॥ छं० ॥ ५४२ ॥

सुसज्जित सेना से पावस की उपमा वर्णन ।

चौपाई ॥ नाम नाम जिम पूरन स्याम । तडित बेन धुक्की धर धाम ॥
गर्जित सिंह अपास सबद्द । करनि भज्जि होत जिन मद्द ॥छं०॥५४३॥
गाथा ॥ मद्दंक रीति भग्गा । आकास यौ सद्दयौ सद्दं ॥
सो क्रमं वर मंचं । फेर अकुंस सौसए मारं ॥ छं० ॥ ५४४ ॥

अंकुस लगा कर हाथी बढ़ाए गए और शस्त्र निकाल कर शूरबीर लोग आगे बढ़े ।

दूहा ॥ अकुंस मारि प्रहारि गज । बंधन अध पूजान ॥
शस्त्र कढ्ढि संमुह भिरन । धनि संभरि चहुआन ॥ छं० ॥ ५४५ ॥

कमधज्ज के शीश पर छत्र उठा उसकी शोभा ।

अरिल्ल ॥ उठ्यौ छत्र कमधज्ज नरिंदह शीश पर ॥
मनों कनक दंड पर ज्यूं इंदी इंदवर ॥

(१) ए० कृ० को०—अरिष्ट । (२) ए. कृ. को.-भट्टाई ।

घोड़ों की टापों से आकाश में धूलि छागई।

हय षुर [1]उच्छरि षेह अयासह धुंधरी।
बान गंग प्रथिराज देषनह उत्तरी ॥ छं० ॥ ५४६ ॥

चहुआन का घोड़े पर सवार होना।

दूहा ॥ बहकि निरह नष्यर भिदै। यह पारथ पविषान ॥
सो प्रति सारह उत्तरन। फिरि चढ्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ५४७ ॥

उस दिन तिथि दसमी को युद्ध के समय के तिथि योग नक्षत्रादि का वर्णन।

कवित्त ॥ देव दसमि दिन दीह। दीह पक्षरी नरिंदं ॥
गुरु पंचम रवि नमो। सुवर ग्यारमो सुचंदं ॥
चतिय थान वर भोम। सुक्र सप्तम वर कीनौ ॥
न्रप सुपनंतर आइ। ईस [2]जीपन वर दीनौ ॥
चौसट्ठि पुट्ठि वि पुट्ठियन। अरिन सेन संमुह [3]परे ॥
त्रिघोष सह बज्जैत सब। सुवर लोह कट्टे करे ॥ छं० ॥ ५४८ ॥

युद्ध वर्णन।

छंद त्रिभंगी ॥ कविचंद सुवरनं करै सुकरनं स्हूरह लरनं भर भिरनं ॥
तिरभंगी छंदं नाग नरिंदं कथ्थ करिंदं दुष हरनं ॥
[4]पढ़ मंदह मत्ता पुनि अठ मत्ता असु वसु मत्ता रस मत्ता ॥
घन घाइ सघत्ता स्हूर सरत्ता में गल मत्ता करि धत्ता ॥ छं० ॥ ५४९ ॥
बज्जे बर कोहं लग्गै लोहं छक्कै छोहं तजि मोहं ॥
स्हूरा तन सोहं स्वामिन दोहं रुत्ते ढोहं रिन डोहं ॥
बर बान बिछुट्टै बगतर फुट्टै पारन षुट्टै धर तुट्टै ॥
तरवारनि तुट्टै धभ्भर लुट्टै अंग अहुट्टै गहि फुट्टै ॥ छं० ॥ ५५० ॥
बीरा रस रज्जं स्हूरस गज्जं सिंधुअ बज्जं गज गज्जं ॥
अच्छरि तन मज्जं बरे बर जंजं चित्ते बज्जं मन मज्जं ॥

(१) मो.-उत्सरि। (२) को. जीयन (३) मो.-परै, करै।
(४) ए. कृ. को. पढ़ि मंदह मत्तापर नन्दा।

कायर रन भज्जं तज्जि सलज्जं स्वामि सु कज्जं भर सज्जं ॥
जम दड्ड सु सज्जे हथ्थह मज्जे छिन्छन छज्जे रिन रज्जे ॥छं०॥५५१॥

घायल सामंतों की शोभा ।

सोरठा ॥ रिन मंते सामंत । घाइ अंग तज्जे घने ॥
मनो मत्त [1]मय मंत । बिना महावत रारि मिलि ॥ छं० ॥ ५५२ ॥

शूरवीरों का क्रोध में आकर युद्ध करना ।

छंद भुजंगी ॥ कढै लोह कोहं दुदीनंति बज्जै ।
सजे तामसं राज सा [2]तुक्क तज्जै ॥
[3]कटे कंध छूरं मिले सार कोहं ।
सना हंत छूरं फिरैं [4]वेश सोहं ॥ छं० ॥ ५५३ ॥
उड़ै टोप टूकं बजै सार घंटै ।
मनो अग्ग डंगी लगी बंस फुट्टै ॥
मनौं मीन माया जलं सब्ब तुट्टै ।
.... ॥ छं० ॥ ५५४ ॥
असी मंस तुट्टै करं कंस हल्लै ॥
मनो कग्गदं काल बूतं सु चल्लै
सु भट्टं सु छूरं कुघट्टं सु कीनं ।
उलथ्थं सभेजी घृतं जाम थीनं ॥ छं० ॥ ५५५ ॥
चढ्यौ पावसं जद्दवं संभरेशं ।
दलं बद्दलं सद्दलं ते नरेशं ॥
घनं घोर घंटा निसानं दिसानं ।
तिनं भूलियं सब्ब आषाढ मानं ॥ छं० ॥ ५५६ ॥
झबै दामिनी तेग वेगं प्रमानं ।
पढ़ै भट्ट बीरं बुलै मोर बानं ॥
लगै बाइ.बुट्ठ सरं सार गोरी ।
रुधिं [5]नार मानो प्रवाहै स जोरी ॥ छं० ॥ ५५७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मैं । (२) मो.-सात्विक्क ।
(३) ए. कृ. को.-कढे । (४) ए. कृ. को.-वेस । (५) ए.-नारी ।

करैं कायरं चीय कहना प्रमानं।
लगै बाह कालंदि चंपे समानं॥*
जनं चीय जंपी उनं पीय जंप्यौ।
सोई ओपमा चंद बरदाइ थप्पौ॥ छं॰ ॥ ५५८॥

कवि का कथन कि उन सामंतों की जहां तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

दूहा ॥ देवप्पति देवह सु दुति। मति सामंत सधंत ॥
जिन अच्छार सच्छार कहिँ। सो जुस बाढ बर कंत ॥ छं॰ ॥ ५५९॥
गाथा ॥ जस धवली बर बढयं। षय लोकं साध [1]यौ तरयं ॥
जानिज्जै परिमानं। सतं समुद्द सींचयो [2]नीरं ॥ छं॰ ॥ ५६० ॥
छंद लघुत्रोटक ॥ मिलि जुद्ध मच्यौ। रन षेत रच्यौ ॥
सम सार सच्यो। नव एक मुच्यौ ॥ छं॰ ॥ ५६१ ॥
रस बीर षच्यौ। तन रारि [3]तच्यौ ॥
कहँ जाई बच्यौ। .... ॥ छं॰ ॥ ५६२ ॥
जुग्गनि जितनी। किलकें तितनी ॥
घन घाइ घुरैं। पट सीस परैं ॥ छं॰ ॥ ५६३ ॥
दोउ बीर बड़े। लगि लोह अड़े ॥
घट घाइ पड़े। झुर होइ झड़े ॥ ५६४ ॥
सस केश डफै। तन सों तड़फै ॥
फिफरा फड़कै। कढि सों कड़कै ॥ छं॰ ॥ ५६५ ॥
पग हथ्थ परैं। ढौ चाल [4]ढुरैं ॥
धक धींग धकें। मुष मार बकें ॥ छं॰ ॥ ५६६ ॥
रस बीर छकें। हक हूक हकें ॥
बहु सूर लरें। न्रप भार परें ॥ छं॰ ॥ ५६७ ॥

---

* ए. कृ. को. प्रतियों में इसके आगे ये दो पंक्तियां हैं।
उने मैन त्रासं उनै सत्र सारं। लभ्यो काइरं कामनी ना प्रभासं ॥

(१) ए. कृ. को.-सो। (२) मो.-नीयं।
(३) ए. कृ. को.-रच्यौ। (४) मो.-ढरे।

कमधज्ज के बीर खवास का युद्ध और पराक्रम वर्णन।

दूहा ॥ सुवर बीर षावास भिरि। मुक्कि सु धाम धमारि ॥
सो ओपम कविचंद कहि। मुक्ति कह्यौ परिहार ॥ छं० ॥ ५६८ ॥
अरिल्ल ॥ मोह पारि जिन छंडिय खूर। तिरन बीर भारथ्थह पूर ॥
देव जुद्ध आकत्ति अबुद्ध। कढ़े लोह दुव कोदह जुद्ध ॥ छं० ॥ ५६९ ॥
छंद विराज ॥ कढ़ै लोह बीरं। महा मल्ल तीरं ॥
हको हक्क वज्जी। गिरं जानि गज्जी ॥ छं० ॥ ५७० ॥
कढें मत्त मंती। अहतं न दंती ॥
वहै लोह सारं। प्रहारंत भारं ॥ छं० ॥ ५७१ ॥
झनंके झनंकी। रथं भान थक्की ॥
हलक्कंत खूरं। बजे देव तूरं ॥ छं० ॥ ५७२ ॥
उतं मंग तुट्टै। [1]घरी दोम लुट्टै ॥
घरी इक जानं। सु भारथ्थ मानं ॥ छं० ॥ ५७३ ॥
दूहा ॥ सुबर बीर षावास षिजि। कह्यौ बंको असि ॥
सोभै सीस गयंद कै। मनु तेरस को ससि ॥ छं० ॥ ५७४ ॥

खवास तो मारा गया परंतु उसका अखंड यश युगान युग चलेगा।

कवित्त ॥ सुबर बीर षावास। षिम्भिझ कह्यौ सु बंकि असि ॥
सुभै सीस गज राज। अह तेरसि कि बाल ससि ॥
मुट्ठि चंपि द्रग पानि। नीर बानं सुद्धारह ॥
मनु मुत्तिय वारुन्न। बंदु बंधे दून बारह ॥
साम रम देन पावरि धनि। स्वामि सु अंतर फुनि मिलिय ॥
जौरन [2]युमास संदेस सदि। गल्ह एक जुग जुग चलिय ॥ छं० ॥ ५७५ ॥

खवास के मरने से कमधज्ज को बड़ा दुःख हुआ और उसने अपने मंत्रियों से पूछा कि अब क्या करना चाहिए।

(१) मो.-घरी। (२) ए. कृ. को.-जुगा।

सुबर बीर कमधज्ज। राज संमुह अरि ढारिय॥
मरन पूंज पावास। मरन अप्पनौ विचारिय॥
सब सु सथ्थ पुच्छयौ। तंत मंतह उच्चारिय॥
सकल मंत रजपूत। मंत मो देहु सुचारिय॥
हारिये धूंम जित्ते सुसब। ता उप्पर तन रष्षियै॥
मो मंत्त सुनौ तौहूं कहूं। दुज्जन दल बल भष्षियै॥ छं०॥ ५७६॥

मंत्रियों का कहना कि समय पड़ने पर सुग्रीव, दुर्योधन, श्री रामचन्द्र, पांडव, अर्जुन इत्यादि सब ने अपनी अपनी स्त्रियों को छोड़ दिया।

एक समै सुग्रीव। त्रिया रष्षी न अप्प बल॥
एक समै दुरजोध। क्रन्नि पुकार मंडि कल॥
एक समै श्रीराम। त्रियां अप्पनी न रष्षी॥
एक समै पंडवन। चीर कढ्ढत द्रग लष्षी॥
रष्षिय न गोप पारथ बलिय। ससि सुबैर तारक्क बर॥
त्रिघात वात गोविंद बिना। जीव रषिन सर्बंग गहि॥छं०॥५७७॥

कमधज्ज के मंत्रियों के मंत्र देने के विषय में कवि की उक्ति।

दूहा॥ भल भल तुरी चढंत बर। तिन अप्पन अपार॥
मरन जानि भूनंग हर। कढ्ढर चढ़े तुषार॥ छं०॥ ५७८॥

कवित्त॥ सु कवि गत्ति ननग्रही। कु कवि गतिय सु क्रम बदन॥
सलिल बानि बोलै न। कठिन कुव्वचन सु स्वदन॥
छूटत घोट कवित्त। चित्त लहु गुरन प्रकासं॥
अघट घाट गुन करै। घाट सुद्ध न प्रगासं॥
अच्छरि सुरंग जै जै करहि। बन प्रस्तावन पढ्ढियै॥
घन घट्ट घट्ट झुम्मयौ करैं। कुकबि जे महि चढ्ढियै॥छं०॥५७९॥

दूहा॥ फेरि पंति पारस सु दल। अगति करी नहिं गत्ति॥
जिन सांई सधनौ कला। बनि सामंति सु मत्ति॥ छं०॥ ५८०॥

मंत्रियों के मंत्र के अनुसार कमधज्ज ने अपनी अनी मोड़ ली।

सुनति मत्ति पारस फिरि। सुभट सेन कमधज्ज ॥
एक लष्य दल लष्य मैं। धनि सामंत सु रज्ज ॥ छं० ॥ ५८१ ॥

कमधज्ज की सेना के फिरने से सामंतों का दिल बढ़ा।

गाथा ॥ लग्गा दल बल कलनं। सिंधुर असमान सीस गोरनयं ॥
बल बध्यौ सामंतं। कायर कर षेव सूर क्रम [1]छलयं ॥ छं० ॥ ५८२ ॥

दूहा ॥ [2]बल छचिय मंचिय तरन। भिरि भंजै गज दंत ॥
रंभ अरंभन ढूंढए। अचछे अच्छरि कंत ॥ छं० ॥ ५८३ ॥
झुकि भारी भगवान भिरि। राम कुलह कुल चंद ॥
सार सार संमुह [3]भिन्यौ। स्वामि सु मेटन दंद ॥ छं० ॥ ५८४ ॥
रघुबंसी कमधज्ज झुकि। बंध सु पंग नरिंद ॥
सो ओमैं देखी सबर। कहि तत्तौ कविचंद ॥ छं० ॥ ५८५ ॥
बसि कीनौ सामंत जुरि। बल अबुद्धि बुद्धि षेन ॥
छिति मंग्गह संग्राम किय। बल बलिष्ट बल तेन ॥ छं० ॥ ५८६ ॥

गाथा ॥ डंकी काल उछारे। उछारंत मत्त नो हथ्थी ॥
मत्ती मत्त सुमंतं। सो दिठ्ठो भारथं नथ्थी ॥ छं० ॥ ५८७ ॥

कवित्त ॥ कहै मात बड़ कौय। सुरत मत्ती अष्यारै ॥
दुति पहार संभार। बीर बीरह [4]विचारै ॥
रुधिर बूंद कंदल। परत कंदल परि उठ्ठै ॥
सार धार निरधार। सार धारह असि बुठ्ठै ॥
चावंड राइ दाहर तनौ। तिन बोहिथ चढ़ि उत्तरै ॥
बीजलह दाग तिलकं मिसह। अदग दग्ग नहि विस्तरै ॥छं०॥५८८॥

गाथा ॥ सो दग्गंत तिलकानं। सो दिष्टाय सारयो सरयं ॥
अपकित्ती मिस दग्गं। ना लग्गंत तासयं कुसलयं ॥ छं० ॥ ५८९ ॥

जिस कुल में चामुंड है उसको दाग नहीं लग सकता।

दूहा ॥ तिन कुल दग्ग न लग्ग बर। जिन कुल बल [5]चावंड ॥
दोष रहित अच्छरि अमी। किए षंड पाषंड ॥ छं० ॥ ५९० ॥

---

(१) मो. छलनं। (२) ए. कृ. को.-छल। (३) ए. कृ. को. पन्यौ।
(४) मो.-सुविचारै। (५) ए. कृ. को.-चामंड।

अरि मंडल षंडल करन। तिरन मोह मति [1]सिंध॥
रस्स बली बीरा बिषम। तै भारथ्थ सकंध॥ छं०॥ ५९१॥

दुपहर के समय कमधज्ज की फौज फिर से लौट पड़ी।

कंध बंध संधिय निजर। परी पहर मध्यान॥
तब बहुय्यौ पारस फिरिय। फिय्यौ [2]भीछ चहुआन॥ छं०॥५९२॥

कमधज्ज और चहुआन खड्ग लेकर क्षत्री धर्म्म में प्रवृत्त हुए।

कवित्त॥ छल संज्यौ बल जोग। बुद्धि बलजोग पसारिय॥
चाहुआन कमधज्ज। षग्ग षचीवस डारिय॥
रतन जुद्ध विरुद्ध। सह सहह मति कीनी॥
चावद्दिसि विढ्ढुरै। बीर बीरं रस पीनी॥
संग्राम धाम धंमार परि। काम धाम धम्मार तजि॥
सामंत सूर सांमत बर।' धीर बीर धारहति लजि॥ छं०॥ ५९३॥

शूरबीर हाथियों के दांत पकड़ पकड़ कर पछाड़ने लगे।

दूहा॥ मैं लज्जानी लज्ज बर। गज्ज दज्ज सामंत॥
अंत अलुभझय पंति पय। भिरि भंजै गज दंत॥ छं०॥५९४॥
भै हत्त अहत्त सरीर गति। सिंध सरोज सु पान॥
सूर बदौं सामंत दुज। जिन अप्पै जिय दान॥ छं०॥ ५९५॥
जीव दान अप्पन सु हत। दल दंतिय बढ़ि कंत॥
हनूमान जिम द्रोन बर। बारधि मंत [3]सुपंति॥ छं०॥ ५९६॥
चौपाई॥ बार बारधि बर पंति सुमान। सूर धीर सामंत सुजान॥
दल बल बल विछोरहि बीर। षग्ग मुष झलकंतह नीर॥ छं०॥५९७॥

महाभारत में अर्जुन के अग्निबाण के युद्ध से
इस युद्ध की उपमा देना।

कवित्त॥ षग मुष बर चढ्ढिये। धाइ तुट्टै है राजं॥
बार बार हक्कही। करै अग्या बिन साजं॥

(१) ए. कृ. को.-छंध, छद। (२) मो. भींच। (३) ए. कृ. को.-सुपाति।

[1]बाल स्वामि अग्या । विभंग चित ओपम चंदं ॥
चिय कठौर निर्बन्ध । क्रमै अग्या गुन मंदं ॥
करतलह सु कवि किंत्तिय सुबर । पय थक्कै आजान जिम ॥
भारथ्थ बीर पारथ्थ जिम । अग्गिवान सामंत [2]भ्रमि ॥ छं० ॥५९८॥

घोर संग्राम का वर्णन ।

छंद हनूफाल ॥ इति हनूफालय छंद । कवि पढ़ै भारथ चंद ॥
भ्रम भ्रमहि बीर प्रकार । ज्यों चक्क चक्किय धार ॥ छं० ॥ ५९९ ॥
घरि घट्टै एक विघट्ट । बर बीर भंज्या पट्ट ॥ छं० ॥ ६०० ॥
दूहा ॥ पट्टन भंज्या बीरवर । ज्यों दधीच सु अस्ति ॥
देवकाज बज्जी लियौ । सोइ बर तत्त सबत्ति ॥ छं० ॥ ६०१ ॥
कवित्त ॥ बस चत्तीय प्रकार । घाइ बज्जै घट घुम्मै ॥
मार मार उच्चार । सार सारहु बर झुम्मै ॥
एक मार संमार इक । सु मारति तै मारै ॥
एकं झार उझार । एक आरति उझझारै ॥
घरि एक तरंगनि अक्कि अल । कमल जानि मंच्यौति सर ॥
सामंत सूर सामंत बल । पहर बज्जि बज्जे पहर ॥ छं० ॥ ६०२ ॥
दूहा ॥ पहर बज्जि पर पहर बर । पहर पहर आरत्त ॥
मत्त दंत मद्दह मुकै । बान राज साहत्त ॥ छं० ॥ ६०३ ॥
बान राज साहत्त दुति । छिति छत्री आकार ॥
धन्नि सूर जे अंग में । धनि [3]झिल्लै सु दुधार ॥ छं० ॥ ६०४ ॥
गाथा ॥ दुद्धार सार सहियं । हय गय नर बीर बीरायं ॥
जुद्धिय धीमति धीमं । सा बीरं बीरयो राजं ॥ छं० ॥ ६०५ ॥
बीरं राजिय बीरं । बीरं बीरं सु बीर मुष बीरं ॥
बीरं छोइ सबीरं । सो बीरं उब्बियं नथ्थी ॥ छं० ॥ ६०६ ॥
दूहा ॥ नथ्थइ मुक्की बीर बर । बल बंकम घट घाइ ॥
घरी एक आचिज्ज भौ । जोति मग्ग बिरुझाइ ॥ छं० ॥ ६०७ ॥

(१) मो.-ज्यों भ्रमि । (२) ए. कृ. को.-भरि ।
(३) मो.-झेलै ।

छंद भुजंगी ॥ विरुझ्झाय उट्ठे रनं रोस बीरं । महा मत्त दंतीन की पंति भीरं ॥
गहै दंत धावै सु वाहै पचारै । महा मत्त बोलै सुवारं अचारै ॥
छं० ॥ ६०८ ॥
काली कित्त कूदं करै दूरि दंदं । बजै सार सारं महा काल मंदं ॥
महा ठट्ट घट्टै अहुट्टै जु थट्टं । बजै घाइ ऐसे बकै जानि भट्टं ॥
छं० ॥ ६०९ ॥
रुधिं धार रत्ती सु मत्ती उछारै । इसौ बीर बत्ती सु भारथ्थ भारै ॥
छं० ॥ ६१० ॥
दूहा ॥ भारथ्थह नथ्थी सुहत । अहत हत्त गति देव ॥
जिन सांई दुज्जन हत्यौ । सो सांई प्रति सेव ॥ छं० ॥ ६११ ॥
सेव देव देवन सुबल । रुंधत गिद्ध सु मंस ॥
मोह पान माया सुहत । उडत मुक्ति तिन हंस ॥ छं० ॥ ६१२ ॥
हंसन हंसिय हंस बर । मुगति सरोवर नीय ॥
तनु छंड्यौ उह मंडि कै । निसा भ्रम्म नह नीय ॥ छं० ॥ ६१३ ॥
हू सांई पर हथ्थरें । [1]परम तंत पद पाइ ॥
देवग्गिरि भंजन मती । रा चामंड विरुझाइ ॥ छं० ॥ ६१४ ॥
कवित्त । रा चामंड जैतसी । राम बड़ [2]गुज्जर बुल्लिय ॥
बलियभद्र बलिराम । सार धारह मति षुल्लिय ॥
कलह कित्ती विस्तरै । राइ निड्डुर सम सारं ॥
दुहू बोल दुच्च चरन । मरन कित्ती [3]अधिकारं ॥
बैकुंठ लेन लिन्ने सु षग । विहँग मग्ग पंथी सुगति ॥
नरसिंह सिंह छंडै नहै । सार धार मारह दिपति ॥ छं० ॥ ६१५ ॥
गाथा ॥ सारं धार वरदियंति । रुधिरं छंडेव सूरयो अंगं ॥
जानिज्जै मधु मासं । सा फूलेव पष्षरो वनयं ॥ छं० ॥ ६१६ ॥
अरिल्ल ॥ रत्त सु रत्त सु बीर उडाइय । घाइ मृदंग उपंग बनाइय ॥
कै माया मोह ग्गति छंडै । काल दंड कालह क्रत छंडै ॥ छं० ॥ ६१७ ॥
दूहा ॥ काल दंड षंडन करै । भिरै बीर भारथ्थ ॥
सुवर बीर सामंत गति । दै दुवाह पारथ्थ ॥ छं० ॥ ६१८ ॥

(१) मो.-मुगति परम पद पाय । (२) मो.-गूजर । (३) मो.-अवधारै ।

पारथ पारत्थिय सुहत्त। सारत्थिय चहुआन ॥
मानहु बीर समुद्र गति। तिरन मते भ्रम पान ॥ छं० ॥ ६१९ ॥

प्रातःकाल से युद्ध होते संध्या हो गई और कमधज्ज की सेना मुड़ गई परंतु चौहान की सेना का बल न घटा।

भ्रम्म पार सामंत बर। उदै अस्त भौ भान ॥
बहुरि पंग पारस फिरिय। बल न घट्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ६२० ॥

दोनों सेनाओं के बीर युद्ध से संतुष्ट न हुए तब इधर से भीमराय और उधर से मृत षवास के भाई ने क्रुद्ध होकर धावा किया।

कवित्त ॥ बल छंड्यौ न विराज। सूर उभ्भै दुअ पासं ॥
जंघारो रा भीम। स्वामि सन्नाह सुभासं ॥
दुहु बाहां सामंत। दून दह दहु अधिकारिय ॥
अमर बधं षावास। षग्ग षोल्यौ षिष्भि सारिय ॥
जंघार राव जोगिंद बर। भुगति मुगति अप्पन अनिय ॥
तामस [1]न बुझ्झयौ दोउ सेन कौ। बजि निसान आभा धुनिय ॥
छं० ॥ ६२१ ॥

गाथा ॥ आभ सुनिय सु देवो। बज्जे सागाइ मुंदरे बज्जे ॥
नीसानं निसि सारं। साहारं [2]पारषं होई ॥ छं० ॥ ६२२ ॥

दूहा ॥ पर पषरत्त पवित्त गति। रा निड्डुर राठौर ॥
बंधु दोष जान्यो नहीं। स्वामि भ्रंम पति मौर ॥ छं० ॥ ६२३ ॥

स्वामिकार्य्य के लिये जो शरीर का मूल्य नहीं करता वही सच्चा स्वामिभक्त सेवक है।

कुंडलिया ॥ तजिय पुंज षावास बर। तिरन तुंग तन अप्प ॥
चरन लग्गि बंछ्यो मरन। सो सांइ भ्रत तप्प ॥
सो सांई भ्रत तप्प। जन्म जानत जंजारे ॥

(१) ए. कृ. को.-तज्यौ न। (२) मो.-पारखा।

.... ॥

मयन मत्त विच्छुरिय। मोह पारी तजि पग्गिय ॥

धनि निड्डुर रट्ठौर। स्वामि छल स्वामि सु अग्गिय ॥ छं० ॥ ६२४ ॥

गाथा ॥ अग्गिय स्वामित कामं। भूमियं बीर बीर विस्तारं ॥

तिम तिम तामस तेजं। सेनं सज्जि मुक्ति साधीरं ॥ छं० ॥ ६२५ ॥

शशिवृता का व्याह धन्य है जिस में अनन्त वीरों को मुक्ति मिली।

मुक्ती धारन धीरं। पंजर सज्जैव मथ्थनो परयं ॥

बर ससिव्रत्त सु व्याहं। दाहं देहाइ दुष्षनो तजयं ॥ छं० ॥ ६२६ ॥

कमधज्ज के दस बड़े बड़े शूरवीर थे वे दसों इस युद्ध में काम आए।

दूहा ॥ देह दुष्ष कट्ठिय सुक्रम। रन जित्तिय सुग पान ॥

पंच दून पंचो परिग। सुनिय बीर रस पान ॥ छं० ॥ ६२७ ॥

गाथा ॥ परियं बीरति नामं। सुरति चौहूह नंदह घट्टी ॥

सजले सूर सुधारी। भारी भरनेव भारथं भिरयं ॥ छं० ॥ ६२८ ॥

कमधज्ज के जो वीर मारे गए उन के नाम।

दूहा ॥ परे सूर तिन नाम कहि। बरनत बनै विसेष ॥

देव देव अस्तुति करहिं। नाग रह्यौ सिर सेष ॥ छं० ॥ ६२९ ॥

छंद भुजंगी ॥ परे बीर बीरं तिनं नाम आनं।

पर्यौ पुंज राजं महा [1]वीर थानं ॥

पर्यौ देव सिंहंत सादुल्ल बंधं।

मुर्यौ षग्ग नाहीं भयो रंध रंधं ॥ छं० ॥ ६३० ॥

पर्यौ किल्ह कामं जु जट्टी जुवानं।

तिनं कट्टिया जेन गयदंत मानं ॥

पर्यौ बीर भट्टी कियौ अंग घट्टं।

जिनें मोरिया पंग रा मौंच थट्टं ॥ छं० ॥ ६३१ ॥

पर्यौ राइ राइं अजम्मेर सूरं।

(१) ए. कृ. को. बंध।

जिनं स्वामि भ्रंमं तज्यौ सिंध पूरं ॥
परयौ अंग अंगं सु अर्जोन रायं ।
लगे पंच दूनं महा बीर घायं ॥ छं० ॥ ६३२ ॥
परे पंच बंधो बलीभद्र बीरं ।
जिनें अंग अंगं कियौ सा सरीरं ॥ छं० ॥ ६३३ ॥

कवित्त ॥ परत देव वर क्रंन । सरन रष्षन साँई बर ॥
परि सुष रन पुंडीर । सार सारंग देव धर ॥
परयौ बीर बलिभद्र । जात पांवार पवित्रं ॥
धार धनी चढि धार । सलष लष्षन दुति मंत्रं ॥
लावन्न सिंह भुज पाइ बर । अरिन पाइ उठ्ठाइ लिय ॥
धनि धन्नि सूर सामंत बर । जुग जीरन जीरन सुजिय ॥छं०॥६३४॥

शूरवीरों की प्रशंसा ।

दूहा ॥ जुग जीरन जीरन सुबर । चरन किंत्ति सा किद्ध ॥
सुबर बीर सामंत बर । गत्ति न पुज्जै सिद्ध ॥ छं० ॥ ६३५ ॥
सिद्ध न पूजै गत्ति तिन । छाया मोहन माय ॥
इन छाया मंडी तहां । भ्रंम छांह रहि छाइ ॥ छं० ॥ ६३६ ॥
भ्रंम छांह रहि छाइ बर । करिय सूर सामंत ॥
सो करनी करिहै न को । करिय बीर गुन मंत ॥ छं० ॥ ६३७ ॥
गुननि मंत गंभीर गुर । जै जै सद्द सु सिद्ध ॥
बरन बिहुसि बरनिय बरहि । रंभ अरंभन सिद्ध ॥ छं० ॥ ६३८ ॥

गाथा ॥ रंभा अरंभ वरयौ । अच्छी अच्छीव अच्छरी सरनौ ॥
केकी गवनी किन्नी । माकित्ती बंधयौ रष्षी ॥ छं० ॥ ६३९ ॥

चौपाई ॥ बढ्ढि रष्षि कित्तिय परिकार । सार सिंध उत्तर बन पार ॥
जोग सिद्ध जोगाधिय अंत । बजि डक डमरु उमया कंत ॥छं०॥६४० ॥
उमा कंति जोगाधि सु जानै । बीर सगुन बीरा रस मानै ॥
जै जै सद्द भयौ तिन वार । राज द्वार घरियार बिभार ॥छं०॥६४१॥

दूहा ॥ राज द्वार घरियार बजि । सार बज्जि रति सार ॥
सूर सुमति सामंत की । बीर उतारन पार ॥ छं० ॥ ६४२ ॥

गाथा ॥ लग्गिय थास न सूरं। बीरं सुभटाइ मत्तयो दंती ॥
आनिज्जै परिमानं। भारथ्थं बीरयो कंती ॥छं० ॥ ६६१ ॥

दूहा ॥ हल देवत बिछुरत्त बर। परषिय जंपहि जोग ॥
सुबर सूर सामंत गुन। [1]सुग्ग मत्त [2]मति भोग ॥ छं० ॥ ६६२ ॥

स्त्रियों की प्रशंसा।

भोग जोग दुख बिद्वि बिध। दान भुगति संगाइ ॥
चीय कहै नट्टै सु त्रिय। त्रियन गती मुह पाइ ॥ छं० ॥ ६६३ ॥
त्रियन गत्ति पावहि पुरुष। धरन धरत्तिय ताम ॥
सूर धीर सूरह भिरत। वर विश्राम तजि जान ॥ छं० ॥ ६६४ ॥

चौपाई ॥ एक एक उट्टै परिमानं। सुमति मंत मंत्रिय गुरु दानं ॥
[3]षग्ग टेकि बाहै बर षग्गं। ज्यों बावन छलि भूमि [4]विगंगं ॥छं०॥ ६६५ ॥

दूहा ॥ भुमि विभग कौनिय सुहत। देवत्तह प्रति देव ॥
मद्दन रंभ मच्यौ सु भर। गुन श्रम न ग्रभ भेव ॥ छं० ॥ ६६६ ॥
मरन सीस मुक्यौ सु वसु। रस पारायन देव ॥
दुतिय मुतिय दुति बैर तिन। भ्रम भग्गा जुग भेव ॥ छं० ॥ ६६७ ॥
अवृत हत्त विभ्रम [5]भइग। हय गय दुल चतुरंग ॥
चाहुआन कमधज्ज सों। भय बीरा रस भंग ॥ छं० ॥ ६६८ ॥

गाथा ॥ भौ बीरा रस भंग। जंग जुग तीय बीर सु [6]भट्टाइं ॥
सद्विर सुद्विर सुघटं। साठट्टई घट्टयो भंगं॥ छं० ॥ ६६९ ॥

रात्रि का कुछ अंश बीतने पर चन्द्रमा का उदय हो गया और दोनों सेनाओं के बीर विश्राम के लिये रण से मुक्त हुए।

मुरिल्ल ॥ ठट्ठ सेन [7]भग्गौ चतुरंगह। लुथ्थिय लुथ्थिय आलुथ्थिय विभंगह ॥
कल किंचित किंचित रस भारी। इते अस्तमित भानं [8]सारी ॥छं०॥ ६७० ॥

गाथा ॥ अस्तमितं [9]वर भानु। पायानौ परम संतोषं ॥
आनिज्जै जस बंधुअं। नव चंदनं तिलकयौ दीयं ॥ छं० ॥ ६७१ ॥

(१) ए.कृ. को.-स्वर्ग (२) को.-मनि। (३) मो.-खडग। (४) मो.-वगंगं।
(५) मो.-ए-भइय। (६) ए. कृ. को.-सुट्टयं।
(७) ए. कृ. को.-भगौं (८) ए.-सारं। (९) ए. कृ. को.-मांनु सु भानु

चंद्रायना ॥ दुरि निसान गत भान भहग बर।
सिंधु संपतौ जाइ तिमिर चढ़े गुर ॥
कुमुद विमुद अंकूर सूरातन धरियं।
मानौ तम को तेज सु तत्त उधरियं ॥ छं० ॥ ६७२ ॥

[1]मुरिल्ल ॥ बर भान संपतौ थान गुरं। [2]सरसीरुह उहित मुदित बरं ॥
बर बीर कमोदनि कौ सु गतौ। सु भए रिसिराज उदोतपतौ ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

सूर्य्योदय से भ्रमर चकवा चकई और शूरवीरों को आनन्द होता है।

दूहा ॥ निसि गत बंछे भान बर। भँवर चक्कि अरु सुर ॥
मंतह मत्त पयान गति। बर भारथ्थ अँकूर ॥ छं० ॥ ६७४ ॥

रात्रि को संयोगिनी स्त्री और रण से श्रमित सेना विश्राम करती है पर कुमोदिनी और वियोगिनी को कल नहीं पड़ती।

कवित्त ॥ कुमुद उघरि मूँदिय। सु बंधि सतपत्र प्रकारय ॥
चकिय चक्क विच्छुरहिं। चक्कि शशिद्दत्त निहारय ॥
जुवती जन चढ़ि काम। जाहि कातर तर पंथी ॥
अट्टत हत्त संदरिय। काम बढ्ढिय बर अंथी ॥
नव नित्त हंस हंसह मिलै। विमल चंद उग्यौ सु नभ ॥
सामंत सूर न्त्रप रष्षि कै। करहि बीर बीश्राम सभ ॥ छं० ॥ ६७५ ॥

गाथा ॥ विश्रामं बर लैही। सूरं सूरयौ धरयं ॥
धायं अंग विअंगं। जानिज्जै [3]कैतु यो लग्गी ॥ छं० ॥ ६७६ ॥

दूहा ॥ तम बढ्ढिय धुंधर धरा। परष पयं पन मुष्ष ॥
तम्म तेज चावद्दिसह। जुझ्झनि भग्गि अरुष्ष ॥ छं० ॥ ६७७ ॥
जुझ्झ भग्गि आरुष्ष बर। रोकि रहिग बर स्याम ॥
सुबर सूर सामंत गुन। तम पुच्छे न्त्रप ताम ॥ छं० ॥ ६७८ ॥

---

(१) मो.-त्रोटक।　　(२) ए. कृ. को.-सरूही रुह उद्दित नर।

(३) ए. कृ. को.-केन. केत।

सहस्त्रों सेना में भी छिपा हुआ चहुआन का शत्रु बच नहीं सकता।

गाथा ॥ जै जै घर चहुआन। एकं होइ सथ्थयौ सूरं ॥
को रष्षो परमानं। अरि रष्षै कहुयौ मच्छी ॥ छं० ॥ ६७९ ॥

चौपाई ॥ कोटि मझ्झि अरि होइ प्रमान।
ता भंजै निश्चै चहुआन ॥
हरि शशिवृत्त आइ पहु इंद।
रुकमनि व्याह बरिय गोविंद ॥ छं० ॥ ६८० ॥

गाथा ॥ गोविंदं प्रति व्याहं। सनमानं सूरयो वृत्ती ॥
अप रष्षै अरि जुद्धं। रष्षै स्वामि मरनयौ अप्पं ॥ छं० ॥ ६८१ ॥

चहुआन के सामंत स्वामिकार्य्य के लिये प्राण को कुछ वस्तु नहीं समझते और यह स्वभाव चहुआन का स्वयं भी है।

दूहा ॥ अप्प वृत्त इह सूर किय। सूर वृत्त चहुआन ॥
स्वामि रहै लज्जै जलनि। भौ वृत (१)क्त्तिय पान ॥ छं० ॥ ६८२ ॥

गाथा ॥ कालिंदी तन स्यामं। लग्गे नथ्थि अगनतं स्यामं ॥
भय अवि क्त्तिय तामं। अन्यं जानि तत्तयो सारं ॥ छं० ॥ ६८३ ॥

सामंतों का पृथ्वीराज से कहना कि आप दिल्ली को जांय हम लड़ाई करेंगे।

अरिल्ल ॥ तत्त सार प्रति प्रत्ति प्रमानं। जाहु राज दिल्ली चहुआनं ॥
गुन बद्धे हम बद्धे सत्तं। दुष्ष मानि सुनि सुनिय विरत्तं ॥
छं० ॥ ६८४ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि सूर्य्य बिना चंद्र तथा तारागण से कार्य्य नहीं हो सकता, हनुमान के समुद्र लांघने पर भी रामचंद्र जी के बिना कार्य्य नहीं हो सका। मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जा सकता।

(१) मो.—वृतपो।

कवित्त ॥ दुष्ष मानि सो रत्त । सुनै सामंत सूर वर ॥
[1]चंद उडग्गन काम । सर्‌यौ कहुं दिष्षि सूर नर ॥
मान: काम नन सरें । अरुन जो होइ तेज वर ॥
काम राम [2]नन सरै । हनू [3]कूर्यौति लंकाधर ॥
नन सरै काम मंगल सु विधि । जो मंगल आहत्त तप ॥
सामंत सूर इम उच्चरै । कढ्ढि मोहि भुम्मभुति अप ॥छं०॥६८५॥

तुम्हें रण में छोड़ कर मैं दिल्ली में जाकर आनन्द करूं यह मैंने नहीं पढ़ा है।

दूहा ॥ मुहि कढ्ढिरु तुम रहौ वर । जियत जांहि उन थान ॥
ऐसी रीति अरीत वर । पढ्ढी नह चहुआन ॥ छं० ॥ ६८६ ॥
गाथा ॥ अम्मन मभ्भि सुरंगं । सो जंपेव सूर तुम तत्तं ॥
दिन मौ रव संग्रामं । [4]सम्मान दारेति एव गसं ॥ छं० ॥ ६८७ ॥

राजा का उत्तर सब को बुरा लगा परंतु किसी ने राजा की बात का उत्तर न दिया।

विष लग्गा न्रप बैनं । हाला हलयो तत्तयो सूरं ॥
उत्तर दिय नह राजं । गाम निस भा बुद्धि जन बत्तं ॥ छं० ॥ ६८८ ॥

कवि चंदादि सब सामंतों ने समझाया पर राजा ने न माना और यही उत्तर दिया कि शत्रु के साम्हने से भागने वाले क्षत्री को धिक्कार है, मैं प्रातः काल भारत मचाऊँगा।

कवित्त ॥ बार बार भर कहिग । राज मानै न तत्त [5]मत ॥
बीर चंद मा अग्ग । चलै प्रथिराज हारि गत ॥
मो भंजै अरि गज्ज । मोहि [6]भंजै अरि भंजै ॥

(१) मो.-चंद उगन काम सन्यौ । (२) ए. कृ. को. तन । (३) मो.-उद्यौत।
(४) मो.-समान दारें निय वगसं । (५) ए. कृ. को.-व्रत । (६) मो.-गंजै ।

ता छत्री कुल लज्ज। छत्र धरि सिर हति ²लज्जै ॥
जं होइ प्रात दिष्षौ सकल। मइन रंभ हुत्तौ करौं ॥
चहुआन चिंत चिंतइ सुरा। बर भारथ गुन विस्तरौं ॥ छं० ॥ ६८९ ॥

गाथा ॥ विस्तरि गुनयो प्रातं। रत्तं रत्त सूर बीरायं ॥
चावहिसि बर वीरं। सा धीरं मत्तयो बीरं ॥ छं० ॥ ६९० ॥

सब का यह मत होना कि सूर्योदय से प्रथम ही युद्ध आरंभ हो जाय।

दूहा ॥ मत्ति बीर संमुह ³भिरत। कठिन शस्त्र अति पान ॥
भान पयानह दीह गुन। लोह पयान पयान ॥ छं० ॥ ६९१ ॥

सूर्योदय से प्रथम ही फौज का तैयार हो जाना।

त्रोटक ॥ बिन भाम पयानति लोह कढ़े।
अल मत्तिय रत्तिय बीर पढ़े ॥
दोउ बीर दुवं दिशि धूंध धरी।
कलहं तत केलिय ता उघरी ॥ छं० ॥ ६९२ ॥

रण मदमाते निढ्ढर का घोड़े पर सवार होना और साठ योधाओं को लेकर हेरावल में बढ़ना।

गाथा ॥ अंकुर बीर सुभट्टं। अघटं घट्टाइ क्रोधयो कलहं ॥
हय मुक्या चलि बंधी। निढुर सथ्थव सठयो बीरं ॥ छं० ॥ ६९३ ॥

शूरबीर लोग माया मोह को छोड़ कर आगे बढ़े।

दूहा ॥ बीर बीर बीराधि बर। ⁴कढ़े लोह तजि छोह ॥
सूर धीर सामंत गति। नहिं माया नहिं मोह ॥ छं० ॥ ६९४ ॥

तीसरे दिवस का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ जिते सूर पत्ती। लगै लोह तत्ती ॥
नचे सूर छत्ती। उड़े काल पत्ती ॥ छं० ॥ ६९५ ॥

[1]जुटे जोध पत्ती। उडी रेन गत्ती॥
महा बेन तत्ती। कला कोटि कत्ती॥ छं०॥ ६९६॥
ग्रवे ग्राव गत्ती। सुरं पंच छत्ती॥
मचे क्रूह मत्ती। घचे रोस रत्ती॥ छं०॥ ६९७॥
करे घाव कत्ती। हसे सूर चित्ती॥
शिर फल सत्ती। घुमें घाइ घत्ती॥ छं०॥ ६९८॥
भजे भीम मत्ती। हनूमान जत्ती॥
अनाभूत अत्ती। दिषे दारु दत्ती॥ छं०॥ ६९९॥
रुधिं धार [2]रुक्कं। भभक्कै भभक्कं॥
धका धीग धक्कं। बकै मार बक्कं॥ छं०॥ ७००॥
हसे चित्त अक्कं। छुटे मत्त छक्कं॥
डकारंत डक्कं। चिलोकंत हक्कं॥ छं०॥ ७०१॥
मनो मोह थक्कं। हको हक्क बक्कं॥ छं०॥ ७०२॥

युद्ध करते हुए वीरों की प्रशंसा।

कवित्त॥ हको हकि बजिय प्रकार। सार बज्जै सु बीर बर॥
सु बुधि बुद्ध आबुद्ध। मत्त लग्गै असि वर ग्रर॥
हुकत रुद्द आरुद्द। नह नारद अधिकारिय॥
रंभ सिंभ आरंभ। सिद्ध बुद्धं दै तारिय॥
धनि धनि सूर दिन धनित बल। छल छचिय अंकूर रजि॥
कलहंत काल कालह विषम। सुबर बीर बीरत्त रजि॥ छं०॥ ७०३॥

दूहा॥ बीर रजिज बीराधि भर। बलिय बीर गन सज्जि॥
सुबर सूर सामंत के। मंत कलह तुटि बज्जि॥ छं०॥ ७०४॥
मंत कलह बज्जिय तुटहि। घटहि अघट तुटि मंस॥
सुबर सूर.सामंत कौ। बर उड्डै तन अंस॥ छं०॥ ७०५॥
हंसति उड्डहि अंस दै। कंसत केसिय प्रान॥
बर पंचिय पावै न जन। बर छुट्टै किरवान॥ छं०॥ ७०६॥

(१) यह छंद मो. प्रति में नहीं है। (२) मो.-रुक्कं।

शूरवीर सामंतों का रणमत्त होकर विचित्र कौशल से शास्त्राघात करते हुए युद्ध करना ॥

रसावला ॥ पंष छुट्टै मनं । सूर मत्त धनं ॥
घाव बज्जै घनं । टूक टूकं तनं ॥ छं० ॥ ७०७ ॥
आज इक्कं मनं । बान नंसं (१)धनं ।
भीतकं विग्घनं । कीय लीयं पनं ॥ छं० ॥ ७०८ ॥
अच्छ भुक्कभै बनं । जानि कुम्मालनं ॥
षोदि कढ्ढै गनं । देव चढ्ढि विमनं ॥ छं० ॥ ७०९ ॥
पेषि इक्कं मनं । कुइक बानं घनं ॥
नारि छुट्टै पनं । .. .. ॥ छं० ॥ ७१० ॥
गज्ज तें गग्गनं । सार वे सग्गनं ॥
सिद्धता मग्गनं । लोह ज्यों लग्गनं ॥ छं० ॥ ७११ ॥
इक इक्कं गनं । कुंभ हथ्थी (२)छिनं ॥
रुद्रि धारा घनं । दुद्ध मानों थनं ॥ छं० ॥ ७१२ ॥
दोड पट्टै दनं । ओप इभ्भै इनं ॥
इष्ष वेसं मनं । मल्ल गिज्जं गनं ॥ छं० ॥ ७१३ ॥
गोरियं छन छनं । टूक होयं रनं ॥
सूर षै तन तनं । नंमतं फन फनं ॥ छं० ॥ ७१४ ॥
बार पारं जनं । रोस चढ्ढे रनं ॥
लग्ग गे बंभनं । रुंड केसिं भनं ॥ छं० ॥ ७१५ ॥
गिद्ध सिद्धं गनं । टारि रषषै तनं ॥
दद्धि ज्यों उप्फनं । असि वाहै बनं ॥ छं० ॥ ७१६ ॥
मीन जातं पनं । पिष्षनं चिम्मनं ॥
कोन को चिम्मनं । भूत प्रेतं धुनं ॥ छं० ॥ ७१७ ॥
जुग्गनी जित्तनं । पत्त भूत्तं तनं ॥
नारदं नंचनं । मुत्ति मै मंचनं ॥ छं० ॥ ७१८ ॥
अंमरं गंमनं । विष्टता संमनं ॥ छं० ॥ ७१९ ॥

---

(१) मो.-बनं । (२) ए. कृ. को.-छिन, बिन ।

शूरवीर स्वामिकार्य्य साधन करने के लिये वीरता से रण में प्राण दे कर पूर्व्व कर्म्मों की संधि को लांघ कर स्वर्ग पाते हैं।

कवित्त ॥ सूर संधि विधि करहि। क्रम्म संधी जस तोरहि॥
दूक लष्ष आहुटहि। एक लष्षं रन मोरहि॥
सुबर बीर मिथ्था। बिवाद भारथ्थह षंडै॥
[1]बिच्चि बीर गजराज। बाद अंकुस को मंडै॥
कलहंत केलि काली विषम। जुद्ध देह देही सु गति॥
सामंत सूर भीषम बलह। स्वामि काज लग्गे ति मति॥ छं०॥ ७२०॥

स्वामिकार्य्य में जो वीर रण में मारे जाते हैं उन का शिर श्री महादेव जी की माला (हार) में गुहा जाता है।

दूहा॥ [2]स्वामि काज लग्गे सुमति। षंड षंड धर धार॥
हार हार मंडै हियै। गुथ्थि हार [3]हर हार॥ छं०॥ ७२१॥

गाथा॥ सिर तुट्टै धुर तारं। [4]लारं तुट्टि बीरयो सिरयं॥
धर तुट्टै प्राहारं। सा बज्जै तारयं तारं॥ छं०॥ ७२२॥
तारं तार प्रहारं। देवल दरियाइ झल्लरी बज्जं॥
बज्जं ते सिर सारं। प्राहारं पंच घट्टि कांई॥ छं०॥ ७२३॥

तीसरे दिन एकादशी सोमवार को युद्ध होते होते पांच घड़ी चढ़ आई शूरवीर मार मार कर हाथियों की कला कला को पछेलते जाते थे।

कवित्त॥ घटिय पंच दिन चढ्यो। उमरि आरब्ब पुंज घिरि॥
एक दिना दोउ सेनं। मोह छंडौ क्रम निक्करि॥
बान गंग पत्तयौ। बीर ग्यारसि दिन सोमं॥
सूर धीर सामंत। सूर उड्डे रन रोमं॥

---

(१) ए. कृ. को.-बेचि। (२) मो. पाति काज लग्गे तिमत।
(३) मो.-हाथ। (४) को.-लारयं।

क्रत काम काज सांई विभ्रम। दल दंतिय पंतिय [1]गमै ॥
सामंत सूर सांई विभ्रम। रोम रोम राजी [2]भ्रमै ॥ छं० ॥ ७२४ ॥

इधर पृथ्वीराज ने शशिवृता की उत्कंठा पूर्ण की।

दूहा ॥ रोम राज राजी भ्रमहि। [3]थोर थनी हुंढि बाल ॥
उतकंठा उतकंठ की। ते पुज्जी प्रतिपाल ॥ छं० ॥ ७२५ ॥

साटक ॥ साता से उतकंठ रंभति गुना रंभा अरं भावरं ॥
संधं बिद्धि सु सुद्ध कारन मिते देवंगना सुंदरी ॥
जा बंदे मिति चंद कारन मिते निर्भासितं भासितं ॥
पाषंडं तजि लीन सूरति बरं आरंभ पारं भनं ॥ छं० ॥ ७२६ ॥

सम्मिलन के प्रारंभ में पृथ्वीराज ने प्रण किया कि मैं तुझे तीनों पन में एक सा धारण किए रहूंगा।

गाथा ॥ आरंभं प्रारंभौ। उतकंठा किंनयौ हतयं ॥
साधा धरौ सु धरयं। रन छुट्टै तीनयौ पनयं ॥ छं० ॥ ७२७ ॥

यह वर पाने के लिये कवि का शशिवृता को धन्य कहना।

मुरिल्ल ॥ बालप्पन जुब्बन पन बीर। दई बीर बडपन्नह [4]धीर ॥
बडपन्नह मति सु तजि डिढाइ। धंनि लई तिहुं पन्न बड़ाइ ॥छं०॥७२८॥

दूहा ॥ बालप्पन जुवपनह गति। कथ तिय पनहति काज ॥
भर कहु न्रप राज गुन। नह चल्लै प्रथिराज ॥ छं० ॥ ७२९ ॥

पृथ्वीराज का अटल प्रेम देख कर पैर पकड़ कर शशिवृता का कहना कि दिल्ली चलिए।

नह चल्लै पृथिराज रिन। लज्ज लपट्टिय पाइ ॥
पय जोरै कर हथ्थ दो। चलि संभरि वै राइ ॥ छं० ॥ ७३० ॥

(१) मो.-गमें, भ्रमें। (२) मो.-भूमें।
(३) मो.-चोरि। (४) मो.-भीर।

उक्त विषय पर पृथ्वीराज का बिचार में पड़ जाना कि क्या करना चाहिए।

लज्ज परब्बत ह्वै रही । बैन तजै नृप पास ॥
दुहूं बीर [1]मंडन सु बुधि । अति गत्तिय रति चास ॥ छं ॥ ७३१॥

यह देख शशिवृता का कहना कि मेरी लज्जा रखिए ।

फिरि बुल्ली लज्जी सुनहि । हों मंडन तन बीर ॥
मो बिन इक्कै काज नृप । बुद्धि न आवै तीर ॥ छं० ॥ ७३२ ॥

राजा का कहना कि तेरी सब बातें रस कसूम (अफीम के शर्बत) के समान मेरे जीवन भर मेरे साथ हैं।

तूं वै एकह पन रहै । रंग कुसुंभ [2]प्रमान ॥
हों नन छंडों पास तुअ । तीनों पनंह समान ॥ छं० ॥ ७३३॥
तूं लज्जी मो सथ्थ है । दान षग्ग अरु रूप ॥
मों चल्लै तीनों चलैं । संची चवै न भूप ॥ छं० ॥ ७३४ ॥
सुन रे वै लज्जी चवै । हूं मंडन नर लोइ ॥
मो बिन अप्पन [2]लद्ध है । नर [3]न्विभासन होइ ॥ छं० ॥ ७३५ ॥

शशिव्रता का कहना कि मैं भी क्षण क्षण आपकी प्रसन्नता का यत्न करती रहूंगी ।

बै बुल्ली लज्जी कलह । क्रत कै काम सुनंत ॥
इक्कै पल पल मंडनो । हो रज्जन रजकंत ॥ छं० ॥ ७३६ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि चहुआन का धर्म ही लज्जा का रखना है।

अरिल्ल ॥ [4]लज्जी सुनि सुनि इसी प्रमान । तूं जानै सुनि [5]बैन निधान ॥
लज्ज रूप मंडन चहुआन। सुबर बीर [6]आकास निधान ॥ छं०॥७३७॥

(१) मो.-मंतह ।　(२) मो.-लद्ध, लम्भ, लभ ।　(३) मो.-निर्भासन ।
(४) मो.-लज्जा सुन रहसी प्रमान । (५) ए.-कृ. को.-वे सुन निवान । (६) मो.-आकार ।

तू अपने धर्म अनुसार सत्य कहती है।

दूहा ॥ तूं लज्जी सची चवै। तत लगि भ्रंम प्रकास ॥
आदत्तह गुन भ्रत्त किय। जोग सुंदंदा चार ॥ छं० ॥ ७३८ ॥

इस प्रकार शशिवृता और पृथ्वीराज का परामर्श होता रहा, पृथ्वीराज रूप रस में मत्त था और उस के स्वामिधर्म में रत सामंत उस तक कोई बाधा न पहुंचने देते थे।

छंद पद्धरी ॥ निम्न्यौ बाद वै वर [1]प्रमान।
मानहि न बत्त लज्जी निधान ॥
वै जाहु जाहु तन रूप छंडि।
जिन चलै लज्ज लज्जी चिषंडि ॥ छं० ॥ ७३९ ॥

कहि बीर राज आए सु बीर।
मानहु कि छुट्टि धन वर सरीर ॥
आभास भार तुट्टैति अंग।
जोर वरज हर मत्तीत जंग ॥ छं० ॥ ७४० ॥

क्रतत केलि क्रत करहि काम।
सोभहति सूर दक्षिन ति[2]ताम ॥
अति स्वामि भ्रंम नह वाम मग्ग।
लग्यौ न सूर जिम स्वामि दग्ग ॥ छं० ॥ ७४१ ॥

प्रथिराज दिष्ट दिष्टत प्रमान।
अरि भजत मनहुं तिन अग्गि जान ॥ छं० ॥ ७४२ ॥

यद्यपि सामंत बड़े बलवान थे किन्तु तब भी पृथ्वीराज का मन युद्ध ही की ओर लगा था।

दूहा ॥ अग्गि पान सामंत बल। भ्रत धीरत्त न जोध ॥
भ्रस्त्र लग्गि लग्गै न मन। तउन पच पति ओध ॥ छं० ७४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-प्रकाम। (२) मो.-नाम।

शशिवृता की आशा पूजी, शिवजी की मुंडमाल पूरी हुई और भगवती रुधिर से तृप्त हुई।

त्रिय त्रिषाइ सूरन भए। त्रिपति उमापति मुंड ॥
उमा त्रपति रुधिरं भई। धनि सूरन भुज दंड ॥ छं० ॥ ७४४ ॥

शूरवीरों के शौर्य्य और बल की प्रशंसा।

सूर सुधनि भुज दंड बल। बल विक्रम ज्यों [1]पाय ॥
बल किन्नौ छल छंडयौ। बर बीरा रस चाइ ॥ छं० ॥ ७४५ ॥

कवित्त ॥ बीर घाइ आघाइ। बीर बिरुझाइ सेन बर ॥
लष्ष लष्ष टूक मझ्झि। लष्ष उभ्भिरे लषष भर ॥
दल दंतन बिच्छुरै। घाइ है बर किन तंकहि ॥
एक लष्ष रुधिरै। षग्ग षग्गनि झननंकहि ॥
ठननंकि घंट घंटिय परहि। कज्जल कूट बिवान भ्रम ॥
सामंत सूर सांमंत हथ। करहि चंद अस्तुति सु क्रम ॥ छं० ॥ ७४६ ॥

शशिवृता के ब्याह की देवासुर संग्राम से उपमा वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ आसंभ सेन सेना बिरुद्ध। शशिवृत्त ब्याह दैवान जुद्ध ॥
नर मथहि मेघ रथ गज सु वादि। छोमियै षग्ग रिस अग्ग सादि॥ छं० ॥ ७४७ ॥

उच्चरे बैन बाजंत बीर। सद्धै जु जुद्ध बुद्धं सरीर ॥
दैवत्त दुर्ग छिति मति अक्रूर। निर्घोष दोष बज्जै सपूर॥ छं०॥७४८॥
हय गय गंभीर तन तुंग ताम। सूरह सु बीर बिश्राम आम ॥ छं० ॥ ७४९ ॥

गाथा ॥ रन घन तन विश्रामं। सँग्रामं टूक घरी पाइ ॥
दावानल प्रकुआनं। मा बीरं बीर बीराधं ॥ छं० ॥ ७५० ॥
बीराधं बर बरयौ। सा भज्जै आवनं गवनं ॥
[2]मोहं सलाकं भंजो। नां सज्जं पंजरो दिवो ॥ छं० ॥ ७५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-आइ। (२) मो.-मोहे।

शूरवीरों का कहना कि हमारी जय तो हुई किन्तु जयचंद का भाई कमंधज्ज क्यों जीवित जाने पावे।

चौपाई ॥ नह सज्जै पंजर प्रतिमान। कहै सूर निहचै प्रतिमान ॥
बीरचंद बंधव कमधज्ज। जीवत स्यामि जाइ क्यों लज्ज ॥छं०॥७५२॥

गाथा ॥ हम बहुलं बेसतयं। बंधे तेग मुक्कि न्रप आयं ॥
जीवत सुनि कमधज्जं। ना मुक्कै लष्षयो बलयं ॥ छं० ॥ ७५३ ॥

मुरिल्ल ॥ लष्ष लष्ष बर सुभट सु भट्टह।
अघट घट्ट सु घटै न घट्टह ॥
सुहत बीर छचिय छिति राजै।
मनो इंद घन मद्धि विराजै ॥ छं० ॥ ७५४ ॥

गाथा ॥ यों रज्जै न्रप भरयौ। सरनं सूर सूर गत्ताइं ॥
उग्गं तो रवि मानं। यों रत्ताइ रत्तयो मुषयं ॥ छं० ॥ ७५५ ॥

राजा का कहना कि उसे मार कर क्या करागे।

दूहा ॥ सत्य सु तुम्भ कह्यौ सु सब। सुभट भट्ट बड़ भृत्य ॥
क्यों न जाइ जीवत घरह। कहा करौगे मृत्य ॥ छं० ॥ ७५६ ॥

आताताई का कहना कि उसे युद्ध में खंड खंड कर ही दूंगा।

छंद भुजंगी॥ तबै उच्चर्‍यौ अत्तताइ अभंगं। सज्यौ गैन सीसं जुर्‍यौ जुद्ध रंगं॥
इनों याहि भंजों सु गंजो पलानं। करों षंड षंडं जु मंडै बलानं॥
छं० ॥ ७५७ ॥

इसी प्रकार गुरुराम की आज्ञा होने से घोर युद्ध का होना।

तबै गज्जि क्रम्यो गुरुं चाहुआनं। अगे जोगिनी जग्गि क्रम्यौ गुरानं॥
क्रम्यौ सथ्थ जद्दो स जामानि तामं। दुअं बह्व हुल्ला चले बंध ठामं॥
छं० ॥ ७५८ ॥

मिली रारि अंकं दुअंकं प्रमानं। परे जादवं राइ अरु चाहुआनं॥
कहै भूलि भारत्थ इत्तं सपूरं। उठे कंदलं हक्कि ते कौन सूरं॥
छं० ॥ ७५९ ॥

नरं रक्त बीजं बिनं केन दिट्ठं। इतैं इक्कि सामंत की बुंद उट्ठं॥
मिले घाइ घायं असी पंगदायं। मिलौ रौठ आवद्ध सावद्ध घायं॥
छं० ॥ ७९० ॥

परे सीस भारं चक्कआन धारं। मनो इम्भ झंकोर अंबुज झारं॥
गजं वाज तुट्टं परे षंड षंडं। नचंतं पिनाकी करं सज्जि दंडं॥
छं० ॥ ७९१ ॥

कटे तुच्छ हड्डं सु मंसं निमंसं। परे सूर सुझ्झेति मध्यं उतंसं॥
तिनं सत्त नामं जुअं जू वषानं। रठं निठ्ठुरं कन्ह वर वीर आनं॥
छं० ॥ ७९२ ॥

तहां अत्तताई रु गोविंद मानं। उठे इक्कि हाकं सु पज्जून पानं॥
रघूवंस भीमं तिनं नाम आनं। परीहार नन्हं तिनं नाम ठानं॥
छं० ॥ ७९३ ॥

इते उग्गरे कंदलं चंद कब्बी। मनों देषियं जानता ओति छब्बी॥
परे पंच रायं ढहे राज सत्तं। मुरं पंच रा हत्त मा वेद हत्तं॥छं०॥७९४॥

दुहुं पष्य लग्गे तिनं नाम आनं। तिनं जाति चंदं रु सूरं बषानं॥
पऱ्यौ भूमि रघुबंस परताप राजं। परयौ राव चालुक्क ता जैत लाजं॥
छं० ॥ ७९५ ॥

पऱ्यौ दलपती राउ दल सब्ब संध्यौ। पऱ्यौ कन्ह राजा दलं नेत बंध्यौ॥
झंडा गहि वीरं पऱ्यौ राज षीची। जिने कित्ति लच्छी तियं लोक सींची॥
छं० ॥ ७९६ ॥

पऱ्यो जावलौ राव सारंग सूरं। तिने झग्गरीं अच्छरी छंडि हूरं॥
पऱ्यौ दाहिमा देव मिलि धार पंती। करै अंत कंती विराजै सुंदती॥
छं० ॥ ७९७ ॥

पऱ्यौ किल्हनं राव मालहन हंसं। तुथ्यौ सार धारं मिल्यौ हंस बंसं॥
पऱ्यौ जंगली राव दहिया नरिंदं। न्रपं कित्ति भष्षौ भषी कित्ति चंद॥
॥ छं० ॥ ७९८ ॥

पऱ्यौ टांक सूरं मिल्यौ सूर मंदे। मिल्यौ सार धारं अमं डंड षंडे॥
षथ्यौ धार धारं धनी धार नाथं। मुकौ मोह माया लई कित्ति हाथं॥
छं० ॥ ७९९ ॥

पर्‍यौ राव मोरी मुरयौ अव्व सथ्थं। मनं पाइ चलै चलै हथ्थ वथ्थं॥
परे सूर हक्केव धक्के कलेवं। सिरं अुद्ध आनुद्ध देषंत देवं॥
छं०॥ ७७०॥

करे जोगिनी डक्क हक्कं गहक्कं। गजै वीर सूरं सु आवद्ध थक्कं॥
चलै श्रोन अंमान पूरं प्रनारं। अदभ्भूत माया न रच्यौ सु भारं॥
छं०॥ ७७१॥

तवै अत्तताई लग्यौ लोह रस्सं। भगी फौज कमधज्ज दिस्सं विदिस्सं॥
परे सेत सेते न थानं सु दिस्सं। लगै अच्छरी माल नभ्भं सु जिस्सं॥
छं०॥ ७७२॥

अनंछित्त अंगं बरं अत्तताई। भई जीत चहुआन प्रथिराज राई॥
छं०॥ ७७३॥

रण में अगनित सेन को मरा देख कर निद्ढ़र का कमधज्ज से कहना कि अब तूं किस के भरोसे युद्ध करता है। पृथ्वीराज तो शशिवृता को लेकर चला गया।

दूहा॥ परे सुभर दोजन दल। निद्दुर देष्यौ बंध॥
कोन भुजा बल जुध करै। सुनि कमधज्ज अमंध॥ छं०॥ ७७४॥
बाला लै प्रथिराज गय। गहिय बग्ग कमधज्ज॥
रोस रीस विरसोज भय। रह बाजे अनवज्ज॥ छं०॥ ७७५॥

पृथ्वीराज शशिवृता को लेकर आध कोस आगे जाकर खड़ा हुआ।

कवित्त॥ अद्ध कोस न्टप अग्ग। वीर ठढ्यौ करि ठट्टौ॥
मद समूह गजराज। छंडि पट्टै बल गट्टौ॥
लाज बंधि संकरिय। वीर बंध्यौ सु अट्ट कसि॥
अरिन वीर छंडै न। कन्न मंडै दिलीय दिसि॥
मनमत्थ महावत बंधि अति। मन मत्तौ उन को धरै॥
घन घाइ रुधिर छुट्टे परे। अमर पुहप पूजा करै॥
छं०॥ ७७६॥

अपनी और कमधज्ज की सब सेना मरी देख कर यद्दव का हार मानना और सब डोली पृथ्वीराज को सौंप देना ।

षूब राज प्रथिराज । षूब जै चंद बंध बर ॥
षूब सूर सामंत । षूब न्टप सेन पंग बर ॥
षूब सेन ढंढोरि । षूब झोरी करि डारिय ॥
षूब षेत विधि गाम । बानगंगा पथ झारिय ॥
आसेर आस छंडिय न्टपति । विपति सपति जानीय भर ॥
सुठिहार राज प्रथिराज कौ । धरे सबह चौं डोल घर ॥छं०॥७७७॥

पृथ्वीराज ने तैंतालीस डोलियों सहित बीच में शशिवृता को ले कर दिल्ली को कूच किया ।

चौपाई ॥ गौ ढिल्ली ढिल्ली प्रति बीर । सूर घाइ जर्जर किय श्रीर ॥
किति सजी त्रैलोक प्रमानं। अंग कियौ जर्जर चहुआनं॥छं०॥७७८॥
दूहा ॥ डोला ग्यारहु दून दस । एकादस तिन मद्धि ॥
मद्धि अमोलिक सुंदरी । काम विरामन संधि ॥ छं० ॥ ७७९ ॥
डोला घाइन बंधि न्टप । वजि निसान न्त्रिघोष ॥
सब सामंत समंध चढ़ि । विच सुंदरी [1]अमोघ ॥ छं० ॥ ७८० ॥

शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज तेरस को दिल्ली पहुंचे ।

गाथा ॥ विच सुंदरी अमोघं । दोषं नैव बालयो मद्धिं ॥
तेरसि गुन अधिकारी । संपत्त राजयो ग्रेहं ॥ छं० ॥ ७८१॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा वर्णन ।

दूहा ॥ इन परंत पत्तौ सु ग्रह । सुबर राज प्रथिराज ॥
हय गय दल बल मथत बर । रंभ सजीवन काज ॥ छं० ॥ ७८२ ॥

चामुंडराय की प्रशंसा ।

सह जहौं चामंड बर । बर बर जुड विरुड ॥
सुड करै सामंत कौ । बर धीरज्ज सुबुड ॥ छं० ७८३ ॥

(१) ए. कृ. को.-अदोष ।

युद्ध में कमधज्ज और यद्दव को जीत कर शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज दिल्ली जा पहुंचे।

चाहुआन चतुरंग जिति। निगम बोध रहि राज॥
बर शशिवृत्ता जित्तिगौ। धाम सु ढिल्ली साज॥ छं०॥ ७८४॥

शशिवृता के साथ विलास करते हुए सब सामंतों सहित पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करने लगे।

गाथा॥ तपय सु नरपति ढिल्ली। दीह दीहं पहरे राजं॥
जं मंगै क्रत कामं। सा देवं सोइयं देहिं॥ छं०॥ ७८५॥
दीहं पासा रूवं। सारूवं भूपयो सब्बं॥
जे नष्षै ते मंगै। देवानं देवयो दीहं॥ छं०॥ ७८६॥

दूहा॥ सारिन सालै पंस बर। सारि पंस बर भोग॥
सुबर सूर सामंत लै। करि ढिल्ली प्रति जोग॥ छं०॥ ७८७॥

इस जय के प्राप्त होने से चहुआन का यश और बादशाह से बैर बढ़ा।

जं जं जस लद्धौ सुबर। बैर न्रपति सुरतान॥
सुबर बैर बर बढ्ढयौ। सुबर जित्ति चहुआन॥ छं०॥ ७८८॥

पृथ्वीराज शत्रुओं को पराजय कर के अदंड बादशाह को दंड दे कर नीति पूर्वक दिल्ली का राज्य करता था।

कवित्त॥ भई जीति चहुआन। अरिय भंजे अभंग भर॥
जं जं सूर बषान। देव नंषैं सुमन्न वर॥
लै शशिवृत्ता राज। अप्प दिल्लीय संपत्तौ॥
अति तोरन आनंद। चित्त रत्तौ मन मत्तौ॥
अरि अवनि कोन मंडै मनहु। षग्ग दाग अरि षंडइय॥
कवि चंद दंद दारुन कयहि। इक अडंड करि डंडइय॥ छं०॥ ७८९॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासक शशिवृता कथा नाम पचीसमो समय संपूर्ण॥

———:0:———

अथ देवगिरि समयौ लिख्यते ।

(छब्बीसवां समय ।)

जयचन्द की सेना ने देवगिरि गढ़ को घेर रक्खा ।

दूहा ॥ ना चल्लै कमधज्ज ग्रह । गढ़ घेर्यौ फिरि भान ॥
मानहु चंद सरद्द [1]जिम । गिर नछिच [2]परिमान ॥ छं० ॥ १ ॥

कुंडलिया ॥ गढ़ घेर्यो फिरि भान कौ । दूत सु दिल्लिय मुक्कि ॥
[3]यह अजोग संजोग करि । अदिन कज्ज हम रुक्कि ॥
अदिन कज्ज हम रुक्कि । प्रान इन कै दुष मुक्कै ॥
इन समान भर सत्त । जीव जावंतै धुक्कै ॥
* प्रथम पुंजा लष्षिन । कुंआरि ससिव्रत्त धीर बढ़ ॥
धन भर लज्ज सुबंध । घेरि सह बीर राजगढ़ ॥ छं० ॥ २ ॥

राजा जयचन्द के भाई ने कन्नौज को और देवगिरि के राजा ने पृथ्वीराज के पास सब समाचार भेजा ।

दूहा ॥ इन कग्गद चहुआन पै । उन मुक्कलि [4]कनवज्ज ॥
दुहूं बीर कविचंद इह । कै बज्जै कै बज्ज ॥ छं० ॥ ३ ॥

दूत ने लज्जा के साथ जयचन्द का पत्र दिया । जयचन्द के पूछने पर दूत ने युद्ध और पराजय का हाल कहा ।

---

(१) ए. कृ. को.-दिन । (२) ए. कृ. को-परजानि ।
(३) ए. कृ. को.-ग्रह । (४) ए.कृ.को.-कमधज्ज ।

* छंद २ की अंतिम दोनों पंक्तियों का चारों प्रांतयों में समान मूल पाठ इस प्रकार है—"प्रथम पुंज लष्षिन कुँआर कुँअर ससिवृत सुधीरह । धन भर लज्ज सुबंध राजगढ़ घेरि सबीरह"—यह कुँडलिया छंद के निगम से विरुद्ध पड़ता है परंतु यह कवि की भूल नहीं है, लेखकों की असावधानी या भूल से ऐसा हुआ है क्योंकि उन्हीं शब्दों के हेर फेर से शुद्ध पाठ होगया है और अर्थ में भी किसी प्रकार की त्रुटि नहीं हुई ।

कवित्त ॥ सुबर बीर कग्गदह। पंग करि अप्पि सु जंपिय ॥
बहु दुचित्त संजुत्त। लज्ज आजुत्त प्रकंपिय ॥
सुर सुकीय कर पंग। नैन नीचे न्टप दिट्ठौ ॥
तब पहु पंग नरिंद। कुशल जानौ न गरिट्ठौ ॥
पुच्छी सु बात इह करिय तम। जानि सोक काह उप्पनिय ॥
संग्राम तेज भंजन भिरन। मरन कहौ मारन पुनिय ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ दुज्जन दवने पीर के। वज्जै पै बर केक ॥
भर भौरी रहि अंक के। मरन सरन के केक ॥ छं० ॥ ५ ॥

कुंडलिया ॥ तब पहु पंग नरिंद प्रति। दूत सु उत्तर जप्पु ॥
इह अपुब्ब कथ सुनि न्टपति। जीतें हार सु अप्पु ॥
जीतें हारि सु अप्पु। देषि कह्यौ पहुआनं ॥
ढिल्ली वे अधकोस। बीर मुक्यौ तिहि थानं ॥
आइ सेन घन घाइ। अब्ब भर पारि असुर जब ॥
दिषि निद्दुर कमधज्ज। वग्ग सेना पंचय तब ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूहा ॥ देवग्गिरि गढ़ घेरि फिरि। [1]हैं मुक्यौ न्टप काज ॥
मतौ मंडि रा पंग पै। वे [2]पुकारि प्रथिराज ॥ छं० ॥ ७ ॥

चौपाई ॥ इह कहंत न्टप पंग सु अष्षी। वियौ दूत न्टप अंषन दष्षी ॥
दुचित चित्त मुक्की बर बानी। कुसल बीर कमधज्ज न [3]जानी ॥
छं० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ भयौ स्वेद सुर भंग भौ। नैन झलक्यौ पानि ॥
कै फिरि दंद सु उप्पनौ। कै बर बंधव हानि ॥ छं० ॥ ९ ॥

कवित्त। [4]कही कुसल तन दूत। किति कुसलत्तन भग्गिय ॥
जेनि रहे कमधज्ज। रहे सो अभह लग्गिय ॥
जे निकलंक ग्रह आदि। कलँक कालंक सु कुप्पै ॥
[5]दै विधान न्त्रिम्मान। कौन मेंटै को थप्पै ॥
भष जोइ सिंघ जम्बक हरै। काकलंब पप्पील गहि ॥
जद्दिनह भई भावी विगत। जिम रक्खै तिमि तिमि सुरहि ॥ १० ॥

(१) कृ.-होन। (२) मो.-पुकारि। (३) ए. को.-आनी।
(४) मो.-कहै। (५) मो.-दो।

कवित्त । यह कहंत पहु पंग । दूत तिय आन सपत्तौ ॥
वाचा शीतल जंपि । अंग आरम्भ न सत्तौ ॥
चढ़ि नरिन्द कमधज्ज । तौन तन सज्जन वारौ ॥
मिलि यहव चहुआन । बीर परिहै ससि भारौ ॥
दाहिम्मराय चामुंड सौं । सह साथ नृप थप्पयौ ॥
ते काज राज सम्हैं सुमति । लिषि कग्गद महिं अप्पयौ ॥ ११ ॥

जयचन्द की महा क्रोध से कहना कि पृथ्वीराज की कितनी सेना है । उसे मेरा एक मीर बंदा जीत कर बांध सकता है ।

क्रोध भरिय कमधज्ज । काक वर बोल उचारै ॥
जो भज्जे ग्रह अपन । कौन अप्पनी विचारै ॥
अरे सुनहु भर सुभर । जुझ्झ मग्गौ पति छंडै ॥
वेचि बीर गजराज । बाद अंकुस कौ मंडै ॥
चहुआन सेन किन्तिक है । एक मीर बंदा बधै ॥
लभ्भयौ राज नृप अप्पुनह । लोह धार मो सम सधै ॥ छं० ॥ १२ ॥

जयचन्द ने मंत्रियों से मत करके अपने स्नेही राजाओं को सेना सहित आने को पत्र भेजा ।

कुंडलिया ॥ सुनि सुमंत्त मंत्रिय समत । कुमति मंत क्यों मंत ॥
वचन भेद जिहि हम कही । सोइ गही बल तंत ॥
सोइ गहि बल तंत । बल न अप्पन पहिचान्यौ ॥
उदो राग उच्चर्‍यौ । संध तेता करि मान्यौ ॥
उननें कुंवरी [1]वरी । तिनं कु करै तिन गुन्नी ॥
[2]सु वरि एक वुल्ले दुवान । सो सब सह सुन्नी ॥ छं० ॥ १३ ॥

पत्र भेज कर अपनी तयारी की आज्ञा दी । सवारी के लिये घोड़ा तय्यार कराया ।

कवित्त ॥ वर अथवंत सु दीह । आइ चतुरंग सपन्नो ॥
मझ्झ महल नृप बोल । बंधि कग्गद कर लिन्नो ॥

(१) मो.-मुरी । (२) कृ-सुवरन ।

निसा मंत उप्पाइ। सहस नव लिषि बर पट्टै ॥
इह भत्त सगपन्न। सु भत सहु फट्टत पट्टै ॥
वज्जित्त निघोष अरि घोष पर। छोरि पंग दिष्षे सु हय ॥
रवि रथ्थ तथ्थ आवहि जु सम। [1]गात गिरव्वर नाग सय ॥ छं० ॥ १४ ॥

घोड़े की प्रशंसा वर्णन।

भुजंगी ॥ [2]तियं फेरियं अश्व दीसैति पंगा। तिनं देषते छँाह कंपंत अंगा ॥
तिनं ओपमा चंद बरदाइ कैसी। दिषै तीर मानों छुट्टै अंग तैसी ॥
छं० ॥ १५ ॥
पयं मभ्भ मंडै तिमं चित्त इष्षं। पयं पातुरं चातुरं तो बिसष्षं ॥
षुरं वज्जतें भुम्मि [3]धुज्जे धसक्कै। फनं फेलि से संमुहं फूंक सक्कै ॥
छं० ॥ १६ ॥
द्रुमं सीस दीसै सु केकी पुछंगी। मनों मंडियं नील[4]कंठं उछंगी ॥
तिनं भाल संमेलयं धाट झुभ्भै। [5]छिलै पूर ऐसें सरित्तान सुभ्भै ॥
छं० ॥ १७ ॥
डुलै कंन नाही छुरी कास ग्रीवं। मनो देषियं सीष निर्वात दीवं ॥
दिषै कव्वि चंदं सुरंगं सु सेसी। दुहं पष्ष नाहीं तिनं षोरि कैसी ॥
छं० ॥ १८ ॥
सुभै सालिग्रामं समानंत अंषी। तिनं पूजिवै चित्त चित्तंत नंषी ॥
पियें अंजुली नीर दीसै उपंगा। फिरै कच्छ रचीन में रत्त गंगा ॥
छं० ॥ १९ ॥
दिसानं दिसानं सबै जाति राकी। कही चंद कब्बी उपंमा सु ताकी ॥
छं० ॥ २० ॥
[6]कवित्त। चष्षिय नयन रुद्र कै। उड्डि घन अग्गि तिनंगा ॥
तास मध्य ते प्रगटि। तेजवंता सु तुरंगा ॥
भुअपत्ती संग्रहे। पीठ मंडै पल्लानं ॥
अंबर करत बिहार। देषि कोप्पौ मघवानं ॥

(१) ए. जात। (२) ए. नियं।
(३) कृ.-धुजे। (४) मो.-कंठी।
(५) ए. दिले। (६) २१ छंद मो. प्रति में नहीं है।

प्रगट्टि नषि दिय वज्ज सों। गयन गवन तव सिद्धि गय॥
कहि चंद मनहु [1]पहुपंग तें। फेरि आज पष्षरत हय॥ छं० ॥२१॥

जयचन्द घोड़े पर चढ़ा। तीन हजार डंका निशान और तीस लाख पैदल सजकर झट से तय्यार हुआ।

चढ़त पंग हय सज्जि। सज्जि गजराज सज्जि [2]नर॥
यों जानी सुर असुर। करै कमधज्ज बिया पुर॥
वजि न्त्रिघोष चिय सहस। मीर बंदा दस लष्षिय॥
तीस लष्ष पाइक्क। सुबक पारंक विअष्षिय॥
जू सन विराग बल बीर सजि। दल सज्ज्यौ गंजन अरिन॥
पहु पंग बीर परतष्षि लै। किरन सु सम सज्जी किरन॥छं०॥२२॥

जयचन्द ने प्रतिज्ञा की कि जादव और चौहान दोनों को मार कर तब मैं राजसूय यज्ञ करूंगा।

दूहा। इह प्रतंग पहुपंग लिय। बधि जद्दव चहुआन॥
जग्य अरंभ जु मंडिहौं। ता पच्छै परवान॥ छं० ॥ २३ ॥

सेना की शोभा वर्णन।

कवित्त। चढ़त पंग मिलि सेन। पूर जिम नदिय मिलत चिन॥
वज्जि बीर वा तूल। जत्थ कट्टयह उड्डै पिन॥
एकट्ठां फुनि जम्म। तुट्टि जू जू फल लद्धौ॥
दैव क्रम्म करि जोग। आइ एकट्ठ अरुद्धौ॥
बंधेत काल डोरी तनै। छूटि धार घन मिलहि [3]तिम॥
आहत्त क्रम्म लिष्षे बिना। मिलै न पंचौ [4]पंच [5]जिमि॥छं०॥२४॥

जयचन्द्र की स्त्री का विरह वर्णन।

दूहा। इह अवस्थ प्रहु पंग की। बाल अवस्था कौन॥
जियन आस नहिं सांस तन। डरहि देषि [6]अलि औनइ॥छं०॥२५॥

---

(१) ए.को.-पङ्गु। (२) ए.-हय। (३) ए. कृ.-जिम।
(४) ए. को.-पंप। (५) ए. कृ. को. जिम। (६) ए. कृ. मो.-अति।

गाथा। बाले मलयं चंपं। दै दै चंपत उरह [1]उरहीती ॥
तिन विपरीतं बामं। कामं रस जम्मायौ घनयौ ॥ छं० ॥ २६ ॥

भ्रमरावली ॥ बढ़ि बाल वियोग सिंगार छुब्यौ।
सुख कौ अभिराम कि काम लुब्यौ ॥
घन सार सुगंध सु घोरि घनं।
बनि आनि प्रकीन कपान बनं ॥ छं० ॥ २७ ॥
तल पत्ति तजे तल पत्ति मनों।
बहु बाढ़िहै अंग अनंग घनों ॥
नव चंदन अंग अनंग जरै।
दिप दीपक भौन में भान बरै ॥ छं० ॥ २८ ॥
लगि मोदक से अन मोदकयं ॥
दिसि प्राचिय देषि परी धुकयं ॥
प्रति वृत्ति सरत्ति यपी पयनं।
उमगे तहां अंसुअ द्वै नयनं ॥ छं० ॥ २९ ॥
घन ज्यों तन छंडि न उत्तर [2]देइ।
लगि कानन नाम पिया अलि लेइ ॥
कछू बर भौंहन उत्तर देत।
मनौं दस [3]वस्थन दंग अचेत ॥ छं० ॥ ३० ॥
चषयं सुभि चंचल रंजनयं।
सु मनो गहि मुत्तिय षंजनयं ॥
बिय भाव सु अंसु अनंदि लता।
हर नंषिय रष्ष तिगी पतिता ॥ छं० ॥ ३१ ॥
तिन अंग अचेतकिता भ्रमयं।
दुष दूषन भूषन से तनयं ॥
दिषि दिष्षि अली अलिके अकारें।
लय सास उसासन तानि परे ॥ छं० ॥ ३२ ॥
पन प्रान प्रियान प्रयान पुटं।
लगि साहस एक घटी न घटं ॥

(१) ए. कृ. को.-उरहांति। (२) मो.-देत, लेत। (३) ए. कृ. को.-अयस्थन।

सु'बनं सब तैं विमन' मन तैं।
निज निग्रचल 'रैनि गई गिनतैं ॥ छं० ॥ ३३ ॥
चलि सीत सुगंध सुमंदय बात।
मनों लगि पावक अंभन जात ॥
डुलावत अंचल शीतल काज।
लगै मनों तीर 'तरुन्निय जाज ॥ छं० ॥ ३४ ॥
भुअंगम भोजन अंगम नारि।
करै करुना रसकी उनिहारि ॥
सबै सु सषी मिलि पूछत ताहि।
मनों जड़ श्रोत सुनै रस जाहि ॥ छं० ॥ ३५ ॥
चल्यौ कुटिलं रथ चित्तह धाइ।
'सु जे मरविंद समादक लाइ ॥
इनं रिति नारि न मुक्कइ नाइ।
लगे विहजानि कुमुद्दिन राइ ॥ छं० ॥ ३६ ॥
नदीय निवानं 'अपीत सयं।
नव पंथय सुभ्भय बुभ्भ कयं ॥
बजि मारुत तत्त समीत प्रकार।
उड़ै घन भ्रम्म बहै अनिवार ॥ छं० ॥ ३७ ॥
करै तरु तुंग गई सुधि धाम।
तजी पहु पंग नरिंद सु वाम ॥ छं० ॥ ३८ ॥

जयचन्द की चढ़ाई का वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ पंग कमधज्ज राय। सो छिन्न भिन्न डम्मरित छाइ ॥
पद्धरी छंद बरनो सुरंग। लहु बरन बीच विचि अति सुरंग॥छं०॥३९॥
दलकंत ढाल तरवर प्रमान। हलके हलंत गज नग समान ॥
अपसुकन सुकन 'चिंतहि न चित्त। 'न्निम्मान वत्त गुन धरत तत्त॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए. को.-सुथानं। (२) ए. को.-नैनि। (३) मो.-तरुनीत।
(४) ए..सजे। (५) ए. को.-अपीन।
(६) मो.-मन्नाहि। (७) ए.-न्रिम्मान, न्रिमान।

कद्दवत्ति सलिल जहां सलिल पंक। चित्त चित्त बकं जे करें कंक॥
चल्ले नरिंद अरि पुब्ब गाव। भुमियां ससंक सब लगत पांव॥छं०॥४१

गढ़ घेरि पंग किय अप्रमान। मानों कि मेर पारस्स भान॥
पंगह सुबीर गढ़ करि गिरद्ध। सर्वरी परस चंदा सरद्द॥छं०॥४२॥

चढ़ अमरसीय चढ़ि अमरसिंघ। गहिलौत स नरवर लहु सु वंध॥
पंगुरा सुभर लगि उंच गत्त। जाने कलंक लंगूर यत्त॥छं०॥४३॥

जयचन्द का दक्षिण की ओर चढ़ चलना।

कबित्त॥ दिशि दष्षिन को बलिय। गयौ कमधज्ज चित्त करि॥
यों फिरंत तहँ सूर। क्षित्त आगस्ति पान फिरि॥
पंच तत्त बिय बिरह। छुट्टि लगो सु पंच पथ॥
तोइ काज हम करैं। चरन सेवकह जंपि तथ॥
तो अंब प्रपो अब जानि बस। जस क्रीड़ा धर उग्गनह॥
कच्छू सुजोसि बलि जोति तन। छबि सरुक भेदै मनह॥छं०॥४४॥

हाथियों की शोभा वर्णन।

गज्जनेस कमधज्ज। दान बरषंत बीर सजि॥
नव अंगुर इक विहथ। ह्रर तन इक प्रवाह लजि॥
सिरो सत्त सोभै। बिसाल सिंदूर विराजै॥
मनु कज्जल गिरि शिखर। शूर मंगल तन साजै॥
सज्जिय अनेक न्रप पंग ने। गामी तर गोड़न बियौ॥
जाने कि अकासह भान दिन। ऐ वसट्ट गिर पय दियौ॥छं०॥४५॥

दूहा। रंभ ऊन तट पंपुरी। लग्गि वधू सित माल॥
भंग सुता की पंति तें। बढ़ी विरह बनमाल॥छं०॥४६॥

राजा भान का यह समाचार पृथ्वीराज को लिखना।

बान पंग पहु पंग परि। मिली कंन की कान॥
इह अपुब्ब बर भान सजि। दै कग्गद चहुआन॥छं॥४७॥

उक्त समाचार पाकर काम क्रीड़ा प्रवृत्त पृथ्वीराज का वीरता के जोम में आजाना ।

रति पति पत आलुझिझ घन । तिहि कग्गद मुकि दूत ॥
तजि सिंगार भौ [1]बीर रस । जिमि आयौ बर [2]धूत ॥छं०॥४८॥

बाल कमोदनि पीय ढिग । ससि समान रस पान ॥
बर बिलोकि जो देषिये । तौ [3]चहुआनह भान ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कवित्त ॥ लाज सरस चहुआन । जोग उज्जै जुध मुत्तम ॥
चियन पाइ दिषि काम । बेर दिष्षे जु बीर सम ॥
घरि इक पंग नरिंद । कलंक उनमि करि देषै ॥
इत्त सु जद्दव राइ । सजन अप्पनौ सु लेषै ॥
सुरतंत स्वामि अभिलाष रिन । ग्रव्व राज मद्दह न्टपति ॥
मार सु नरिंद संकर भयौ । अति मिकलंकह चित दिपति ॥ ५० ॥

इधर शहाबुद्दीन की चढ़ाई उधर जयचन्द की राजा भान से लड़ाई देखकर पृथ्वीराज ने चित्तौर के रावल समर सिंहजी को सब वृत्तान्त लिख कर सहायता चाही और सम्मति पूछी।

दूहा । घरी एक बंधौ सुनी । पै मुक्कलि प्रथिराज ॥
बीय सोम अप्पन चढ़न । लै दीनी रस पाज ॥ छं० ॥ ५१ ॥

चढ़त गाज प्रथिराज को । चढ़ अवाज सुरतान ॥
समर सिंघ रावर दिशा । दै कग्गद चहुआन ॥ छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ दिल्ली धर गोरी नरिंद । बंध पल्हन प्रपत्ती ॥
षां हुसेन कै बैर । अनगपालं सु मिलत्ती ॥
तिर भर जैल गंभीर । इसम है गै कमधज्जी ॥
देवग्गिरि दिमि भान । बीर पावस जिम सज्जी ॥

(१) ए.-बार ।　　(२) ए. को.-धत्त ।　　(३) मो.-चहुआने ।

धर लई सब्ब साहिब जुरत । भान न उप्पर मुकही ॥
चित्रंग राज रावर समर । इह अवसान न चुकही ॥ ५३ ॥

समर सिंह ने पत्र पढ़कर कहा इस समय पृथ्वीराज को दिल्ली में अकेले न छोड़ना चाहिए । मेरे साथ अपने सावंत और अपनी सेना दें मैं पंग से लड़ लूंगा ।

बंचिय कग्गद समर । समर साहस उच्चारिय ॥
तव सुमंत बर न्त्रपति । मंत जानै न विचारिय ॥
हम सुमंत जो करै । राज दिल्ली मति छंडौ ॥
इह गौरी सुरतान । अनगपालह फिर मंडौ ॥
सामंत [1]देहु हम संग बर । रन रुंधै पहुपंग नर ॥
आरंभ मद्दन रंभह मतौ । इह [2]सुमंत कुसलंत घर ॥ ५४ ॥

समरसिंह की सलाह मान पृथ्वीराज ने अपने सावंत चामुंडराय और रामराय बड़गूजर के साथ अपनी सेना रवाना की ।

कुंडलिया ॥ समुद रूप गोरिय सुबर । पंग ग्रेह भय कीन ॥
चाहुआन तिन बिबध कै । सो ओपम कवि लीन ॥
सो ओपम कवि लीन । समर कग्गद लिय हथ्थं ॥
भिरन पुच्छि बट सुरँग । बंधि चतुरंग रजथ्थं ॥
समर सु मुक्कलि सोर । लोह फुल्यो जस कुमुदं ॥
रा चावँड जैतसी । रा बड़गुज्जर समुदं ॥ छं० ॥ ५५ ॥

रावल समरसिंह ने अपने भाई अमरसिंह को साथ लिया । ये लोग देवगिरि की ओर चले ।

दूहा । अमरसिंघ बंधव समर । समर समोकलि दीन ॥
ते सामंतन संग लै । देवग्गिरि मग लीन ॥ छं० ॥ ५६ ॥

इम सु राज बहुमान नें। राषे घेरी राइ ॥
पंग [1]ओट वर कोट [2]मैं। देवग्गिरि गढ़ आइ ॥ छं० ॥ ५७ ॥

जयचन्द को गढ़ घेरे देख चामुंडराय ने चढ़ाई की इधर राजा भान मिला।

कवित्त ॥ देवग्गिरि गढ़ घरि। ढोह मंड्यौ बर पंगं ॥
[3]रन निघोष प्रमान। बीर बाजे रन जंगं ॥
चिहुदिसान उड़ि चक्र। उनैभौ झंझर लग्गा ॥
द्वादस दिन रन मंडि। राव चामँड भिरि भग्गा ॥
सामंत पंग चित्त नृपति। छल सज्जे बलहारियां ॥
दाहिम्म राव दाहिर तनय। रत्ति बाह बिचारियां ॥ छं० ॥ ५८ ॥
मिलि जद्दव चामंड। रत्ति वाहं संपन्नौ ॥
ओड्डज्जै सथ टारि। साथ टारिजै [4]अपन्नौ ॥
अंत साथ सो साथ। और सब साथ [5]सुपन्नौ ॥
कै भर तरकस बंध। थान मन [6]आकन्नौ ॥
जीवंत दान भोगइ समर। मरन तित्थरँभ [7]भिरन गति ॥
ए करै बात उभ्भैत नर। ता स राज मंडल [8]मिलति ॥ छं० ॥ ५९ ॥

राजा भान और चामंडराय की सेना का वर्णन।

हथ्थ हथ्थ सुझझैन। मेघ डंमरि झडि रज्जौ ॥
निशि निशीथ अंतरौ। भान उत्तरि सथ सज्जौ ॥
विज्ज बीर झलकंत। [9]पवन पच्छिम दिशि वज्जै ॥
मोर सोर पप्पीह। अवनि सक्रित घन गज्जै ॥
बढ़ी जु सिलह निशि सत्त मिलि। [10]धसिय पंग दरबार दिसि ॥
चामंड राइ दाहर तनौ। लरन लोह कढ्ढै ति रिसि ॥ छं० ॥ ६० ॥

राजा भान का मिलना देखकर जयचन्द का क्रोध करना।

---

(१) ए.-ओर। (२) ए.-इन।
(३) ए.-सुपंथं। (४) ए. कृ.को.-आकथ्य। (५) ए.-निरन।
(६) मो.-मिलनि। (७) ए.-भवन। (८) ए. कृ. को.-सधिय।

धसि नरिंद चामंड। कुह बज्जी रन जंगं॥
भर भग्गी चौकी समूह। लग्गा रन जंगं॥
रन नरिंद [1]वाहन कुआर। सारह हसि भिल्लै॥
पंग टटी बोछार। जितै भिंजे तित मिल्लै॥
आरिष्ट काल बज्जत घरी। उघरि मेह घन सार जल॥
जग्गयौ जोध कमधज्ज अब। मनों सिंघ जुग्यौ सु छल॥छं०॥६१॥
सब [2]रावत उच्चरे। राज जोरी बर पंगं॥
जिन [3]चंपे बल पुंछ। रोस जग्यौ न्रप [4]दंगं॥
नाग पत्ति कोपत्ति। अप्प बर कन्ह जगायौ॥
राइ सुमनि बित्तए। जम्म जुग राज झुकायौ॥
उच्चरे बीर कुट वार रिन। रन रुंधया अप डिंभरू॥
संभरे बीर कमधज्ज कौ। भये रोम गति विम्भरू॥ छं०॥ ६२॥

अमरसिंह ने जयचन्द के हाथी को मार गिराया।

अमरसिंह आहुट्ठ। नाग [5]मुंष्षी बर कट्ठी॥
शीश शोभि गजराज। नाग मुष नागिनि चट्ठी॥
हाड हटक्की हथ्थि। बीर षच्यौ कर सद्दे॥
कै हथनापुर चन्द। तीर षंचै बलिभद्रे॥
दंती सुभग्गि धर पर पर्यौ। इल षुच्यौ दंत अद्धकवि॥
सिंघ हति भूमि बर सुभ्भई। मिलत भूमि हथ्थह तिरव॥ ६३॥

हाथी के मारे जाने पर जयचन्द का क्रोध करना और स्वयं टूट पड़ना।

हत्ति काल जम जाल। काल रुध्यौ चामंडह॥
सुनत पंग रस भग्गं। सोस लग्यौ ब्रह्मंडह॥
रन रुंध्यौ लहछरू। मीन गति [6]नीर प्रमानं॥
जग्गि बीर पहुपंग। तोन पारथ्थ प्रमानं॥

(१) कृ.-प्रति में "पंगु पुत्र" भी पाठ ऊपर दिया हुआ है।
(२) ए.-राजन, रावन। (३) ए.-जंप। (४) ए.-दंसं।
(५) ए.-मुठी मुट्ठी। (६) मो.-हीन।

जग लोह कोह कढ्ढिय सु असि। भिरत न अपु अरि तक्कर ॥
रहि जाम एक निसि पच्छली। चढ़ि विह्लर हय नव्वर ॥छं०॥६४॥

रसावला ॥ पंग जंगं फुलं, कुह मत्ती हुलं। सार तुट्टै पलं, षग्ग भग्गे षलं॥
छं० ॥ ६५ ॥

हाल हाला हलं, सोइ वित्यौ तलं। गिद्ध कोलाहलं, अंत हंतो रलं॥
छं० ॥ ६६ ॥

उद्धपौयं छलं, चर्म अस्तिं तलं। वीर निद्धोषलं, सिद्ध ठट्टे रलं ॥
छं० ॥ ६७ ॥

संभु मालं गलं, ब्रह्म चित्ता चलं। भूत वित्ता तलं, पथ्थ पारथ्थलं॥
छं० ॥ ६८ ॥

देव देवा नलं, फट्टि फारक्कलं। घाय छज्जे घलं, सूर घुम्मे रलं ॥
छं० ॥ ६९ ॥

तारचौ सठ्ठलं, बाइ भूत मलं। रीति पछ्छी षिनं, तार आयासनं ॥
छं० ॥ ७० ॥

सूर उग्यो ननं। कोर चट्टे फनं ॥ .... छं० ॥ ७१ ॥

लड़ाई खतम होने पर जयचन्द का अपने घायलों को उठवाना।

दूहा ॥ रन मुक्के गो भान चढ़ि। सब सामंतन सथ्थ ॥
भृत्त बीर पहु पंग ने। घत सु ढुक्यौ तथ्थ ॥ छं० ॥ ७२ ॥

इस युद्ध में मारे गए सूर सामंतों के नाम।

कवित्त ॥ पन्यौ बंध गोइंद। नाम हरचन्द प्रमानं ॥
पन्यौ बंध नरसिंघ। रेह रष्षन चहुआनं
पन्यौ कन्ह पुंडीर। बीर जैचन्द सु जायौ ॥
पन्यौ सूर बाघेल। हक्कि कपि जिम बल धायौ ॥
चतुरंग सब्ब मिल्लिय वही। असिन ढार बहुगुज्जरे ॥
सामंत हथय बर बज्र सम। षेत सु ढुंढहि पंगरे ॥ छं० ॥ ७३ ॥

रणभूमि में जयचन्द के घोड़े की चंचलता और तेजी का वर्णन।

रिस छुट्यौ कमधज्ज। बोल बंका बर बोले ॥
ज्यौं बावन बल रूप। कुहर थानह बल मेल्है ॥
रावन पवय समान। काज कैलास झुलावै ॥
कै बलि बंधन पाज। द्रोन हनुमंत जु ल्यावै ॥
गिरिराज काज साइर मथन। कै अमरस मिल्लिय नहीं ॥
[1]नंषयौ अप्रव कमधज्ज नै। सो उप्पम कवि भाषहीं ॥
॥ छं० ॥ ७४ ॥

देवगिरि के किले की नाप और जंगी तैयारी का वर्णन।

मापि पंग गढ़ देखि। कोस द्वादस बर ऊंचौ ॥
दहति कोस विसतार। कोठ मरहट्ठ चिपंचौ ॥
नारिगोरि सा बन्नि। राज मंडी चावद्दिसि ॥
ढोह मंडि पाषान। तीर बरषंत मंच असि ॥
पावस्स मास बीतौ उभैं। जुरि कमधज्ज सु छंडयौ ॥
मंची सुमंच परधान नै। फेरि मंच[2] तब मंड़यौ ॥ ७५ ॥

जयचन्द का राजा भान को मिलाने का प्रबंध करना।

बल बंध्यौ कमधज्ज। किल्ह भंज्यौ भंभानं ॥
लग्गि चरन पहु पंग। बंदि लीनौ फुरमानं ॥
दूत भेद्यौ मंडि। द्रब्ब नंषै चावद्दिसि ॥
कछु सलोभ कछु मोह। मेलिह पर ध्यान पलहनिसि ॥
अप्पनौ साथ लै सिंघ तब। जियन मरन ते उद्दए ॥
जम जीव जार पंजर परै। कोइन कालि महि छुट्टए ॥ छं० ॥ ७६ ॥
संवत ग्यार सँजुत्त। अदिस उन लग्गिय पंचं ॥
मरन अग्गि जांनिय न। गोऊ पल्हन जो पंचं ॥
दिन नछिच रोहिनी। समय च्यालीस बिअग्गल ॥
मत्त बीर जद्दव नरिंद। भग्गी ग्रह भग्गल ॥
जग्गयौ धार धारह धनी। भोज कुंअर रन मंड कै ॥
सा भ्रम्म भ्रम्म छंडै नहीं। गो अभ्रंम छिति छंडि कै ॥ छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए.-अंषयौ। (२) ए.-सत्र।

इधर अमर सिंह का घोर युद्ध करना।

बज्जि कूह संमूह। अमर [1]उट्ठे समरं भिरि॥
षंड मुष्ष भौ कोट। समर बंध सुद्दे जुरि॥
रा चावँड जैतसी। राव बड़गुज्जर धाए॥
आहुट्ठे कमधज्ज। सार बज्जै सुरझाए॥
बर यंग जंग भज्जी सहर। लुथ्थि लुथ्थि आलुथ्थि परि॥
चहुने अरिय संग्राम भिरि। षट्ट सहस सेना गिरी॥ छं० ॥ ७८ ॥

जयचन्द का किले पर सुरंग लगाना।

परत पंग आरोहि। सुरँग दीनौ सुभान गढ़॥
नाग [2]समूह हरी। ढाहि देवल सुरंग मढ़॥
थान थान नर उड़ैं। चंद तस उप्पम पाइय॥
कालबूत [3]कागद्द। पंग इह काज उड़ाइय॥
अज्जुन सषिह्यि सेन कौ। दच्छ देव बर बोलहीं॥
सामंत सूर संग्राम कल। ताप तुरंग न डोलहीं॥ छं० ॥ ७९ ॥

चौपाई॥ बहु परपंच किए पंहुपंगं। गढ़े तूटंत मग्ग मन अंगं॥
गिरि सम्मूह बंक भर ठट्टं। मंतौ मडि मुक्यौ बर भट्टं ॥छं०॥ ८० ॥

जयचन्द का किर्तिपाल नामक भाट को भीमदेव और चामंड के पास संधि का संदेसा लेकर भेजना।

कवित्त॥ कित्तिपाल बर भट्ट। बंधि [4]फुरमान पंग रन॥
जहँ जद्दव चामंड। द्रुग्ग दोय छचन जुरन॥
चौज चक्क चहुआन। पर्यौ सगपन मिस अट्टौ॥
उह मारन इन मरन। बज्जि गाहं बिन घट्टौ॥
आतुच्छ मिलौ बंधौ जियन। जुद्ध मोहि क्यौं पूजिहौ॥
शृंगार भोग आनन्द रस। सबै बीर रस चुक्किहौ॥ छं० ॥ ८१ ॥

राजा भान को समझा कर जयचन्द के दूत का वश कर लेना।

(१) ए.-ठढे।   (२) क.-समुह धद्धरी ए.-समुहरद्धी, समूंरहधरी।
(३) ए.-कागच्छ कागछ।   (४) ए. क. को.-फरमारस।

तब बसीठ न्रप पंग। भान एकत्त मंत करि॥
मिलौ पंग कमधज्ज। जंम संसार जंम डरि॥
तमस भेद न्रप एह। बाल उत्तर गढ़ भेदं॥
अरि अमंत जद्दव। नरिंद कीनौ घर छेदं॥
लगि कान बात मंची कही। आहुट्ठां बल गड्ढियां॥
चिय पुत्त हत्त पुत्री लिये। दुज्जत जनम सुवढ्ढियां॥ छं० ॥८२॥

दूहा॥ विष धर दुज्जन सिंघ फुनि। अग्गि अनंग अनेह॥
ए अपना ना लेषिये। ये परि अप्पै छेह॥ छं० ॥८३॥

कवित्त॥ हसि अहौ चामँड। पँवार हथ्थें दिय तारी॥
सुनि बड़गुज्जर राम। मतौ अप्पौ मो भारी॥
सामि एक बंदी स। प्रीति जल अंतं तक्की॥
लियौ अधर सम रस्स। वात सा दोहमन क्की॥
क्यों जामन मंत रहंत दुत। केह कंत जो मंगयौ॥
सो मंत पंग कमधज्ज नें। अप्प हेत सो उग्गयौ॥ छं० ॥ ८४॥

दूहा। इह उत्तर न्रप पंग सौं। कहै सु जद्दव राय॥
दूध विनट्ठौं सुद्ध हिय। किन अप्पन मुष पाइ॥ छं० ॥ ८५॥

चौपाई॥ उठे भट्ट तिहि ठौर विचारी। ज्यों उठि जोगी कंथा झारी॥
मन को मनें रही मन माया। ज्यों तरंग जल जलें समाया॥छं०॥८६॥

कवित्त॥ मतौ मंडि न्रप पंग। गट्ट मुक्क धर लीनी॥
पट्टन पाट नरिंद। थान थानं रचि दीनी॥
उभै बीर जौजन प्रमान। भारह रचि गाढ़ी॥
अप्पनगै कमधज्ज। हाम राजसु मन बाढ़ी॥
कनवज नरिंद अज्जू समन। जोगी मिसि कर कढ्ढयौ॥
दिसि विदिसि पंग जौपन सुबल। रचि चतुरंगी चढ्ढयौ॥छं०॥८७॥

जयचन्द का विचारना कि वह धन छोड़ कर यदि यह धरती मिली भी तो किस काम की।

दूहा। कोन हीन कों नीर विन। को तप भाम नरिंद ॥
सह धन.धर मुक्की मिलै। लज्ज रह जय चंद॥ छं० ॥ ८८॥

इसके परिणाम में चहुआन और राजा भान को यश मिला और जयचन्द नवमी को कन्नौज को फिर गया।

जस्स तिलक ग्रह भान कौ। जोगिन पुस्तर चिन्ह ॥
मोकलिजै आहुट्ट पति। पग्ग पंग करि हीन ॥ छं० ॥ ८९ ॥
गयौ पंग कनवज्ज दिसि। घन रष्य धन मास ॥
नव नवमी नव सरद निसि। तिन मुक्की अरि वास ॥ छं० ॥ ९० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके देवगिरि युद्ध वर्णनं नाम छाबीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २६ ॥

अथ रेवा तट समयौ लिख्यते ।

(सत्ताइसवाँ समय ।)

देवगिरि से विजय कर चामंडराय का आना ।

दूहा ॥ देवग्गिरि जीते सुभट । आयौ चामँडराय ॥
जय जय नृप कीरति सकल । कही कब्बिजन आय ॥ छं० ॥ १ ॥

चामंडराय का पृथ्वीराज से रेवा तट के बन की प्रशंसा करके वहां शिकार के लिये चलने की सलाह देना ।

मिलत राज प्रथिराज सों । कही राय चामंड ॥
रेवा तट जौ मन करौ । बन अपुब्ब गज झुंड ॥ छं० ॥ २ ॥

उक्त बन के हाथियों की उत्पत्ति और शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ विन्द लिलाट प्रसेद । कन्यो शंकर गज राजं ॥
एरापति धरि नाम । दियौ चढ़नै सुर राजं ॥
दानव दल तिहि गंज । रंजि उमया उर अंदर ॥
होइ कपाल हत्तिनी । संग बगसी रचि सुंदर ॥
औलादि तास तनु आय कें । रेवा तट बन बित्थरिय ॥
सामंत नाथ सों मिलत हुइ । दाहिम्मै कथ उच्चरिय ॥ छं० ॥ ३ ॥

राजा का चन्द से पूछनों कि मुख्य चार जाति में से यह किस जाति के हाथी हैं और स्वर्ग से इस लोक में क्यों आए ।

अरिल्ल ॥ च्यारि प्रकार पिष्षि बन बारन । भद्र मंद म्रग जाति सधारन ॥
पुच्छि चंद कवि की नरपत्तिय । सुरबारन किम आइ धरत्तिय ॥

चन्द का वर्णन करना कि हेमाचल पर एक वृक्ष था जिसकी शाखें सौ सौ योजन तक फैली हुई थीं मतवाले हाथियों ने उन्हें तोड़ दिया इस पर क्रोध करके मुनिवर ने शाप दिया कि तुम मनुष्यों की सवारी के लिये पृथ्वी पर जन्म लो।

कवित्त ॥ हेमाचल उपकंठ । एक वट हुअ उत्तंगं ॥
सौ जोजन परिमान । साष तस भंजि मतंगं ॥
बहुरि दुरद मद अंध । बाधि मुनि बर आरामं ॥
दीर्घ तपारो देषि । स्राप दीनों कुपि तामं ॥
अंबर बिहार गति मंद हुअ । नर आरूढ़न संग्रहिय ॥
संभरि नरिंद कवि चंद कहि । सुरग इंद इम बुवि रचिय ॥छं०॥५॥

अंग देश के पूर्व एक सुन्दर बनखंड है वहीं वह गजयूथ बिहार करता था। वहां पालकाव्य नामक एक थोडी अवस्था का ऋषीश्वर रहता था उसे इन सभों से बडा स्नेह होगया था परंतु राजा रोमपाद फंदा डालकर हाथियों को चंपापुरी में पकड़ ले गया।

अंग देस पूरब्ब मझि । बन षंड गहब्बरि ॥
उज्जल अल दल कमल । बिपुल लुहिताच्छ सरब्बर ॥
आयति गज को जूथ । करत क्रीड़ा निसि बासर ॥
पालकाव्य लघु वेस । रहत एक तहां रपेसर ॥
तिन प्रीति बंधि अति परसपर । रोमपाद नृप संभरिय ॥
आखेट जाइ फंदनि पकरि । दुरद आनि चंपापुरिय ॥ छं० ॥ ६ ॥

पालकाव्य मारे बिरह के मरकर हाथी के रूप में जनमा।

दूहा ॥ पालकाव्य के विरह करि । पंग भए अति छीन ॥
मुनि वर तब तहँ आय कैं । गज चिगछग्गुन कीन ॥ छं० ॥ ७ ॥

गाथा ॥ कोपर पराग पत्तं । 'छालं डाल फूल फल कंटं ॥
फली कली दै जरियं । कुंजर करि बुझयं तनयं ॥ छं० ॥ ८ ॥

उधर ब्रह्मा के तप को भंग करने के लिये इन्द्र ने रंभा को भेजा था उसे शापवश हथिनी होना पड़ा वह भी वहीं आई ।

कवित्त ॥ ब्रह्मा रिष तप करत । देषि कंप्यौ मघवानं ॥
छलन काज पठु पठय । रंभ रुचिरा करि मानं ॥
श्राप दियौ तापसह । अवनि करिनी सु अवतरि ॥
क्रम्म बंधि इक जतौ । लषित छुट्टी सुपनंतरि ॥
तिहि ठाम आइ उहि हस्तिनी । बोर लियो पोगर सुनमि ॥
उर सुक्क अंस धरि चंद कहि । पालकाव्य मुनिवर जनमि ॥ छं० ॥ ९ ॥

पालकाव्य उस के साथ विहार करने लगा ।

दोहा ॥ तायें तिन मुनि करिन सों । बांधि प्रीत अत्यंत ॥
चंद कह्यौ नृप पिथ्थ सम । सकल मंडि बरतंत ॥ छं० ॥ १० ॥

चन्द ने उस बन और जन्तुओं की प्रशंसा करके कहा कि आप अवश्य वहां चलकर शिकार खेलिए ।

कवित्त ॥ सुनहि राज प्रथिराज । बिप नरवनीय करिय जुथ ॥
रेवा तट सुंदर समूह । गजवंत चवन रथ ॥
आषेटक आचंभ । पंथ पावर रुकि पिल्लौ ॥
सिंघ बहु दिषि समुह । राज पिल्लन दोइ चल्लौ ॥
जल जूह'जूह कसतूरि मृग । पहपंगी अरु पर्वतह ॥
चहुआन मान देषें नृपति । कहिन बनत दच्छिन सुरह ॥ छं० ॥ ११ ॥

एक तो जयचन्द पर जलन हो रही थी दूसरे अच्छा रमणीक स्थान सुन पृथ्वीराज से न रहा गया।

दूहा ॥ एक ताप पहु पंग कौ। अरु रवनीक [1]जु थान ॥
चावंडराव बचन्न सुनि। चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज धूम से चला। रास्ते के राजा संग हो गए, स्वयं रेवानरेश भी साथ हुआ। इस समय सुलतान के भेदुए (नीतिराय) ने लाहौर से यह समाचार गजनी भेजा।

कवित्त ॥ चढ़त राज प्रथिराज। बीर अगनेव दिसा कसि ॥
सब्ब भूमि नृप नृपति। चरन चहुआन लग्गि धसि ॥
मिल्यौ भान विस्तरौ। मिल्यौ पट्टल गढ़ी नृप ॥
मिल्यौ नंदि पुर राज। मिल्यौ रेवा नरिंद अप ॥
बन जूथ मृग्ग सिंघह रु गज। नृप आषेटक खिल्लई ॥
लाहौर थान सुरतान तप। बर कग्गद लिषि सिल्लई ॥ छं० ॥ १३ ॥

मारू खां और तत्तार खां ने दिल्ली पर आक्रमण करने का *बीड़ा उठाया।

दूहा ॥ षां ततार मारूफ षां। लिये पान कर साहि ॥
धर चहुआनी उप्परै। बज्जा बज्जन बाइ ॥ छं० ॥ १४ ॥

यह समाचार पा शहाबुद्दीन का चढ़ाई की तयारी करना।

साटक ॥ श्रोतं भूपय गोरियं वर भरं, बज्जाइ सज्जाइने।
सा सेना चतुरंग बंधि उलल्लं, तत्तार मारूफयं ॥
तुभझौ सार स उप्प राव सरसौ, पल्लानयं षानयं।
एकं जीव साहाब साहि ननयं, बीयं स्तयं सेनयं ॥ छं० ॥ १५ ॥

(१) मो.-सु।

* प्राचीन समय में यह नियम था कि जब कोई कठिन कार्य्य आ उपस्थित होता था तो दरबार में पान का बीड़ा रख कर अपेक्षित कार्य्य की सूचना दी जाती थी अतएव जो सरदार अपने को उस

तातार खां आदि सभों ने कुरान हाथ में लेकर शपथ करके प्रस्थान किया।

दूहा ॥ अहि बेली फल हथ्थ लै। तो ऊपर तत्तार ॥
मेच्छमल्लरति सत्ति कैं। बंच कुरानी बार ॥ छं० ॥ १६ ॥

तत्तार खां का कहना कि चन्द पुंडीर को मार कर एक दिन में दिल्ली ले लूंगा।

कुंडलिया ॥ बर [1]मुसाफ तत्तार खां। मरन किति [2]मन बान ॥
मैं भंजे लाहौर धर। लैहूं सुनि सु विहान ॥
लैहैं सुनि सु विहान। सुनै ढिल्ली सुरतानं ॥
लुथ्थि पार पुंडीर। भीर परि है चहुआनं ॥
दुचित्त चित जिन करहु। राज आषेट [3]उथाप ॥
गज्जनेस आयस्स। चले सब छूप मुसाफं ॥ छं० ॥ १७ ॥

चन्द पुण्डीर ने पृथ्वीराज को समाचार लिखा। पृथ्वीराज का छः कोस लौंट कर कूच का मुकाम करना।

दूहा ॥ षट मुर कोस मुकाम करि। चढ़ि चल्यौ चौहान ॥
चंद बीर पुंडीर कौ। कग्गद करि परिवान ॥ छं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज का पंजाब तक सीधे शहाबुद्दीन को सेना के रुख पर जाना और उधर से शहाबुद्दीन की सेना का आना।

गोरी बै दल संमुहौ। गौ पंजाब प्रमान ॥
पुब्ब रू पच्छिम दुहु दिसा। मिलि चुहान सुरतान ॥ छं० ॥ १९ ॥

उसी समय कन्नौज के दूतों का यह समाचार जयचन्द से कहना।

दूत गये कनवज्ज दिसि। ते आए तिन थान ॥
कथा मंड चहुआन की। कहि कमधज्ज प्रमान ॥ छं० ॥ २० ॥

(१) ए.-सु साफ। (२) ए. कृ. को.-तन। (३) ए.-उथानं।

पृथ्वीराज का रेवा तट आना सुनकर सुल्तान का सेना सजकर चलना ।

रेवा तट आयौ सुन्यौ । बर गोरी चहुआन ॥
बर अवाज सब मिट्टि कै । सजे सेन सुरतान ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि बहुत बड़े शत्रुरूपी मृगों का समूह शिकार करने को मिला ।

दूत बचन संभलि न्रपति । बर आषेटक चिज ॥
रेंवातट [1]पञ्चर धरा । जूह म्रगन बर मिज्जि ॥ छं० ॥ २२ ॥

राज्य मंत्रियों ने यह सम्मति दी कि अपने आप झगड़ा मोल लेना उचित नहीं किसी नीति द्वारा काम लेना ठीक है ।

कवित्त ॥ मिले सब्ब सामंत । मत्त मंत्री सु नरेसुर ॥
दह गूना [2]दल साहि । सज्जि चतुरंग सजौ उर ॥
मवन मंत चुक्कौ न । सोइ बर मंत विचारौ ॥
बल घव्यौ अप्पनौ । सोच पच्छिलौ निहारौ ॥
[3]तन सट्टौ लीजै मुगति । जुगति बंध गोरी दलह ॥
संग्राम भीर प्रथिराज बल । अप्प मत्ति किज्जै कलह ॥ छं० ॥ २३ ॥

यह बात सुन कर सामंतों का मुसका कर कहना कि भारथ का वचन है कि रण में मरने से ही बीर का कल्याण है ।

सुनिय बत्त पज्जून । राव परसंग [4]मुसक्यौ ॥
देव राव वग्गरौ । सेन दे पाव कसक्यौ ॥

---

(१) ए.-पधार । (२) मो.-बल ।
(३) मो.-सट्टै लीजै, ए.-सद सटैं । (४) मो.-मुसक्यौ ।

तन सट्टे [1]सहि मुकति। बोल भारथ्थी बोलै ॥
लोह अंच उछ्रंत। पत्त तरवर जिम डोलै ॥
सुरतान चंपि मुष्षां लग्यौ। दिल्ली न्टप दल बानिवौ ॥
भर भीर धीर सामंत पुन। अवै पटंतर जानिबौ ॥ छं० ॥ २४ ॥

पज्जून राय का कहना कि मैंने सब शत्रुओं को पराजित किया और शहाबुद्दीन को भी पकड़ा। अब भी उस से नहीं डरता।

कहै राव पज्जून। तार कच्छों तत्तारिय ॥
मैं दष्षिन बै देस। भीर जद्दव पर [2]पारिय ॥
मैं बंध्यौ जंगलू। राव चामंड [3]सु सथ्थे ॥
बंभन वास विरास। बीर बड़ गुज्जर तथ्थे ॥
भर विभर सेन चहुआन दल। गोरी दल [4]कित्तक गिनौ ॥
जानै कि [5]भीम कौरव सुबर। जर समूह तरवर किनौ ॥छं०॥२५॥

जैत राव का कहना कि शहाबुद्दीन की सेना से मिलान होना लाहौर के पास अनुमान किया जाता है अत एव अपनी सब तैयारी कर लेनी उचित है आगे जो आप की इच्छा हो।

कहै जैत पंवार। सुनहु प्रथिराज राज मत ॥
जुद्ध साहि गोरी। नरिंद लाहौर कोट गत ॥
सबै सेन अप्पनौ। राज एकट्ठ सु किज्ज ॥
इह भृत्य सगपन सु। हित कागद लिषि दिज्जै ॥
सामंत सामि इहि मंत है। [6]अरु जु मंत चित्त न्टपति ॥
धन रहै भूम्म जसु जोग ह्वै। दिपति दीप दिव लोकपति ॥छं०॥२६॥

(१) ए.-माट्टि।   (२) मो.-पारिहरिय।
(३) मो.-जु।   (४) मो.-कित्ती।
(५) ए.-भीम, कौरू, कोरू, कौरों।   (६) ए.-अरु जद्द।

रघुबंस राम का कहना कि हम सामंत लोग मंत्र क्या जानें केवल मरना जानते हैं, पहिले शाह को पकड़ा था अब भी पकडेंगे।

वह वह कहि रघुबंश। राम हकारि सु उठ्यौ॥
सुनौ सब्ब सामंत। साहि आए बल [1]छुट्यौ॥
गज रु सिंघ सा पुरिष। जहीं रुंधै तहां सुभभ्भै॥
[2]असम समौ जानहि न। लज्ज पंकै आलुभ्भै॥
सामंत मंत जानैं नही। मत्त गहैं इक मरन कौ
सुरतान सेन पहिलै बंध्यौ। फिर बंधौं तौ करन कौ॥ छं०॥२७॥

कविचन्द का कहना कि हे गुज्जर गँवारी बातें न कहो इन्हीं बातों से राज्य का नाश होता है। हम सब के मरने पर राजा क्या करेगा।

रे गुज्जर गांवार। राज लै मंत न होई॥
अप मर छिज्जै न्रपति। कौन कारज यह जोई॥
सब सेवक चहुआन। देस भग्गै धर पिल्लै॥
पच्छि काम कह करै। स्वामि संग्राम इकल्लै॥
पंडित्त भट्ट कबि गाइना। न्रप सौदागिर वार हुअ॥
गजराज [3]सीस सोभा वरन। क्रन उड़ाइ वह सोभ लह॥छं०॥२८॥

पृथ्वीराज का कहना कि जो बात आगे आई है उस के लिये जुद्ध का सामान करो।

दूहा॥ परी षोर तन दंग [4]गम। अग्ग जुद्ध सुरतान॥
अब इह मंत विचारये। लरन मरन परवान॥ छं०॥२९॥

---

(१) ए.-छटयो, (२) ए. कृ. को.-समौ, असमौ।
(३) सा.-सोस। (४) ए.-मम।

[1]गजन संग प्रथिराज कै। है दिष्षिय परवान ॥
बज्जी पष्षर षंड रै। चाहुआन सुरतान ॥ छं० ॥ ३० ॥
ग्यारह अष्षर पंच घट। लहु गुरु होइ समान ॥
कंठ सोभ वर छंद कौ। नाम कह्यौ परवान ॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज के घोड़ों की शोभा वर्णन।

छंद कंठशोभा ॥ फिरे हय बष्षर पष्षर से। मने फिर इंदुज पंष कसे ॥
सोई उपमा कविचंद कथे। सजे मनों पोंम पवंग रथे ॥ छं० ॥ ३२ ॥
उर पुट्ठिय [2]सुट्ठिय दिट्ठय ता। वपरो पय लंगत ता धरिता ॥
लग्गे उड्डि छित्तिय [3]चौ नलयं। सुने पुर केह अवत्तनयं ॥ छं० ॥ ३३ ॥
अग बंधि सु हेम हमेल घनं। तव चामर जोति पवंन हनं ॥
ग्रह अट्ठस तारक [4]बीत पगे। मनों सुत कै उर भान [5]उगे ॥ छं० ॥ ३४ ॥
पय मंडिहि अंसु धरै उलटा। मनों बिंटय नेषि चली कुलटा ॥
मुष कट्टिन घूंघट अस्सु बलो। मनों घुंघट दै कुल बहु चली ॥
छं० ॥ ३५ ॥
तिनं उपमा बरनो न घनं। पुजे नन बग्ग पवंन मनं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

आधी रात को दूत पृथ्वीराज के पास पहुंचा और समाचार दिया कि अट्ठारह हजार हाथी और अट्ठारह लाख सेना के साथ सुलतान लाहौर से चौदह कोस पर आ पहुंचा।

कुंडलिया ॥ नव बज्जी घरियार घर। राज महल उठि आइ ॥
निसा अद्ध वर उत्तरे। दूत संपते आइ ॥
दूत संपते आइ। धाइ चहुआन सु जग्गिय ॥
सिंघ विहथ्थे मुक्कि। साहि साहीउर तग्गिय ॥
अट्ठ सहस गजराज। लष्ष अट्ठारह [6]ताजिय ॥
उभै सत्त वर कोस। साहि गोरी नव बाजिय ॥ छं० ॥ ३७ ॥

(१) ए. कृ. को.-गजन सिंग (२) ए. कृ. को.-उर उप्पर पुट्ठिय दिट्ठियत।
(३) ए.-दो, दौ। (४) ए.कृ.को.-पीत पगे। (५) ए.-उहे। (६) ए. कृ. को.-ताजिय।

पृथ्वीराज ने दूत से पत्र लेकर पढ़ा–हिन्दुओं के दल में शोर मच गया।

दूहा ॥ बचि कागद चहुआन नें। फिरन चंद [1]सह थान ॥
मनो बीर तनु अंकुरे। मुगति भोग वनि प्रान ॥ छं० ॥ ३८ ॥
मची कूह दल हिंदु के। [2]कसे सनाह सनाह ॥
बर चिराक दस [3]सहस भइ। बजि निसांन अरिदाह ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का दरबार में आकर पृथ्वीराज से कहना कि मुस्लमान सेना चिनाब के पार आगई। चन्द पुंडीर ने उसका रास्ता बांध कर मुझे इधर भेजा है।

*बा बह्ल न्रप मुक्कतें। दूत आइ तिहि वार ॥
सजी सेन गोरी सुभर। उत्तरए नद पार ॥ छं० ॥ ४० ॥
पंचासज गोरी न्रपति। बंध उतरि नहिं पार ॥
चंद बीर पुंडीर नें। [4]घटि मुक्कै दरबार ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सुलतान का अपने सामंतों के साथ युद्ध के लिये प्रस्तुत होना।

कवित्त ॥ षां मारुफ ततार। षान षिलची बर गद्दे ॥
चामर छच मुजक्क। गोल सेना रचि गद्दे ॥
नारि गोरि जम्बूर। सुबर कीना गजसारं ॥
नूरीं षां हुज्जाव। नूर महमद सिर भारं ॥
वज्जीर षान गोरी सुभर। षान षान हजरत्ति षां ॥
बिय सज्जि सैन हरवल करिय। तहां उभौ सजरत्ति षां ॥ छं० ॥ ४२ ॥

---

(१) क.-सर। (२) ए. कृ-कौ सनाह अनाह। (३) ए. कृ. को.-दस दस।
(४) ए.-उत्तर यो नदि पार, मो.-घट मुक्यो दरवार।
* यह दोहा ए. को. और कृ. प्राति में नहीं है।

शाहजादे का सरदारों के साथ सेना हरवल रचना और सेना के मुख्य सरदारों के नाम स्थान और उन का पराक्रम वर्णन।

रचि हरवल सुरतान। साहिजादा सुरतानं॥
षां पैदा महमूद। बीर बंध्यौ सु विहानं॥
षां मंगोल लल्लरी। बीस टंकी बर षंचै॥
चौ तेगीसह वाज। बान अरि प्रान सु अंचै॥
जँहगौर षान जह गोर बर। षां हिंदू बर बर बिहर॥
पच्छिमी षान पट्ठान सह। रचि उभ्भै हरवल गहर॥छं०॥४३॥
रचि हरवल पठ्ठांन। षान हुसमान ह गष्षर॥
केलौ षां कुंजरी। साह सारी दल पष्षर॥
षां भट्टी मह नंग। षान षुरसानी बब्बर॥
हबस षान हुज्जाब। अब्ब आलम्म आस बर॥
तिन अग्ग अट्ठ गजराज बर। मद सरक्क पट्टे तिमा॥
पंच बिन पिंड जो ऊँपजे। जुद्ध होइ लज्जी बिना॥ छं०॥ ४४॥

शहाबुद्दीन का इस पार तीस दूतों को रख कर चिनाब पार करना।

[1]करित माय बहु साहि। तीस तहँ रष्षि फिरस्ते॥
आलम षान गुमान। षान उजबक्क निरस्त॥
लहु मारूफ गुमस्त। षान दुस्तम बजरंगी॥
हिंदु सेन उप्परें। साहि बज्जै रन जंगी॥
सह सेन टारि सोरा रच्यौ। साहि चिनाव सु उत्तऱ्यौ॥
संभले सूर सामंत न्रप। रोस बीर बीरं हुऱ्यौ॥ छं०॥ ४५॥

यह सुन कर पृथ्वीराज का क्रोध करना और दूत का कहना. पुंडीर उसे रोके हुए हैं।

(१) ए.-करत माइ चौसाहि।

दूहा ॥ तमसि तमसि सामंत सब । रोस भरिग प्रथिराज ॥
जब लगि रुपि पुंडीर नें । रोक्यौ गोरी साज ॥ छं० ॥ ४६ ॥

जहां पर सुलतान चिनाब उतरने वाला था वहीं पुण्डीर ने रास्ता रोका । घोर युद्ध हुआ । चन्द पुण्डीर घायल हो कर गिरा । सुलतान चिनाब पार होने लगा ।

भुजंगी ॥ जहां उतर्‍यौ साहि चिन्नाव मीरं । तहां नेज गह्यौ ठठ्‌क्के पुडीरं ।
करी आनि साहाब सा बंधि गोरी। धके धींग धींगं धकावै सजोरी ॥
छं० ॥ ४७ ॥

दोऊ दीन दीनं कढ़ी बंकि असी। किधौं मेघ में बीज कोटि निकसी ॥
किए सिप्परं कोर ता सेस अग्गी । किधौं बद्दरं कोर नागिन्न नग्गी ॥
छं० ॥ ४८ ॥

हबक्के जु मेछं भ्रमंतं जु छुट्टै । मनों घेरनी घुम्मि पारेव तुट्टै ॥
उरं फुट्टि बरछी बरं छब्बि नासी। मनों जाल में मीन अद्धी निकासी॥
छं० ॥ ४९ ॥

लटक्के जुरंनं उड़ै हं हक्कै। रसं भीति स्हूरं चव-गान पिक्कै ।
लगे सीस नेजा भ्रमें भेज तथ्थें । भषै वाइसं भांत दीपत्ति सथ्थें ॥
छं० ॥ ५० ॥

करै मार मारं महावीर धीरं । भये मेघ धारा बरष्षंत तीरं ॥
परे पंच पुडीर सा चंद कव्यौ । तबै साहि गोरी स चन्नाव चव्यौ ॥
छं० ॥ ५१ ॥

सुलतान का चिनाब उतरना और चन्द पुण्डीर का गिरना देख कर दूत ने बढ़ कर पृथ्वीराज को समाचार दिया ।

कवित्त ॥ उतरि साहि चिन्नाव । घाय पुंडीर लुथ्थि परं ॥
उप्पार्‍यौ बर चंद । पंच बंधव सु पथ्थ धर ॥
दिष्षि दूत बर चरित । पास आयौ चहुआनं ॥
उप्पर गोरी नरिंद । हास बढ्ढौ सुरतानं ॥

बर मीर धीर मारूफ दुरि । 'पंच अनी एकठ जुरी ॥
मुर पंच.कोस लाहोर तें । मेच्छ मिलानह सो करी ॥ छं० ॥ ५२ ॥

पृथ्वीराज ने क्रोध के साथ प्रतिज्ञा की कि तब मैं सोमेश्वर का बेटा जो फिर सुलतान को कैद करूं । पृथ्वीराज ने चन्द्र व्यूह की रचना करके चढ़ाई की ।

दूहा ॥ बीर रोस बर बैर बर । झुकि लग्गौ असमान ॥
तौ नंदन सोमेस कौ । फिरि बंधौ सुरतान ॥ छं० ॥ ५३ ॥
चन्द्रव्यूह न्रप बंधि दल । धनि प्रथिराज नरिंद ॥
साहि बंध सुरतान सौं । सेना बिन विधि कंद ॥ छं० ॥ ५४ ॥

पञ्चमी मङ्गलवार को पृथ्वीराज ने चढ़ाई की । (कवि ने उस दिन के ग्रह स्थिति योग आदि का वर्णन किया है)

कवित्त ॥ बर मंगल पंचमी । दिन सु दीनौ प्रथिराजं ॥
राह केत जय दीन । दुष्ट टारे सुभ काजं ॥
अष्ट चक्र जोगनी । भोग भरनी सुधि रारी ॥
गुर पंचम रबि पंच । अष्ट मंगल न्रप भारी ॥
कै इंद्र बुद्ध भारथ्थ भल । कर चिसूल चक्रा बलिय ॥
सुभ घरिय राज बर लीन बर । चल्यौ उदै क्रूरह बलिय ॥ छं० ॥ ५५ ॥
दूहा ॥ सो रचि उड्ड अवद्ध अध । 'उग्गि मह्व विधि 'कंद ॥
बर निषेद न्रप बंदयौ । को न भाय कबिचंद ॥ छं० ॥ ५६ ॥

जिस प्रकार चक्रवाक, साधु, रोगी, निर्धन, विरह वियोगी लोग रात्रि के अवसान और सूर्य्योदय की इच्छा करते हैं उसी प्रकार पृथ्वीराज भी सूर्य्योदय को चाहता था ।

(१) ए.-खंच । (२) ए. लग्गी । (३) ए.-मंडि, कृ.-मंदि मंड ।

कवित्त ॥ प्रात सूर बंछई। चक्क चक्किय रवि बंछै ॥
प्रात सूर बंछई। सुरह बुद्धि बल सो इंछै ॥
प्रात सूर बंछई। प्रात बर बंछि वियोगी ॥
प्रात सूर बंछई। ज्यौं सु बंछै बर रोगी ॥
बंछयौ प्रात ज्यों त्यों उनन। वंछै रंक करन्न बर ॥
बंछयौ प्रात प्रथिराज नें। सती सत्त बंछैति उर ॥ छं० ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज की सेना तथा चढ़ाई का वर्णन।

दंडमाली ॥ भय प्रात रत्तिय, जुरत दीसय, चंद मंदय चंद यौ।
भर तमस तामस, सूर वर भरि, रास तामस छंद यौ ॥
बर बज्जियं नीसान धुनि, घन बीर बरनि अँकूरयं।
धर धरकि धाइर, करषि काइर, रस मिछूर स कूरयं॥ छं० ॥ ५८ ॥
गज घंट घनकिय, रुद्र [1]भन किय, षनकि संकर उद्दयौ।
रन नंकि [2]भेरिय, कन्ह होरिय, दंति दान धनं [3]दयौ ॥
सुनि बीर सद्दइ, सबद पट्टई, सद्द असद्दइ छंडयौ।
तिह ठौर अद्भुत, होत न्रप दल, बंधि दुज्जन षंडयौ ॥छं०॥५९॥
सन्नाह सूरज सज्जि घाटं, चंद ओपम राजई।
मुकर में प्रतिब्यंब राजय, सत्त धन ससि साजई ॥
बर फह्लि बंबर, टोप आयो, त रोस सीसत आइए।
नष्षिच हस्त कि, भान चंपक, कमल सूरहि साइए ॥ छं० ॥ ६० ॥
बर बीर धा जोगिंद पत्तिय, कब्बि ओपम पाइयं ॥
तजि मोह माया, छोह कल बर, धार तित्थह धाइयं ॥
संसार शंकर वंधि, गज जिम, अप्प वंधन हथ्थयं।
उनमत्त गज जिमि, नंख दीनी, मोह माया सथ्थयं ॥ छं० ॥ ६१ ॥
सो प्रबल मह जुग, बंधि जोगी, मुनी आरम देवयौ।
सामंत धनि जिम, षिप्ति कीनी, पत्त तरु जिम भेवयौ ॥ छं० ॥ ६२ ॥

---

(१) ए.-भनषिय। (२) ए.-भेरियं।
(३) ए.-धनंजयौ।

दूहा ॥ श्रम गाह इक मुगल को। क्यों करिजै बाषान ॥
मन अनंष सामंत नै। [१]कच कर बति पाषान ॥ छं० ॥ ६३ ॥
बाई बिषे धुंधरि परिय। बद्दर छाए भान ॥
कुन घर मंगल बज्जही। कै चढ़ि मंगल आन ॥ छं० ॥ ६४ ॥

दोनों ओर की सेनाओं के चमकते हुए अस्त्र शस्त्र और निशानों का वर्णन।

दिष्ट देषि सुरतान दल। लोहा चक्कत बान ॥
षहकि फेरि उड़गन चले। निसि आगम फिरि [२]आन ॥ छं० ॥ ६५ ॥
धजा बाइ बंकुर उड़ति। छबि कविंद इह आइ ॥
उड़गन चंद नरिंद बिय। लगो [३]मनों अइ पाइ ॥ छं० ॥ ६६ ॥
से सनि संकहि बजतहि। बाजे कुषक सुरंग ॥
मेटै सद्द निसान के। सुनै न श्रवनति अंग ॥ छं० ॥ ६७ ॥

जब दोनों सेनाएं साम्हने हुईं तब मेवारपति रावल समरसिंह ने आगे बढ़कर युद्ध आरम्भ किया।

अनी दोउ घन घोर ज्यों। [४]घाय मिले कर घाट ॥
चित्रंगी रावर बिना। करै कोन दइ वाट ॥ छं० ॥ ६८ ॥
कवित्त ॥ पवन रूप परचंड। घालि असु असि वर झारै ॥
मार मार सुर बज्जि। पत्त तरू अरि सिर पारै ॥
फहकि सद्द [५]फेफरा। इड्ड कंकर उप्पारै ॥
कटि भसुंड परि मुंड। भिंड कंटक उप्पारै ॥
बज्जयौ विषम मेवारपति। रज उडाइ सुरतान दल ॥
समरथ्थ समर [६]सम्मर मिलिय। अनी मुष्ष पिष्षौ सबल ॥ छं० ॥ ६९ ॥

रावल, जैत पँवार, चामंड राय और हुसैन षां का क्रमानुसार हरावल में आक्रमण करना। पीठि सेना का पीछे से बढ़ना।

---

(१) मो.-ज्यौं कचकरवर्ता। (२) को.ए.-आम। (३) ए. मो.-मानों-मानो।
(४) ए. कृ. को.-घाघा मिलेक थाट, कर थाट।
(५) ए. कृ. को.-फीफरा। (६) ए. कृ. को.-मनमथ मिल, मिली, मिल्यौ।

रावर उप्पर धाई । पऱ्यौ पांवार जैत षिझि ॥
तिहि उप्पर चांमंड । कऱ्यौ हुस्सेन षान सजि ॥
धक्काई धक्काइ । दोइ दरबल बर मझझै ॥
पच्छ सेन आहुट्टि । अनी बंधी आलुझझै ॥
गजराज विय सु सुरतान दल । दह चतुरँग बर बीर बर ॥
धनि धार धार धारह धनी । बर भट्टी उप्पारि कर ॥ छं० ॥ ७० ॥

हिन्दू सेना की चन्द्र व्यूह रचना ।

छच मु जीक सु अप्पि । जैत दीनौ सिर छचं ॥
चन्द्रव्यूह अंकुरिय । राज [1]दुअ इहां इकचं ॥
एक अग्र हुसेन । बीय अग्रह पुंडीरं ॥
मद्धि भाग रघुवंस । राम उभ्भौ बर बीरं ॥
सांषलौ सूर सारंग दे । उररि षान गोरीय मुष ॥
हथनारि [2]गोर जंबूर घंन । दुहूं बांह उभ्भंति [3]रष ॥ छं० ॥७१ ॥

दो पहर के समय चंद पुंडीर का तिरछा रुख दे कर शत्रु सेना को दबाना ।

छुट्टि अद्ध बर घटिय । चढ्यौ मध्यान भान सिर ॥
सूर कंध बर कट्टि । मिले काइर कुरंग बर ॥
घरी अद्ध बर अद्ध । लोह सों लोह जु रुक्के ॥
मन अग्गै अरि मिले । चित्त में कंक घरक्के ॥
पुंडीर भीर भंजन भिरन । लरन तिरच्छौ लग्गयौ ॥
नव बधू जेन संका सुबर । उदौ जानि जिम भग्गयौ ॥ छं० ॥७२॥

पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन का सम्मुख घोर युद्ध होना । योगिनी भैरव आदि का आनन्द से नाचना ।

भुजंगी ॥ मिले चाइ चहुआन सा चंपि गोरी । स्वयं पंच कोरी निसानं अघोरी ॥
बजे आवद्धं संभरे अद्ध कोसं । घने अग्ग नौसान मिलि अद्धकोसं ॥
छं० ॥ ७३ ॥

(१) छ. मो.-दुअ । (२) ए. कृ. को. मो, जीरो । (३) कृ.-सख ।

बरं बंबरं चौर माह्रीति सारं। इले छत्र पीतं इले वार पारं॥
चुले सूर इक दहक पचारं। घले बथ्थ होक अरं आ 'अपारं॥
छं० ॥ ७४ ॥

उतंमंग तुट्टै परै श्रोन धारी। मनों दंड सुकी-अनीवाह वारी॥
नचैं कंध बंधं इकें सीस भारी। तहां जोग माया 'ककी सो विचारी॥
छं० ॥ ७५ ॥

बढ़ी साँग लग्गी वजी धार धारं। तहां सेन दूनं करै मार मारं॥
नचै रंग भैरू गहै ताल बीरं। सुरंग अच्छरी बंधि नारद तीरं॥
छं० ॥ ७६ ॥

इसी जुद्ध बधं उब्बद्ध उभानं। भिरै गोरियं सेन अरु चाहुआनं॥
करै कुंडली तेग बग्गी 'प्रमानं। मनों मंडली रास तं कान्ह बानं॥
॥ छं० ॥ ७७ ॥

फुटी आवधं माहि सामंत सूरं। बजै गोर चोरं मनों बज्ज भूरं॥
लगै धार धारं तिनै धरह तुट्टै। दुहुं कुंभ भग्गं करकं अहुट्टै॥
॥ छं० ॥ ७८ ॥

फुटी श्रोन भोमं 'अपं बिंब राजं। मनों मेघ बुद्धें प्रथीमी समाजं॥
पराक्कम्म राजं प्रथीपत्ति रुध्यौ। रनं रुंधि गोरी सहं जंग जुध्यौ॥
छं० ॥ ७९ ॥

सुलतान का घबराना। तातार खां का धैर्य दिलाना।

दूहा॥ तेज छुट्टि गोरी सुबर। दिय धीरज तत्तार॥
मो उभ्भै सुरतान को। 'भौर परी इन वार॥ छं॰ ॥ ८०॥

उक्त युद्ध की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

मोतीदाम॥ रतिराज सु जोवन राजत जोर। चंप्पी ससिरं उर अैसव कोर॥
उनी मधि मद्धि मधू धुनि होय। तिनं उपमा बरनी कवि 'जोय॥
छं० ॥ ८१ ॥

(१) ए.-अपारं। (२) मो.-ककीयं विचारी। (३) ए. कृ.-पमानी।
(४) कृ. ए.-अपी। (५) ए.-भरी। (६) ए. कृ. को.-कोह, कोय, होइ।

सुनी बर आगम [1]जुब्बन बैन। नच्चौ कबहूं न सु उद्दिम मैन॥
कबहूं दुरि कंनन [2]पुच्छत मैन। कहौ किन अब दुरी दुरि बैन
छं० ॥ ८२ ॥

झझि रोर नसै सब दुंदभि बज्जि। उभै रतिराज [3]सुजोवन सज्जि।
कही बर श्रोन सुरंगिय रज्जि। चंपे [4]रन दोउ बनं बन भज्जि॥
छं० ॥ ८३ ॥

इय मीनन लीन भये रत रज्जि। भम विभ्रम भारु परी गहि नज्ज॥
मुर मारुत फौज प्रथंम चलाइ। गति लज्जि सकुचि कछे मिलि आइ॥
छं ॥ ८४ ॥

इहि सीत मधूप न कंदहि जीव। प्रकटै उर तुच्छ सोज उर भीव॥
बिन पल्लव कोरहि [5]तारहि रंभ। गहना बिन बाल बिराजत अंभ॥
छं० ॥ ८५ ॥

कलि कंठन कंठ सज्यौ अलि पंथ। न उड्डिय अंग नवेलिय अंघ॥
सजी चतुरंग सज्यौ बन राइ। बजी इन उप्पर सैसव जाइ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कवि मत्तिय जूह तिंन बहु घोर। बनं तब संधय चंद कठोर॥
छं० ॥ ८७॥

रसावला॥ बोल पुच्छे घनं, स्वांमि जंपे मनं। रोस लग्गो तनं, सिंघ मर्द मनं॥
छं० ॥ ८८ ॥

छोह मोहं षिनं, दांन छुट्टे ननं। नाम राजं घनं, भ्रंम सातुक्कनं॥
छं० ॥ ८९ ॥

मेच्छ वाहं बिनं, रत्त कंधं भनं। ढल्ल आ ढाहनं, जीवना सा हनं॥
छं० ॥ ९० ॥

वान आ संधनं, पंषि ज्या बंधनं। स्याम सेतं अनी, पीत रत्तं घनी॥
छं० ॥ ९१ ॥

कूह मच्ची परी, रोस दंती फिरी। फौज फट्टी पुलं, सूर जुज्झे घनं॥
छं० ॥ ९२ ॥

(१) ए.-जुब्बन। (२) मो. ए. को.-पुच्छन। (३) ए.-सजीवन।
(४) ए. कृ. को.-नर। (५) ए.-तारै संभ।

लेहु लेहु करी, लोह कट्टे भरी । कन्ह आ संभरी, पाइ मंडे फिरी ॥
छं० ॥ ९३ ॥

बीर हक्क करी, नैन रत्तं बरी । षंड आ षोलियं, बीर सा बोलियं ॥
छं० ॥ ९४ ॥

बीर बज्जे घुरं, दंति पट्टे छुरं । झार संकोरीयं, फौज बिप्फोरियं ॥
छं० ॥ ९५ ॥

दंत रुद्दी परे, अग्ग फूलं झरे । हेमयं नारियं, जावकं ढारियं ॥
छं० ॥ ९६ ॥

आननं हंकयं, अंग [1]जानंचयं । सत्त सामंतयं, बांन सा पथ्थयं ॥
छं० ॥ ९७ ॥

फौज दोऊ फटी, जांनि जूनी टटी । .... ॥ छं० ॥ ९८ ॥

सोलंकी माधव राय से खिलजी खां से तलवार का युद्ध होने लगा । माधव राय की तलवार टूट गई तब वह कटार से लड़ने लगा । शत्रुओं ने अधर्म युद्ध से उसे मार गिराया ।

कवित्त ॥ सौलंकी माधव । नरिंद षिलची मुष लग्गा ॥
सुबर बीर रस बीर । बीर बीरा रस पग्गा ॥
दुअन बुद्ध जुध तेग । दृह्र हथ्थन उब्भारिय ॥
तेग तुट्टि चालुक्क । बथ्थ परि कढ्ढि कटारिय ॥
अग अग्ग रुक्कि ठिल्लि बलन । अधम जुद्ध लग्गे लरन ॥
सारंग बंध घन घाव परि । गोरी बै दिन्नौ मरन ॥ छं० ॥ ९९ ॥

वीर गति से मरमे पर मोक्ष पद पाने की प्रशंसा ।

षग्ग झटक्कि जुटिक्क । अमन सेना समंद गजि ॥
हय गय बर हिल्लोर । गरुअ गोइंद दिष्षि सजि ॥

(१) ए.-जामं ।

अनम अठेल अभंग। मीर असि मीर समाहिय॥
अति दल बल आहुट्टि। पच्छ लज्जी पर वाहिय॥
रज तज्ज रज्ज मुक्कि न रह्यौ। रज न लग्गी रज रज भयौ॥
उच्छंगन अच्छर सो लयौ। देव विमानन चढ़ि गयौ॥ छं० ॥१००॥

जै सिंह की वीरता और उसकी वीर मृत्यु की प्रशंसा।

परि पतंग जै सिंघ। पतंग अप्पुन तन दझ्झै॥
नव पतंग गति लीन। करे अरि अरिधज धज्जै॥
तेल ठांम बात्तीय। [1]अगन्नि एकल विरझ्झाइय॥
पंच अप्प अरि पंच। पंच अरि पंथ लगाइय॥
आरन्नि कुंआरी वर बर्यौ। दै दाहन दुज्जन दवन॥
जीतेव असुर महि मंडलह। और ताहि पुज्जै कवन॥ छं०॥१०१॥

वीर पुंडीर के भाई की वीरता और उस के कमंध का खड़ा होना।

रुप्पौ वीर पुंडरी। फिरी पारस सुरतानी॥
शस्त्र वीर चमकंत। तेज आरुहि सिर [2]ठानी॥
टोप ओप तुटि किरच। सार सारह जरि भारे॥
मिलि नछिच रोहनी। सीस ससि उडगन चारे॥
उठि परत भिरत भंजत अरिन। जै जै जै सुर लोक हुअ॥
उठ्यौ कमंध पलपंच चव। कौन भाइ कप्यौ जु धुअ॥ छं० ॥ १०२॥

पज्जून राय के भाई पल्हान राय का खुरसान खां के हाथ से मारा जाना।

दुजन सल कूरंभ। बंध पल्हन सकारिय॥
सम्ही षां षुरसान। तेग लंबी उझ्भारियं॥
टोप टुट्टि बर बारी। सीस परि तुट्टि कमंधं॥
मार मार उच्चार। तार तं नंचि कमंधं॥

(१) मो.-अगन्नि। (२) ए.-तानी।

तहँ देषि रुद्र रुद्रह [1]हस्यौ। [2]हय हय हय नंदी कह्यौ ॥
कविचंद [3]शैलपुत्री चकित। पिष्षि बीर भारथ मह्यौ ॥छं०॥१०३॥

जैसिंह के भाई का मारा जाना।

सोलंकी सारंग। षान खिलची मुष लग्गा ॥
बह पंगानौ भृत्त। इते बहुबान विलग्गा ॥
है कंध न दिय पाय। कन्ह उत्तरि बिय बाजिय ॥
गज गुंजार हुँकार। धरा गिर कंदर गाजिय ॥
जय जयति देव जै जै करहिं। पहुपंजलि पूजत रिनह ॥
इक पर्यौ षेत सोधै सकल। इक रह्यौ बंधे धुनह ॥ छं० ॥ १०४ ॥

गोइन्द राय का तत्तार खां के हाथी और फीलवान को मार गिराना।

करी मुष्ष आकुट्ठ। बीर गोइंद सुं अष्षै ॥
कविल पीख जनु कन्ह। दंत दारुन गहि नष्षै ॥
संड दडं भये षंड। पीलवानं गज मुक्यौ ॥
गिद्धि सिद्धि बेताल। आइ अंषिन पल रुक्यौ ॥
बर बीर पर्यौ भारथ्थ बर। लोह लहरी लगात झुल्यौ ॥
तत्तार षान सम्हौ सु क्रत। सिंघ हक्कि अंबर डुल्यौ ॥ छं० ॥१०५॥

नरसिंह राय के सिर में घाव लगने से उसके गिर जाने पर चामुंडराय का उस की रक्षा करना।

षोलि षग्ग नरसिंघ। षिझ्झि षज सीसह झारिय ॥
तुटि धर धरनि परंत। परत संभरि कट्टारिय ॥
चरन अंत उरझंत। बीर कूरंभ करारौ ॥
तेग घाइ घुक्कंत। अरी झर लोह सँभारौ ॥
चलि गयौ [4]झमन झम्मन चलै। डुल्यौ न [5]डुल्ल तन हथ्थ बर ॥
तिन परत बीर दाहर तनौ। चामंडा बज्जी लहर ॥ छं० ॥ १०६ ॥

(१) मो.-भयौ। (२) मो.-हयं हयं। (३) ए.- सबल, कृ. को.- सपल।
(४) मो.-न झमन झंमनत। (५) ए.-नर डुलतन।

रात हो गई दूसरे दिन सबेरे फिर पृथ्वीराज ने शत्रुओं को आ घेरा।

भुजंगी ॥ [1]छुटी छंदनी छंद सीमा प्रमानं। मिली ढालनी माल राही समानं।
निसा मान नीसान नीसान धूझं। धुझं धूरिनं मूरिनं पूर कुझं ॥
छं० ॥ १०७ ॥

सुरत्तान फौजं तिनें [2]पत्ति फेरी। मुषं लग्गि चहुआन पारस्स घेरी॥
भये प्रात सुज्जात संग्राम षालं। चहुव्वान उट्ठाय सालोपि थाल॥
छं० ॥ १०८ ॥

जैत राय के भाई लक्ष्मण राय के मरते समय अप्सराओं का उसके पाने की इच्छा करना परंतु उसका सूर्य्य लोक भेद कर मोक्ष पाना।

कवित्त ॥ जैत बंध ढहि पऱ्यौ। लष्ष लष्षन कौ आयौ ॥
तहं झगरौ मइ माय। देवि हुंकारौ पायौ ॥
हुंकारै हुंकार। जूह गिद्धनि उड्डायौ ॥
गिद्धिन तें अपछरा। लियौ चाहत नहि पायौ ॥
अव तरन सोइ उतपति गयौ। देवथान बिभ्रम [3]बियौ ॥
जम लोक न शिवपुर ब्रह्मपुर। भान थान भानै वियौ ॥छं०॥१०९॥
तन झंझरि पाषार। पऱ्यौ धर मुच्छि [4]घटिय बिय ॥
बर अच्छर बिंटयौ। सुरंग मुक्क सुरंग हिय ॥
[5]तिहित बाल तत काल। सलष बंधिव ढिग आइय ॥
लिषिय अंग बिय अघ्य। सोई बर बंच दिषाइय ॥
जनम मरन सह दुह सुगति। नन मिट्टै भिंटह न तुझ ॥
ए वार सुबर बंटहु नहीं। बंधि लेहु सुक्की बधुझ ॥ छं० ॥ ११० ॥

महादेव का लक्ष्मण का सिर अपनी माला के लिये लेना।

(१) ए.-छंदानं, कृ. मो.—छदनी, छदनीमा। (२) ए. कृ. को.—पांति।
(३) मो.-भयौ। (४) ए.-घटय। (५) मो.-तिहित काल सतबाल।

दूहा ॥ राम बंध को सीस वर । ईस गह्यौ कर चाइ ॥
'अच्छि दरिद्री ज्यौं भयौ । देषि देषि ललचाइ ॥ छं० ॥ १११ ॥

एक पहर दिन चढ़े जंघा योगी ने त्रिशूल लेकर घोर युद्ध मचाया ।

जाम एक दिन चढ़त बर । जंघारौ झुकि बीर ॥
तीर जेम तत्तौ पर्‍यौ । धर अग्घारे मीर ॥ छं० ॥ ११२ ॥

कवित्त ॥ जंघारो जोगी । जुगिंद कढ़्यौ कट्टारौ ॥
परस पानि तुंगी । त्रिसूल मग्घर अधिकारौ ॥
जटत वांन सिंगी । विभूत हर वर हर सारौ ॥
सबर सद्द बह्यौ । विषम मद गंधन झारौ ॥
आसन सदिट्ठ निज पत्ति में । लिय सिर चंद अम्रित अमर ॥
मंडलीक राम 'रावत भिरत । नभौ बीर इत्तौ समर ॥छं०॥११३॥

शस्त्र सजकर सुलतान का युद्ध में टूटना । लंगरी राय का घोर युद्ध मचाना । लंगरी राय की बीरता की प्रशंसा ।

सिलह सज्जि सुरतान । झुक्कि बज्जे रन जंगं ॥
सुनें श्रवन लंगरी । बीर लग्गा अनभंगं ॥
बीर धीर सत मध्य । बीर हुंकारि रन धायौ ॥
सामंता सत मद्धि । मरन दीनं भय सायौ ॥
पारंत धक्क हक्कंत 'रन । पग प्रवाह पग पुल्लयौ ॥
बिब्भूत चंद अंगन तिलक । बहसि बीर हकि बुल्लयौ ॥छं०॥११४॥
लंगा लोह उभाइ । पर्‍यौ घुंमर घन मज्झै ॥
जुरत तेग सम तेगं । कोर बहर कछु सुज्झै ॥
यौं लग्गौ सुरतान । अनल दावानल दग्गं ॥
ज्यौं लंगूर लग्गया । अगनि अग्गै आलग्गं ॥
इक मार उभ्भार अपार मल । एक उभ्भार सुभ्भारयौ ॥
इक बार तर्‍यौ दुस्तर रुपे । दूजै तेग उभारयौ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

(१) मो.-अधिर । (२) मो.-रावन । (३) ए.-रिन. तरिन ।

कुंडलिया ॥ तेग झारि उभझारि बर । [1]फिरि उपमा कवि [2]कथ्थ ॥
मैन बान अंकुर [9]बुहुरि । तन तुट्टै बहि हथ्थ ॥
तन तुट्टै बहि हथ्थ । फेरि बर बीर स बीरह ॥
मरन चित्त सिंचयौ । अनम [4]जिन तजी ज जीरह ॥
हथ्थ बंध्थ आहित्त । फेरि तक्के उर बेगा ॥
लंगा लंगरि राइ । बीर [5]उबाइ सु तेगा ॥ छं० ॥ ११६ ॥

लोहाने की वीरता का वर्णन। चौसठ खाँओं का मारा जाना।

कवित्त ॥ लोहानौ मद मुंद । बान मुक्कै बहु भारी ॥
फुट्टि सु ठट्टर ज्वान । पिट्ठ जरद्द निकारी ॥
मनों किवारी लागि । पुट्ठि षिरकी उघ्घारिय ॥
बट्टारी बर कट्टि । बीर अवसान संभारिय ॥
एक भार मीर उरभारि [6]झर । करि सुमेर परि अरि सु फिरि ॥
चवसट्ठि षान गोरी परै । तिन [7]रावव इक राज परि ॥ छं० ॥ ११७॥

मानि लोह मारूफ । रोस बिड्डुर गाहक्के ॥
मनु पंचानन बाहि । सद्द [8]सिरहद्द हक्के ॥
दुहूं मीर बर तेज । सीस इक सिंघह बाही ॥
टोप टुट्टि बहकरी । चंद [9]ओपमता पाई ॥
मनु सीस बीय श्रृंग विज्जुलह । रही हेत तुटि भान हति ॥
उतमंग सुहै बिब टूक ह्वै । मनु उड़गन न्रप तेज मति ॥ छं० ॥ ११८॥

चौसठ खान मारे गए और तेरह हिन्दू सरदार मारे गए। हिन्दू सरदारों के नाम तथा उनका किससे युद्ध हुआ इसका वर्णन।

(१) कृ.-फेरि उपम। (२) मो.-तत्थ। (३) मो.-परैं।
(४) ए.-कृ.-को.-तिन (५) ए. उच्चार।
(६) ए.-कर। (७) ए. कृ. को.-राइ। (८) मो.-सिरहस, सिरहसु।
(९) ए. कृ. को.-उपमा मु. उपमा सुइ।

भुजंगी ॥ परे षांन चौसट्ठि गोरी नरिंद । परे सुभर तेरह कहैं नाम चंदं ॥
परे लुथ्थिलुथ्थी जु सेना अलुभ्भं । लिषे कंक अंकं बिना कौन बुझ्झै॥
छं० ॥ ११९ ॥

पऱ्यौ गोर जैतं मधिं सेस ढारी । जिनं राषियं रेह अजमेर सारी
पऱ्यौ कनक आहुट्ठ गोविंद बंधं । जिने मेछकी पारसं सञ्ज षद्धं ॥
छं० ॥ १२० ॥

पऱ्यौ प्रथ्थ बीरं रघूवंस राई । जिनें संधि षंधार गोरी गिराई ॥
पऱ्यौ जैत बंधं सु पावार भानं । जिनें भंजियं मीर बानेति बानं ॥
छं० ॥ १२१ ॥

पऱ्यौ जोध संग्राम सो हंक मोरी । जिनें कट्टियं वैर गोदंत गोरी ॥
पऱ्यौ दाहिमो देव नरसिंघ अंसी । जिनें साहि गोरी मिल्यौ षान गंसी॥
छं० ॥ १२२ ॥

पऱ्यौ बीर बानेत नादंत नादं । जिने साहि गोरी [1]गिल्यौ साहि आदं॥
पऱ्यौ जावलौ जाल्हते सैन भष्षं । हय सार मुष्षं [2]निकस्संत नष्षं ॥
छं० ॥ १२३ ॥

पऱ्यौ पाल्हनं बंध मल्हन राजी । जिनें अंग गोरी क्रमं सत्त भाजी ॥
पऱ्यौ बीर चहुआन सारंग सोरं । बजे दोइ ग्रैहं अ आकास तोरं ॥
छं० ॥ १२४ ॥

पऱ्यौ राव भट्टी बरं पंच पंचं । जिनें मुक्ति के पंथ चल्लाइ संचं ॥
पऱ्यौ भान पुंडीर ते सोम कंमं । [3]भिल्लै जुझ्झयं बज्जयौ पंच जंमं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

पऱ्यौ राउ परसंग लहु बंध भाई । तिनं मुक्ति अंसं छिनं मंझि पाई ॥
पऱ्यौ साहि गोरी भिरै चाहुआनं । कुसादे कुसादे चवैं मुष्ष षानं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

दूसरे दिन तत्तार खाँ का शहाबुद्दीन को त्रिकट व्यूह के मध्य में रख कर युद्ध करना और सामंतों का क्रोध कर के शाह की तरफ बढ़ना।

(१) ए.-मिल्यौ। (२) मो.-तिमकंत। (३) ए.-जिनें जुझ्झतें बज्जयो पंच जंमं।

कवित्त ॥ दस हथ्थी सु विहान । साहि गोरी मुष किन्नौं ॥
कर अकाम बादी । ततार षवकोद स दिन्नौं ॥
नारि गोरि जंबूर । कुहक बर बान अघातं ॥
गज्जि भग्ग प्रथिराज । चित्त करयो अकुलातं ॥
सो मोह कोह बर बज्जि कें । क्रज उन धारय धमसि कें ॥
सामंत सूर बर बीर बर । उठे बीर बर हर्मसि कें ॥ छं० ॥ १२७ ॥
अद्ध अद्ध जोजनह । मीर उड़ि संगा केरी ॥
तब गोरी सुरतान । रोस सामंतह घेरी ॥
चक्र अवन चौंडोल । अग्ग [1]सेषन पंचासौ ॥
सूर कोट सूँ जोट । सार मारनह हुलासौ ॥
बर अगनि बगी [2]हल्लौ नहीं । पहर कोट सुजोट हुअ ॥
बर बीर रास समरह परिय । सार [3]धार बर कोट [4]हुअ । छं०॥१२८॥
रसावला ॥ मेलि साइं भरं, षग्ग षेले करं । हिंदु मेछं जुरं, मंत जा जंभरं ॥
छं० ॥ १२९ ॥
दंत कड्ढे करं, उप्पमा उप्परं । केद भीलं जुरं, कोपि कड्ढे करं ॥
छं० ॥ १३० ॥
कंध ननं धरं, पंघ जष्पं फिरं । तीर नंषे करं, मेघ बुट्ठं बरं ॥छं०॥१३१॥
आवधं संभरं, बंक तेगं करं । चंद बीजं बरं, अद्ध अद्धं धरं ॥
छं० ॥ १३२ ॥
बीय बंधं धरं, कित्ति जपै सरं । अस्स ढुंढै फिरं, रंभ बंछै बरं ॥
छं० ॥ १३३ ॥
थान थानं नरं, धारधारं तुटं । धंम वासं छुटं, ... ॥
छं० ॥ १३४ ॥
साह गोरी बरं, षग्ग षेले करं । .... ॥ छं० ॥ १३५ ॥

खुरासान खां का सुलतान के बचन पर तैश में आकर घोर युद्ध मचाना ।

(१) ए.-नेषन । (२) मो.-हसी, हस्यौ । (३) ए.कृ को.-धरि ।
(४) ए.-तुव ।

कवित्त ॥ षाँ षुरसान ततार । षिभिक्ष दुज्जन दल भष्षै ॥
बचन स्वामि उर षटकि । झटकि तसबी कर मंषै ॥
कज्जल पंति गज विथुरि । मध्य सैनं चहुआनी ॥
अजै मानि जै रारि । वियस तेरह चपि प्रानौ ॥
धामंत फिरस्तन कढ़ि असी । दहति पिंड सामंत भजि ॥
बर बीर भीर बाहन [1]कहर । परे धाइ चतुरंग सजि ॥छं० ॥१३६॥

रघुवंसी के घोर युद्ध का वर्णन ।

भुजंगी ॥ पऱ्यौ रघ्घुबंसी अरी सेन जाड़ी। हुतौ बाल बेसं संषं लज्ज डाढ़ी ॥
बिना लज्ज प्रषे सची ढुंढि पिष्षौ। मनों डिंभरू जानि कै मीन कष्षौ ॥
छं० ॥ १३७ ॥

पऱ्यौ रूक रिनवट्ट अरि सेन माही । मनो एक तेगं झरी नीर दाही ॥
फिरैं अड्डवट्टं उपम्मान बट्टं । विश्वंकम्म बंसी कि दारुन्न गट्टं ॥
छं० ॥ १३८ ॥

[2]परे हिंदु मेच्छं [2]उलथ्थी पलथ्थी । करैं रंभ भैरं ततथ्यें ततथ्थी ॥
गहे अंत गिद्धं बरं जे कराली । मनों [3]नाल कट्टें कि सोभै म्नाली ॥
छं० ॥ १३९ ॥

तुटे एकटं गाढ़ि कै षग्ग धायो । मनों विक्रमं राइ गोबिंद पायो ॥
गहै हिंदु हथ्थं मलेच्छं भ्रमायो । जनों भीम हथ्थीन उप्पम्म पायो ॥
छं० ॥ १४० ॥

ननं मानवं जुद्ध दानव्व ऐसौ । ननं इंद तारक्क भारथ्थ कैसो ॥
भकं बज्जि झंकारयं झंपि उट्ठं । बरं लाइ पंचं बधं पंच छुट्टै ॥
छं० ॥ १४१ ।

मनो सिंघ उभभ्भै अलंभभंत छुट्टै । रनं देव सांई सए आव घुट्टै ॥
घनं घोर ढुंढं उतक्कंठ फेरी । लगे झग्गरैं हंस हज्जार एरी ॥छं० ॥१४२॥
तुटै रुंड मुंडं बरं जो करेरी । बरद्दाइ रिझ्झें दुहूं दिन्न मेरी ॥छं० ॥१४३॥

---

(१) ए.-करह । (२) मो.-उलथ्थी । (३) ए. को.-माल ।

लड़ाई के पीछे स्वर्ग में रम्भा ने मेनका से पूछा तू उदास क्यों है ? उसने उत्तर दिया कि आज किसी को वरन करने का अवसर नहीं मिला।

कवित्त ॥ पच्छै भौ संग्राम । अग्ग अच्छर बिचारिय ॥
पुच्छै रंभ मेनिका । अज्ज चित्तं किम भारिय ॥
तब उत्तर दिय फेरि । अज्ज पहुनाई आइय ॥
रथ्थ बैठि औथांन । सोअतह कंत न पाइय ॥
भर सुभर परें भारथ्थ भिरि । ठाम ठाम चुप जीत सथ ॥
उथकीय पंथ हलै चल्यौ । सुथिर सभौ देषीय [1]तय ॥छं० ॥ १४४ ॥

रम्भा ने कहा कि इन वीरों ने या तो विष्णु लोक पाया या ये सूर्य में जा समाए।

कुंडलिया ॥ कहैं रंभ सुनि मेनकनि । ए रहु जिन मत जुथ्थ ॥
अरिय अनंमति जानि करि । जुति आवें ग्रह रथ्थ ॥
जुति आवें ग्रह रथ्थ । ब्रह्म शिव लोकंह छंडी ॥
विश्न लोक ग्रह करै । भान तन सों तन मंडी ॥
रोमंचि तिलकं बसि वरी । इंद्र बधू पूजन जही ॥
ओपम्म जोग नन हुअ बहुरि । अब तारन बरहै कही ॥छं०॥१४५॥

हुसैन खां घोड़े से गिर पड़ा, उजबक खां खेत रहा, मारूफ खां, तातार खां सब पस्त हो गए, तब दूसरे दिन सबेर सुलतान स्वयं तलवार निकाल कर लड़ने लगा।

कवित्त ॥ षां हुसेन ढरि पर्यौ । अस्व फुनि पर्यौ सार बहि ॥
झुझझ फेरि सति सीव । षान उजबक षेत रहि ॥
षां ततार मारूफ । षान षाना घट घुम्मैं ॥
तब गोरी सु बिहान । आइ दुज्जन मुष झुम्मैं ॥

(१) ए.कृ.को.-नथ।

कर तेग झल्लि [1]मुक्तिय सुबर। नहि सुलतानह पन करी ॥
अदि हूर दौह पलटे सुबर। तबहि साहि फिरि पुकरी ॥छं०॥१४६॥

सुलतान ने एक बान से रघुवंस गुसाईं को मारा दूसरे से भीम भट्टी को तीसरा बान हाथ का हाथ ही में रहा कि पृथ्वीराज ने उसे कमान डालकर पकड़ लिया।

तब साहिब गोरी नरिंद। सतबान समाहिय ॥
पहिल बान बर बीर। हने रघुवंस गुसांइय ॥
दूजै बानत कंट। भीम भट्टी बर भंजिय ॥
चाहुआन तिय बान। षान अद्ध धरि रज्जिय ॥
चहुआन कमान सु संधि करि। तीय बान हथ हथ रहिय ॥
तब लगि चंपि प्रथिराज नें। गोरी वै गुज्जर गहिय ॥छं० ॥१४७॥

सुलतान को पकड़ कर और हुसैन खां तातार खां आदि को विजय करके पृथ्वीराज दिल्ली गए। चारों ओर जैजैकार हो गया।

गहि गोरी सुरतान। षान हुस्सैन उपाऱ्यौ ॥
षां ततार निसुरत्ति। साहि झारी करि डाऱ्यौ ॥
चामर छच रषत्त। बषत लुट्टे सुलतानी ॥
जै जै जै चहुआन। बजी रन जुग जुग बानी ॥
गज बंधि बंधि सुरतान कों। गय ढिल्ली ढिल्लीन्द्रपति ॥
नर नाग देव अस्तुति करैं। दिपति दीप दिव लोकपति ॥
छं० ॥ १४८ ॥

एक समय प्रसन्न होकर पृथ्वीराज ने सुलतान को छोड़ दिया।

दूहा ॥ समै एक बत्ती न्टपति। बर छंड्यौ सुरतान ॥
तपै राज चहुआन यौ। ज्यों ग्रीषम मध्यान ॥ छं० ॥ १४९ ॥

(१) मो.-पट्टिय।

एक महीना तीन दिन क़ैद रखकर नौ हज़ार घोड़े और
बहुत से माणिक्य मोती आदि लेकर
सुलतान को गज़नी भेज दिया।

मास एक दिन तीन। साह संकट में रंड्डौ॥
करिय अरज उमराउ। दंड हय मंगिय सुड्डौं॥
हय अमोल नव सहस। सत्त सै दिन ऐराकी॥
उज्जल दंतिय अट्ठ। बीस मुर ढाल सु जक्की॥
नग मोतिय मानिक नवल। करि सलाह संमेल करि॥
परि राइ राज मनुहार करि। गज्जन वै पठयौ सुघरि॥छं०॥१५०॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके रेवातट
पातिसाह ग्रहनं नांम सत्तवीसमो प्रस्ताव
संपूरणम्॥ २७॥

अथ अनंगपाल समयौ लिख्यते ।

(अट्ठाइसवां समय ।)

अनंगपाल दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को देकर तप करने चला गया था परंतु उसने पृथ्वीराज से फिर विग्रह क्यों किया, इस कथा का वर्णन ।

दूहा ॥ दिय दिल्ली चहुआन कौं । तूंअर बद्री जाइ ॥
कहौ दंद क्यों पुक्करिय । फिरि दिल्ली पुर आइ ॥ छं० ॥ १ ॥

अनंगपाल क बद्रिकाश्रम जाने पर पृथ्वीराज का दिल्ली का निर्द्वन्द शासन करना ।

रष्पि बीर प्रथिराज कौं । गै तीरथ्थह राज ॥
व्यास बचन आनंद सजि । तिहँ पुर बज्जन बाज ॥ छं० ॥ २ ॥
जुग्गिनिपुर प्रथिराज लिय । वज्जि त्रिघोष सुदंद ॥
अनगपाल तूंअर बरन । किय तीरथ्थ अनंद ॥ छं० ॥ ३ ॥

यह समाचार देश देशान्तर में फैल गया कि पृथ्वीराज दिल्ली में निर्द्वन्द राज्य करता हुआ स्वजनों को मान देता है और उपकार को न मान कर अनङ्गपाल की प्रजा को बड़ा दुःख देता है ।

पद्धरी ॥ तूंअर नरिंद तप तेज जानि । प्रथिराज व्यास बचनह प्रमानि ॥
त्रिमान ग्यान मेटै न कोइ । इंद्रादि अंत कलपंत होइ ॥ छं० ॥४॥
दस दिसा अमिट धरती अकास । [1]चंद्रादि सूर ग्रह ग्रह प्रकास ॥
ब्रह्मा टरंत टारंत काल । रहंत पंच भूते बिचाल ॥ छं० ॥ ५ ॥
विष्यात बात दस दिसि कहंत । विथ्थुरी देस देसन तुरंत ॥
अप अप्प आनि दीनें निवास । तूंअर नरिंद परजा निकास ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) ए.कृ.को.-चंद्रमा सूर दिब दिन प्रकास ।

निरद्दै नरिंद इन विधि विसास। आनंग लोक हिरद्दै निरास॥
उपगार को न मानै विवेक। संसार माहिं ऐसे अनेक॥ छं० ॥ ७॥

अग्नि, पाहुना, विप्र, तस्कर आदि परदुःख नहीं जानते पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करता है और अनङ्गपाल पराए की भांति तप करता है।

कवित्त ॥ तसकर चुक्कुक विप्प। बैद [1]दुरजन अति लोभी॥
प्राहुन अहि जल ज्वाल। काल न्रिप इन में मोभी॥
इन पर चिंता नाहिं। बहुत करि जौपै कहिये॥
[2]अप्प सहज चालंत। चित्त की बात न लहिये॥
प्रथिराज लोक तूंअर घरह। अरुचि दिष्ट मंडै तनह॥
भोगवै धरा जीवत धनिय। संक न कोइ मानै मनह॥ छं० ॥ ८॥

सोमेश्वर अजमेर में राज्य करता है और पृथ्वीराज को दिल्ली मिली यह सुनकर मालवापति महिपाल को बड़ा बुरा लगा।

दूहा ॥ संभरि वै सोमेस न्रप। अति उतंग आचार॥
ढिल्ली प्रथि तूंअर दइय। सुन्यौ पिज्यौ महिपार॥ छं० ॥ ९॥

मालवापति ने चारों ओर के राजाओं को पत्र लिख कर बुलाया। गक्खर, गुण्ड, भदौड़ और सोरपुर के राजा आए। सलाह हुई कि पहिले सोमेश्वर को जीत कर तब दिल्ली पर चढ़ाई की जाय।

कवित्त ॥ चंदेरी चतुरंग। सैन हय गय पल्लानं॥
ठौर ठौर कग्गदह। दए मालव धरवानं॥
गष्षड़ गुंड भदौड़। सोरपुर ह्वर समाहे॥

(१) ए.-को. जुरजन।

मिलि आए महिपाल। अप्प बल सेन उमाहे ॥
एकंत मत्त सोमेस पर। धुर संभरि वै लिज्जिये ॥
प्रथिराज तुँअर ढिल्ली दिसा। फिरि कलहंतर किज्जिये ॥
छं० ॥ १० ॥

मालवपति का अजमेर पर चढ़ाई करने के लिये सेना सहित चंबल नदी पार होना।

बर मालव महिपाल। चढ्यौ चहुआन सु उप्पर ॥
सेन सजी चतुरंग। दियौ मेलानह सो पुर ॥
हय गय थट्ट अघट्ट। घाट चंबिल परि आइय ॥
घुरि निसान घमसान। थान थानह हल्लाइय ॥
जादव नरिंद हरिबंस कुल। अति आतुर अजमेर पर ॥
उत्तर्यौ सरित संमित सकल। धुंस धरा रावत्त धर ॥ छं० ॥ ११ ॥

शत्रुओं के आने का समाचार सुन कर सोमेश्वर अपने सामंतों को इकट्ठा करके बोला कि पृथ्वीराज को तो अनंगपाल ने बुला लिया इधर शत्रु चढ़े हैं, ऐसा न हो कि कायरता का धब्बा लगे और नाम हँसा जाय।

सुनि सोमेसर सूर। चिंति मन मंत उपाइय ॥
बर प्रथिराज नरिंद। अनंगपालह बुल्लाइय ॥
रज रजवट रष्षियै। राव रावत्तन कीजै ॥
रहै गल्ह संसार। आव जल अंजुल छीजै ॥
मो बंस अंस आनल अटल। कोइ न कहो काइर कहिय ॥
अप्पान सुभ्भ संबोधि न्रप। जुद्ध घात पुव्वत लइय ॥ छं० ॥ १२ ॥

सामंतों ने सलाह दी कि शत्रु प्रबल हैं इससे इनको रात के समय छल करके जीतना चाहिए।

सिंघ पँवार असिंघ। गौड़ संजम चहुआनं॥
बाहन बीर सधीर। राज गुर राम सुजानं॥
मंत मंति भर अवर। करे समचित्त अनेकं॥
तुम लज्जा धर धीर। बीर बीराधि [1]बिवेकं॥
संभरिय सोम पुच्छत बयन। कहिय बत्त सम तत्तकल॥
छल बल अनेक छचिय करन। तुच्छ सत्य पुज्जै न [2]षल॥छं०॥१३॥

दूहा॥ चंद चंद निसि दंद मति। [3]रतु सरइ गुरवार॥
तेरसि तकि सज्यौ सयन। रचि [4]रति बाह विचार॥ छं०॥ १४॥

सोमेश्वर ने कहा कि तुम ने नीति ठीक कहा पर रात को छापा मारना अधर्म है इसमें बड़ी निन्दा होगी।

कवित्त॥ रत्ति वाह छल जुड। अधम [5]षिची परिमानं॥
[6]कूड़ कपट मारियै। अधम निद्रा गति आनं॥
मल मोचन रति रवन। सेन पूजन जल न्हानं॥
मंच जाप जप्पंत। करै नह घात सुजानं॥
तुम मंत तंत संचौ कहिय। इह अध्म्म भ्रम हारिये॥
जो गिनइ पुरुष निंदा अपर। लछ रति वाह विचारिये॥
छं०॥ १५॥

सामंतों ने कहा कि सेतु बांधने में श्रीराम ने, सुग्रीव ने बालि को मारने में, नृसिंह ने हिरण्यकश्यप के मारने में और श्रीकृष्ण ने कंस के मारने में छल किया, इस में कोई दूषण नहीं है।

छल तक्यौ श्री राम। सेत साइर तब बंध्यौ॥
छल तक्यौ सुग्रीव। बालि जिउ ताड़इ संध्यौ॥
छल तक्यौ लछिमना। सूर मंडल अरि बेध्यौ॥
छल तक्यौ नरसिंघ। हृग्गकुस नष उर छेद्यौ॥

---

(१) ए.कृ.को.-बिमेकं। (२) ए.कृ.को.-पल। (३) ए.कृ.को.-रित, रति।
(४) मो.-रवि। (५) ए.कृ.को.-छात्रि। (६) ए.कृ.को.-कूड कूड।

छल बल करंत दूषन न कोइ। किम्न कलह कं सइ करिय ॥
सोमेस राज तकि अप्प विधि। रत्तिवाह छल मन धरिय
छं० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ ससि निम्मल ससि सूर अप। दिय अस अस्त्र उतान ॥
प्रथुक जोग जिन साल [1]धर। संजोजन सव्वान ॥ छं० ॥ १७ ॥

सोमेश्वर के सामंतों का युद्ध के लिये तयारी करना।

भुजंगी ॥ ग्रहे सूर सोमेस सा आयुधेसं। इकं सोभई राज जोगिंद भेसं ॥
तजे मोह माया ग्रहन्नौ कहन्नौ। तजे बंध पुत्तं हरिं चित्त मन्नौ ॥
॥ छं० ॥ १८ ॥

इकं सामि धम्मं ग्रहे अंग लाजं। * तिनं सस्त्र झल्ले जुधं किप्ति काजं ॥
न काया न कामं धरे रामराजं। हवैं हाक सूरां कपै काइराजं ॥
छं० ॥ १९ ॥

पचं विस्नुकान्ता जलं जान्हवीयं। वपुं उद्धरे कोटि सौ पाप कीयं ॥
बरै रंभ वामं दुती साम कामं। मनों दाहिनाहत्त पीरंभ रामं ॥
छं० ॥ २० ॥

तिनं सस्त्र हल्लै जुधं कित्य काजं। हुवै हाक सूरं कपै काइराजं ॥
मुरं हाक्सं आयुधं दंड धारै। तिनं नाम चंदं मु छंदं उच्चारै ॥
छं० ॥ २१ ॥

नमो तन्न चंसं ग्रहे सूल पासं। परस्सं असन्नी सकत्तौ विकासं ॥
ग्रहे तूंन तोमार भल्ली कपानं। जुधं काज नालीक नाराज जानं ॥
छं० ॥ २२ ॥

सरं चक्र सारंग वज्रं गदायं। दंड मुद्गरं भिंडिमालं सघायं ॥
हलं मूसलं सेल सावल्ल षग्गं। ग्रहे सूरता अप्प अपपन्न बग्गं ॥
छं० ॥ २३ ॥

छुरिका कती कुद्ध बक्की कुंतायं। [2]फलक्कं कनीका भुसुंडी बतायं ॥
लियं संकं [3]दुस्फोटकं पारिघायं। पटीसं छतीसं ग्रहे आयुधायं ॥
छं० ॥ २४ ॥

(१) मो. जर।
(२) ए. कृ. को.-पलक्कं।
* यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।
(३) मो.-दुस्पोटं।

पट्टन के यादव राजा ने आकर डेरा डाला। अजमेर जीतने का उत्साह जी में भरा था।

दूहा ॥ पट्टन जादव आय नृप। किय डेरा बरबान ॥
सुनि सोमेसर दौरि करि। ज्यों निधि रंक प्रमान ॥ छं० ॥ २५ ॥
अति आतुर अजमेर पहु। आइ कुलिंगन बाज ॥
यों रस रत्ता सूर भर। मुकति चिया धरि साज ॥ छं० ॥ २६ ॥

चारों ओर खलबली मच गई। रुद्रगण तथा नारद आनन्द से नाचने लगे।

कवित्त ॥ अप्प अप्प मुष अरिन। सूर संमुह झल्लारिय ॥
हाइ हाइ उच्चार। धरनि अंबर तुटि डारिय ॥
चमकि चित्त चिपुरारि। अष्ट गन नारद नंचिय ॥
सेस सटप्पटि सलकि। दिसा दंतिन तन अंचिय ॥
मानों कि जलद तुट्टिय तड़ित। बर पट्टन आहुट्ट भर ॥
रति वाह प्रात हूं ते दियो। अगनि सार बुझ्यो कहर ॥ छं० ॥२७॥

योद्धाओं की तयारी तथा उनके उत्साह का वर्णन।

रसावला ॥ कट्टि षग्गं लगं, आइ जुट्टे अगं। जानि सूरं उगं, लग्गि षग्गं बगं ॥
छं० ॥ २८ ॥
जानि प्रब्बै जगं, सामि ध्रम्मं मगं। षंड षंडं अगं, श्रोन [1]तुट्टे रगं ॥
छं० ॥ २९ ॥
पानि वाहै षगं, सूर साधें सगं। देवि [2]ताली ठगं, ठाम ठामं ठगं ॥
छं० ॥ ३० ॥
डंकनीयं डगं, एक एकं दिगं। सूर रोपे पगं, नग्ग मानों नगं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
सार धारं तमं, जानि ऊकं अगं। बसं जालंदगं, फुट्टि [3]षोपं षगं ॥
छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए. कृ. बुट्टे। (२) ए. कृ. को.-लागी।

दट्टि मट्टं भगं, हंस उड्डे मगं। मार मारं रगं, मुष्ष बोले दगं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

लट्ट चट्टं परं, लथ्थ वथ्थं भरं। श्रंत श्रोनं झरं, आनि पछ्छे सरं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

कट्टि षंडं गुरं, हथ्थ अंगं जुरं। आनि षिप्ति षलं, चंच गिद्धी पलं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

ईस सीसं झलं, माल मध्धे [1]घलं। सूर जद्दो बलं, अभ्भ तुट्यौ कलं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

भूर भूपं मिलं, आयुधं अत्तुलं। .... ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ मार मार मच्चौ कहर। दोउ दलनि सिर मंधि ॥
प्रौढ़ा नायक छयल रमि। प्रात न बंछै संधि ॥ छं० ॥ ३८ ॥

सोमेश्वर ने पिछली रात धावा कर दिया शत्रु के पैर उखड़ गए।

कवित्त ॥ सोमेश्वर भजि सूर। सूर उभ्भारिग भरि भरि ॥
मार फुट्टि चहुआन। भिरिय जद्दो भरि लरि लरि ॥
घरी एक तिन रत्त। सार मैगल सिर बुट्टिय ॥
संभर वैर सु आनि। सार भग्गि जु सिर तुट्टिय ॥
भग्गइय सूरमा दुहूं मयन। [2]किहि न कोई वर चंपयौ ॥
उप्पारि लियौ अजमेर पहु। [3]दागन किहूं दीयौ गयौ ॥ छं० ॥ ३९ ॥
हथ्थिय ढाल ढलक्कि। घालि लीनौ अजमेरी ॥
परि लंगा लंगरी। सेन दुज्जन दल फेरी ॥
भाग बीर प्रथिराज। अरिन उप्पारि स लीनौ ॥
इन सोमेसर राव। सत्त हथ्थिन बर कीनौ ॥
जिम तिमर सूर भंजे सुभर। गुरु गल्हान न कवि टरै ॥
जब लगै भूमि साइर [3]सुथ्थित। तव लगि कवित सु[4] उब्बरै ॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए.-घलं, वलं। (२) मो.-किन। (३) मो.-सुप्राति। (४) मो.-विस्तरै।

संसार में एक मात्र कविकथित यश के अतिरिक्त और कुछ अमर नहीं है ।

दूहा ॥ रह्यो न को रवि मंडलह । रहि कवि मुष्ष सु भल्लह ॥
जीरन जुग पाषान ज्यों । पूर रहंदी गल्लह ॥ छं० ॥ ४१ ॥

यादव राज ऐसा घायल होकर गिरा कि मुंह से बोल न सकता था ।

फिरि जद्दव भर देस दिसि । समर घाइ ली सैन ॥
अवर चित्त तें अवर परि । कहि न सकै बैन ॥ छं० ॥ ४२ ॥

सोमेश्वर उसे घर उठा लाया बड़ा यत्न किया । एक महीना बीस दिन में अच्छे होकर राजा ने आरोग्य स्नान किया । सोमेश्वर ने बहुत दान दिया ।

ग्रिह सोमेसर आनि तिन । मास एक दिन बीस ॥
रष्षि जतन किय न्हान जब । दियौ दान सु जगीस ॥ छं० ॥ ४३ ॥

पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना । उसने प्रतिज्ञा की कि जब घात पाऊंगा शत्रुओं को मजा चखाऊंगा ।

सुनिय [1]बत्त प्रथिराज न्रप । चिंति भविष्षत बत्त ॥
अरियन तौ आछोड़ियै । जो लब्भीजै घत्त ॥ छं० ॥ ४४ ॥

इधर दिल्ली की प्रजा ने बद्रिकाश्रम में अनङ्गपाल के पास जाकर पुकारा कि महाराज चौहान के अन्याय से हम लोगों को बचाइए ।

कवित्त ॥ अनँगपाल प्रज लोक । जाइ बद्री [2]पुकारिय ॥
हम तुम सेवक सामि । छंडि ग्रह राज निकारिय ॥
नहि अदब्ब मन्नयौ । क्रूर मच्यौ चहुआनं ॥

(१) मो.-षबर । (२) मो.-पुकारय, निकारय।

हो अनगेस नरेस । गई ढिल्ली धर जानं ॥
जा जियत राज धर पर बसिय । नीति न्याय न प्रकासियै ॥
नर नाग देव निंदैं सकल । न्रिप करंत तहँ बासियै ॥ छं० ॥ ४५ ॥

अनङ्गपाल ने क्रुद्ध होकर अपने मंत्री को बुलाकर समाचार कहा । मंत्री ने कहा कि पृथ्वी के विषय में बाप बेटे का विश्वास न करना चाहिए ।

सुनिय तेज जाजुल्य । दूत परधान पठाइय ॥
हम भंडार धर धान । द्रब्ब सब्बह भरि लाइय ॥
व्यास बचन संभारि । कहै तब मंत्री पुच्छह ॥
देस भ्रमी धन आदि । राज ग्रहयो गढ़ सब्बह ॥
न्रिप सेव देव दुज्जन उरग । इन ढिल्लै नन मुक्कियै ॥
बर बंध पुत्र अरु तात न्रप । इन बिसास धर चुक्कियै ॥ छं० ॥ ४६ ॥

राज्य प्राप्त करने के लिये गत ऐतहासिक घटनाओं का वर्णन ।

धर काजैं कौरवन । पुंड आनिय न [1]बंध गति ॥
धर काजैं [2]दसग्रीव । बंध बंध्यो भभिषन मति ॥
धर काजैं नल राइ । बंधवन षेत न अप्पौ ॥
धर काजैं बलि राइ । देव देवाधि उथप्पौ ॥
धर काज मुंज त्रिय के कहै । भोज प्रहारन मत कियौ ॥
धर काज कन्ह तूंअर अधम । पुत्तह सै मुष [3]बिष दियौ ॥ छं० ॥ ४७ ॥

तूंअर वंश ने सर्वदा भूल की, पहिले किल्ली को उखाड़ा फिर आपने पृथ्वीराज को राज्य दिया ।

दूहा ॥ तुम तूंअर मति चूकना । करि किल्ली ढिल्लीय ॥
फुनि मत अप्पन ही करिय । प्रथीराज धर दीय ॥ छं० ॥ ४८ ॥

राजा हाथी घोड़ा स्वर्ण इत्यादि सब दे दे परंतु राज्य की सर्प मणि के समान रक्षा करे ।

(१) मो.-बंध ।　　(२) मो.-दशशीश ।　　(३) मो. बसि ।

राज दान गज तुरिय [1]द्रव। देत न लग्गे वार ॥
धरतिय रष्षन यौ सुहद। अहि मनि रष्षन हार ॥ छं० ॥ ४९ ॥

अनङ्गपाल के आग्रह करने पर मंत्री लाचार होकर दिल्ली की ओर चला।

मंत्रि सु मंतह सीष लै। चलि दिल्लिय चहुआन ॥
आइस कौं जोइस का हा। [2]इह श्रत भम्म प्रमान ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज से मिलकर मंत्री ने कहा कि अनङ्गपाल आप पर अप्रसन्न हैं उन्होंने आज्ञा दी है कि हमारा राज्य हमें लौटा दो या हम से आकर मिलो।

चंद्रायना ॥ मिल्यो न्रिपह सोमंत बसीठ जु मुक्कल्यौ ॥
सा चहुआनह पास नरिंद सु इक्कल्यौ ॥
षिज्यो अनंग नरिंद भूमि हमह्वीं तजौ ॥
कै मिलौ आइ चहुआन सुबुद्धिय मंत जौ ॥ छं० ॥ ५१ ॥

इस पर पृथ्वीराज का क्रोधित होना।

बोल्यो हंकि नरिंद बसीठ जु दुब्बर्‍यौ।
तब कमधज्ज नरिंद न उत्तर संभर्‍यौ ॥
बात अनंगन कौन हीन हुइ उट्ठयौ।
चंपि लुहट्ठिय हथ्थ बीर बर टुट्टयौ ॥ छं० ॥ ५२ ॥

वसीठ का कहना कि जिस का राज्य लिया आप उसी पर क्रोध करते हैं।

दूहा ॥ उठौ बीर बसीठ बल। करि जुहार चहुआन ॥
धनी उभै धर लुट्टियै। इह अचिज्ज परिमान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि पाई हुई पृथ्वी कायर छोड़ते हैं।

(१) मो.-बर। (२) मो.-भूत्त ध्रम्म सुप्रमान।

कवित्त ॥ रं बसीठ मति [1]ढोठ । बोल बोलै मलिहीना ॥
सनेपात उप्पनं । किनें सकर [2]पय दीना ॥
[3]धर कर छुट्टी संगि । हथ्य चाहूं मरदाना ॥
फिरि बंछै जो मुद्ध । होइ ताही जिय ग्याना ॥
सट्ठीय बुद्धि नट्ठिय न्रपति । तुम [4]बिमत्ति दिन लहि कहिय ॥
उग्गमै सूर पच्छिम [5]परक । तौ दिल्ली धर तुम नहिय ॥छं०॥५४॥

मंत्री का यह सुनकर उदास मन हो चला आना ।

दूहा ॥ सुनि यह बत्त सो दूत चलि । बिन आदर मन मंद ॥
हीन दीन दिष्षत इसौ । मनौं कि [6]बासर चंद ॥ छं० ॥ ५५ ॥

मंत्री ने अनङ्गपाल से आकर कहा कि मैंने तो पहिले ही कहा था, यह दैत्यवंशी चौहान कभी राज्य न लौटावेगा । पृथ्वी तो आप दे चुके अब बात न खोइए ।

कवित्त ॥ [7]तूंअर बीर बसीठ । सामि संदेस सु अष्षिय ॥
तुम हक्कत्तन कुसल । बत्त पहिलैं हम भष्षिय ॥
वह बलिष्ठ दैवान । दैत्यबंसी चहुआनं ॥
सूज अग्र उप्परै । देय नह तास प्रमानं ॥
तुम दई भूमि निज हथ्थ करि । अथ्थ मित्त मन षोइये ॥
संभरि हैस देसन न्रपति । तौ हक्कत्त बिगोइये ॥ छं० ॥ ५६ ॥

अनङ्गपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ आया । पृथ्वीराज नाना की मर्याद को सोचने लगा और उसने कैमास को बुला कर पूछा कि मेरी सांप छछूंदर की गति हुई है अब क्या करना चाहिए ।

(१) दीठ, ढाठ, धठि । (२) ए.-पर । (३) मो.-धर कर संगिय बुद्धि ।
(४) ए. कृ. को.-बिपाति । (५) ए. कृ. को. परक ।
(६) ए. कृ. को.-बासुर । (७) मो.-तोअर ।

अनगपाल न न मानि। कूंच किन्नौ दिल्लीय दिसि॥
भूत (१)भविष आनी न। किये रत्तत नयन (२)रिस॥
अप्प सेन सजि जूह। आइ ढिल्ली धरवानं॥
मात पिता मरजाद। चिंत लग्गो चहुआनं॥
कैमास मंत पुच्छ्यौ नृपति। कही कहा अब किज्जिये॥
अहि ग्रहिय छछुंदरि जो तजै। नैन जठर भंषि छिज्जिये॥छं०॥५७॥

जो लड़ाई करता हूं तो अपनी मा के पिता (नाना) से लडता हूं और जो छोड देता हूं तो अपनी हीनता प्रगट होती है, सो अब क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो।

दूहा॥ जो मारौं तौ मातपित। छंडौ तौ बल हानि॥
कहि मंत्री मंत्रं गपति। न्याय रीति विधि जानि॥ छं०॥ ५८॥

कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिए, इन्होंने पृथ्वी दी है इनको आप न दीजिए, जो न मानें यहीं आकर भिड़ें तो फिर लड़ना चाहिए।

कवित्त॥ सुनौ नृपति चहुआन। न्याय तौ कलह न किज्जे॥
इन दीनी धर अप्प। अपप तौ इनह न दिज्जे॥
जो न्त्रिमान प्रमान। होइहै सोइ नियानं॥
जब लग्गौ गढ़ आइ। जाइ तब जुद्ध जुरानं॥
सजि कोट ओट सामंत सथ। नारि गोर जंबूर वहि॥
लग्गै न जोर छिज्जै सुभर। इत सामंत लगंत नहि॥ छं० ॥ ५९॥

अनंगपाल ने धूमधाम से युद्ध आरम्भ किया। कई दिन तक लडाई हुई अन्त में अनंगपाल की हार हुई।

(१) ए. कृ. को.-भवष। (२) मो.-रस।

अनंगपाल बल मंडि। सुभर ढिल्ली गढ़ लग्गा॥
लेहु लेहु करि दौरि। अप्प बर अप्प बिलग्गा॥
नारि गोरि आतस्स। कोट पारस भर घाइय॥
जे भर मंझे आइ। सोर करि मोर उठाइय॥
लग्गौ न घात तूंअर न्रपति। दिवस च्यार मंडिय ररिय॥
पुज्यौ न प्रान पानप घटत। दिल्ली धर ढिल्ली करिय॥ छं० ॥ ६० ॥

हार कर अनंगपाल का फिर बद्रीनाथ लौट जाना।

चौपाई॥ दीह च्यारि ढिल्ली न्रप भारी। बर चहुआन संमुहे हारी॥
गोतं चर फिर रावर छंडिय। बद्री छोर सरन ग्रह मंडिय॥छं०॥६१॥

आधी सेना को वहीं और आधी को अजमेर के पास छोड़ कर अनंगपाल लौट गया।

अनगपाल पंडिय गयौ। सैन सु बंधिय थट्ट॥
अद्ध सेन अजमेर पर। [1]टारे हथ्थ सुभट्ट॥ छं० ॥ ६२ ॥

मंत्री सुमन्त की सलाह से अनङ्गपाल ने माधो भाट को सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के पास सहायता के लिये भेजा।

बीर बसीठ सुमंत मिलि। स्वामि बचन [2]समुझाइ॥
मतौ मंडि चहुआन कौ। माधो भट्ट चलाइ॥ छं० ॥ ६३ ॥

माधो भाट जाकर सुलतान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को जीतने की इच्छा से चढ़ चला।

माधो भट्ट सु मुकल्यौ। मिल्यौ आइ सुलतान॥
चल्यौ साहि गोरी सुबर। मिलि बंधन चहुआन॥ छं० ॥ ६४ ॥
तूंअर अरु चहुआन के। [3]घर बज्यौ बहु दंद॥
माधौ भट्ट सु मुकल्यौ। बर गज्जनै नरिंद॥ छं० ॥ ६५ ॥

(१) मो.-टारिग। (२) मो.-मम काय। (३) कृ.-भर।

नीतिराव खत्री ने अनङ्गपाल के गोरी के पास दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया।

नीति [1]राव षित्री सुवर। तुंअर तिहि परधान॥
गोरी दिसि नृप अप्प दिसि। भेद दियौ चहुआन॥ छं०॥ ६६॥
अनंगपाल मान्यो नहीं। बरजिय पंडि नरिंद॥
तूंअर अरु चहुआन के। रहै न एकै बंध॥ छं०॥ ६७॥

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आप को पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फैलाकर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते हैं?

कवित्त। दई भूमि मापित्त। लई हम हथ्थ पसारह॥
सो पाच्छो फिर किम सु०। बोल बोलहु अविचारह॥
तुम बिरद्ध तप जोग। राज चाहौ सु करन अब॥
दयौ राज तुम हमह। कहा उपजी चित्तह तब॥
मंगौ जु आइ फिरि भूमि तम। सोब राज पाच्छो नहीं॥
जो गयौ जंत चलि ग्रेह जम। कहौ सु फिरि आवै कहीं॥ छं०॥ ६८॥

जैसे बादल से बूंद गिर कर, हवा से पेड़ के पत्ते गिर कर; आकाश से तारे टूट कर फिर उलटे नहीं जा सकते, वैसेही हमें पृथ्वी देकर इस जन्म में आप उलटी नहीं पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम में जाकर तपस्या कीजिए।

जलद बुंद परि धरनि। कबहुँ जावै न [2]नभ्भ फिर॥
पवन तुट्टि तरु पत्त। तरु न लग्गै सु आइ थिर॥
तुटि तारक आकास। बहुरि आकास न जावै॥
सिंघ उलंघि सवजह। सोइ फुनि हनि नह पावै॥

(१) ए.-तत्त। (२) मो. को.-अम्भ।

अपिपत्र सु पढमि तुम उद्दक सह । सो पायो इजै अनम ॥
तप्पौ सु आइ बद्री तपह । मत विचार राजस मनम ॥ छं० ॥ ६६ ॥

आप सुलतान गोरी के भरमाने में न आइए, उसे तो हमने कई बार बाँध बाँध कर छोड़ दिया है।

तुम गोरी पतिसाह । कहै जिन [1]मत भरमावहु ॥
सत्त भ्रंम साहस्स । काइ पर कहै गमावहु ॥
सामंतनि सुलतान । बार बहु गहि गहि छंड्यौ ॥
उन अपत्ति के सथ्थ । सपति तुम मत्त सु मंड्यौ ॥
जिम खग्गि जद्म विधवा चरन । अप समान होवन कहै ॥
मंगौ सु द्रव्य कारन स भ्रम । कछू अप्प चित्तह चहै ॥ छं० ॥ ७०॥

हरिद्वार में आकर दूत अनंगपाल से मिला। सँदेसा सुनते ही अनंगपाल क्रोध से उछल उठा।

अरिल्ल ॥ सुनि सु दूत आयौ हरद्वारह । कथ्थि अनग सम सकल बिचारह ॥
सुनत श्रवन अति रोस [2]भुकित मनु । जिम सु सिंघ [3]फुकत कुलिंग जनु ॥
छं० ॥ ७१ ॥

अनंगपाल नें क्रुद्ध होकर पत्र लिखकर दूत को ग़ज़नी की ओर भेजा। पत्र में लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए हम और आप मिलकर दिल्ली को विजय करें।

कवित्त ॥ अनँगपाल भुकि आप । दूत ढिंग हुंते साह जे ॥
तिनहि कह्यौ तुम आइ । कहौ साहब लिख्यौ ते ॥
दिय पत्र [1]तिन हथ्थ । धरा देत न पहुचानह ॥
तुम आवहु चढ़ि अतुर । कूंच पर कूंच मिलानह ॥
मिलि अप्प एक एकह सुमंति । लरिं सु लेंहि दिल्लिय धरा ॥
तुम मत्त छंडि तप बद्रिवर । अब सु पाँइ रुप्पें धरा ॥ छं० ॥ ७२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मन। (२) ए. कृ. को.-झुकत। (३) ए. कृ. को.-फुनि

दूत ने आकर अनंगपाल के राज्यदान करने फिर उसे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अनंगपाल के हरिद्वार आने का समाचार सुलतान को सुनाया सुलतान सुनते ही चढ़ चला।

गए दूत गज्जनै। साहि सम बत्त बदै बर॥
तप सु छंडि तोंवरह। आइ हरद्वार लियन घर॥
पहुमि मंडि प्रथिराज। राज अप्पै न इक्क तिलं॥
दैवाद्र चढ़ि साहि। भूमि लिज्जै सु उभय मिलि॥
सुनि साह घाव नौसान किय। चढ्यौ सेन चतुरंग सजि॥
हय गय समूह साकति सकल। अनंगपाल साहस्स कज॥छं०॥७३॥

सुलतान शाहबुद्दीन की सेना की चढ़ाई तथा सरदारों का वर्णन।

चढ़त साहि साहाव। चढ्यौ तत्तार खान बर॥
षान षान [1]षुरसान। षान मारुफ मँहा भर॥
कालिम षान कमाम। मीर [2]नासेर अभंगह॥
अलूषान आलील। चढ़िय हय गय चतुरंगह॥
सथ सयन सकल सारह [3]लष। उभय सहस मत मत्त इभ॥
नौसान बज्जि नौबति निहसि। रहे गज्ज धर पुर सु नभ॥छं०॥७४॥

छंद लघुनाराच॥ चढ्यौ सहाव सज्जियं। निसान जोर बज्जियं॥
मिले [4]सु साह उम्मरं। सजें अनूप संभरं॥ छं०॥ ७५॥
गयंद मद्द गंधयं। सुझै न राह अंधयं॥
पगं ठिलै पहारयं। नगं परं निहारयं॥ छं०॥ ७६॥
सकाज बाज साजयं। कुरंग दैषि लाजयं॥
अनूप चाल उज्जवै। सहूर चित्त रिझझवै॥ छं०॥ ७७॥

(१) ए.-षुरसेम। (२) ए. कृ. को.-नासैंन।
(३) ए.-लष, लष्षि। (४) ए. कृ. को.-जु।

रजोह मोह उच्छली । सपूर सूर पच्छली ॥
दिषें सु साहि आतुरं । कँपें सु अंग कातरं ॥ छं० ॥ ७८ ॥

लगन्न छीन उल्लहं । षँड़े जु दूरि दुल्लहं ॥
न आन पान जानयं । उड़ान ज्यौं सिँचानयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥

कांत इल्लगारयं । सु आप सिंधु पारयं ॥ छं० ॥ ८० ॥

सिन्धु पार उतरकर, बीस हजार सेना साथ देकर सुलतान ने तातार खां को अनंगपाल को लाने के लिये हरिद्वार भेजा । तातार खां के आने का समाचार सुनकर अनंगपाल बड़े हर्ष से उससे मिला ।

कवित्त ॥ सिंधु उतरि सुरतान । कह्यौ सम षान ततारह ॥
तुम अनगेसह लैन । जाहु जँह तँह हरिद्वारह ॥
सहस बीस लै सेन । अनँग सम मिल्लिय सोनपुर ॥
बिलम करहु जिन बहुत । अभँग सजि आवहु आतुर ॥
करि नवनि षान तत्तार चलि । पहुँच्यौ हरद्वारह सहर ॥
करि षवरि तत्थ अति प्रीत तन । मिल्यौ राज अनगेस बर ॥
छं० ॥ ८१ ॥

अनंगपाल ने बहुत से घोड़े मोल लिये और सेना भरती करके लड़ाई की तयारी की ।

दूहा ॥ तहँ तोंअर अनगेस नृप । लए मोल बहु बाज ॥
उभय सहस सेना सजित । रष्षि सुभर किय साज ॥ छं० ॥ ८२ ॥

तीन सौ वीर जो अनंगपाल के साथ वैरागी हो गए थे वे भी तलवार बांध कर लड़ने के लिये तयार हुए ।

सत्त तीन भर सुभर जे । निज वैराग सरूप ॥
तिन बंधी तरवार फिरि । बदल्लि भेष बहु रूप ॥ छं० ॥ ८३ ॥

तातार खां ने रात भर रहकर सबेरे उठते ही अनंगपाल के साथ कूच किया। अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर आगे से बढ़कर उसने सुलतान को समाचार दिया, सुलतान आकर अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ सलाह करने लगे।

कवित्त ॥ मिले षान तत्तार। बत्त मत तत्त रत्त बर ॥
दै निसान पछु, फटत। चले पुर सोन उभै भर ॥
भए साह दल निकट। रषि जोजन जुग अंतर ॥
दई षबरि सुलतान। चल्यौ साहाब समंतर ॥
दस कोस अग्ग अनगेस कहूं। मिल्यौ जाइ साहिब सुहित ॥
बैठे सु उतरि अति प्रीति पर। भनहु उभै जन इक्क चित ॥छं०॥८४॥

अनंगपाल ने सब वृत्तान्त सुनाया, दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वीराज आप आकर हाजिर हो जाय तो उसे जीव दान करना चाहिए। सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र भेजा कि तुम बड़ा अनुचित करते हो जो राजा को राज नहीं सौंप देते और जो पृथ्वी न लौटाओ तो आकर युद्ध करो। पृथ्वीराज ने कहा कि ऐसी कोटि चढ़ाई क्यों न करै अनंगपाल अब राज्य उलटा नहीं पा सकता।

पद्धरी ॥ सुरतान समिलि न्रप अन्नगेस। किय अनग समह पतिसाह पेस ॥
गज पंच मत्त पंचास बाज। साकत्ति सज्जि दिय अनगराज ॥
छं० ॥ ८५ ॥
किरवान [1]तीन कम्मान एक। सिरपाव स्वातसुत माल मेक ॥
दै प्रीति चढ़े निस्सान पाव। आए सु सोनपुर उभै ठाव ॥छं०॥८६॥

(१) ए.-तीन, संमान, सामान।

मिलि साह अनग बैठे सुमत्त । तत्तार षानषाना सुचित्त ॥
कहि अनगपाल नृप पुत्र कथ्थ । चहुआन मन न मानै समथ्थ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

जंपै सु साह चढ़ि चलौ प्रात । भंजे सु जुग्गनिय पुरह जात ॥
जो मिलिह अप्प चहुआन आनि । दीजै तौ उभय मिलि प्रान दान ॥
छं० ॥ ८८ ॥

मंनी सु राज अनगेस मन्न । उच्चर्यौ तांम तत्तार षन्न ॥
देषो सु अप्प दूतह पठाइय । लिष्यौ सुबत्त सम विषम दाई ॥
छं० ॥ ८९ ॥

चर चारु चाहि हक्कारि लीन । लिषि तत्त पत्त तिन हथ्थ दीन ॥
अनगेस पुच्छि सुत तुम्म अप्प । तुम समपि राज गय बद्रि तप्प ॥
छं० ॥ ९० ॥

करि तप्प आइ फिरि अन्नगेस । दिज्जै सु इनहि हय गय सु देस ॥
आनौ न चित्त चहुआन और । जग्गें सु सामि न विरस्स चौर ॥
छं० ॥ ९१ ॥

भुगई न जाइ पर लेइ वस्त । समपौ सुराइ आनग समस्त ॥
गो चार पहर चारै सु गोइ । कबहूं न धेन बर धनी होइ ॥ छं० ॥ ९२ ॥
थनवार अम्ब सौंपै सु राज । ना होइ ओय पति तास बाज ॥
करसनी कृष्षि रष्षी सुभाव । तिन भोग सुभर रावर [1]सुभाय ॥
छं० ॥ ९३ ॥

अप्पौ सु देस अनगेस रस्स । जिन करी अप्प मभ्भझह विरस्स ॥
भयें विरस सुष्ष पावै न कोइ । इम देत सीष तुम हितू होइ ॥
छं० ॥ ९४ ॥

भये वीरस सुष्ष कह भयौ पंड । कुल सकल नास भौ वप्पु षंड ॥
अप्पौं न भूमि जो जीय सुद्ध । तो सजहु आनि इन समहि जुद्ध ॥
छं० ॥ ९५ ॥

दिय पत्त दूत प्रथिराज जाइ । सुनि श्रयन अप्प बहु दुष्ष पाइ ॥
अनगेस राज सुलतान जोर । ऐसे जु सजै कोटिक्क ओर ॥ छं० ॥ ९६ ॥

(१) मो.-सुभाय ।

पावै न तऊ दिल्ली सु थान । भुकि राव घाव कीनौ निसान ॥
छं० ॥ ९७ ॥

पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट लगा कर सब सरदारों के साथ कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला ।

गाथा ॥ भुकि किय घाय निसानं । चढ़ि प्रथिराज बाज साजेयं ॥
सब सामंत समेतं । दिय डेरा सु दोइ जोजनयं ॥ छं० ॥ ९८ ॥

दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सुलतान से कहा । जो सब सरदार विरक्त हो गए थे वे भी स्वामि के काम के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए ।

दूहा ॥ देषि दूत गये साहि ढिग । कही षबरि प्रथिराज ॥
चढ्यौ सूर संभर धनी । हय गय दल बल साज ॥ छं० ॥ ९९ ॥
सामत सूर समस्त बर । भय संसार विरक्त ॥
स्वामि ध्रम्म साधन सु बर । मरन लरन मन रक्त ॥ छं० ॥ १०० ॥

सुलतान ने दूत से समाचार सुन कर चढ़ाई का हुक्म दिया ।

अरिल्ल ॥ संभलि बत्त [1]चरं [2]सुलतानं । निहसे [3]बज्जि सु बीर निसानं ॥
भयौ हुकुम साहाब अमानह । सजहु अमीर उम्मरा षानह ॥
छं० ॥ १०१ ॥

पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूच का समाचार पृथ्वीराजं को दिया जिसे सुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पड़ा ।

दूहा ॥ चर सु दिष्षि चहुआन कै । साह षबरि कहि राज ॥
सुनत राज प्रथिराज बर । चल्यौ जुद्ध कज साज ॥ छं० ॥ १०२ ॥

धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला, जब दोनों सेनाएं एक दूसरे से दो कोस पर रह गईं तब पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट दी ।

(१) ए.-बरं । (२) कृ. ए.-सुरतानह, निसानह । (३) मो.-बज्ज ।

चोटक ॥ सजि साज चल्यौ प्रथिराज बरं । सत सामत सूर सपूर भरं ॥
बिरदैत महाबर बीर बली । तिन सौं किन आत न रार कली ॥
छं० ॥ १०३ ॥

[1]परसैं भिरि भारथ पारथ से । न बदै अप ऊपर आनन से ॥
जुध कों तिनके मुष कौन जुरे । न मुरैं मुष धार अनी सुमुरे ॥
छं० ॥ १०४ ॥

सजि साहन सैंन हजार दसं । रह सेर सवान सु बीर रसं ॥
गज [2]सत्त दसं मुर मत्त गजै । तिन देषि बंध्याचल पब्ब लजै ॥ छं० ॥ १०५ ॥
घमके घन घुघ्घर घंट बनं । भननंकत भौरनि झौर भनं ॥
गति देषि तुरंग कुरंग दुरें । तिन के उर अट्ठुन कोट परें ॥ छं० ॥ १०६ ॥
चहुआन चल्यौ चतुरंग दलं । सजि भैरव भूत बिनाल बलं ॥
चर चौसठ जुग्गिनि सथ्थ चलीं । किलकैं करि भारथ बैर रलीं ॥
छं० ॥ १०७ ॥

चमकंत सनाह सु जोति इसी । सु करं मधि मूरति बिंब जिसी ॥
सजि टोप रंगावलि [3]हथ्थ लयं । बनि राज सु [4]पष्षर सा [5]वलयं ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दोइ कोस रह्यौ बिच साहि दलं । चहुआन निसान बजे सबलं ॥
छं० ॥ १०९ ॥

पृथ्वीराज के पहुंचने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने सरदारों को भी बढ़ने का हुक्म दिया ।

दूहा ॥ सजि आयौ चहुआन जुध । सुन्यौ श्रवन पतिसाहि ॥
हुकम षान उमरान हुअ । सज्यौ अंग सन्नाह ॥ छं० ॥ ११० ॥

आगे तातार खां को रक्खा, मारूफ खां को बाईं ओर और खुरासान खां को दाहिनी ओर अनंगपाल को बीच में करके पीछे आप हो लिया ।

---

(१) मे.-पसरें । (२) ए. कृ. को.-सत्त मुरं मदमत गजै ।
(३) ए.-हाथ । (४) मो.-परकर । (५) मो.-बनयं ।

गाथा ॥ मुष्ष सु रिष्षी ततारं । बांई दिसा षान मारूफं ॥
दाहिन वां षुरसानं । मझि अनगेस पुट्ठि साहाबं ॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूह रचना की। आगे कैमास को और पीछे चावंडराय को कर दिया।

सजि ठट्ठी सुलतानं । सुनि चहुआन अप्प व्यूहानं ॥
मुष कीनौ कैमासं । चावँडराइ पुच्छ सज्जायं ॥ छं० ॥ ११२ ॥

अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अनंगपाल को कोई मारे नहीं, जीते ही पकड़ना चाहिए।

दूहा ॥ मझि फौज प्रथिराज रचि । कह्यौ सु कर करि उंच ॥
अनंग राज जीवत [1]गहौ । इह सु रचौ परपंच ॥ छं० ॥ ११३ ॥

दोनों दलों का सामना हुआ कैमास ने युद्धारम्भ किया।

जिन सु हनौ अनगेस जिय । गहौ सु जीयत [2]सास ॥
इतें दुदल दिठ्ठाल भय । लई बग्ग कैमास ॥ छं० ॥ ११४ ॥

दोनों दल का सामना होते ही घमसान युद्ध होने लगा।

बिह दल बल सिंधू बजै । उपजत सूर उहास ॥
[3]ष्योहनि पर नष्षौ पयंग । करि कलकी कैमास ॥ छं० ॥ ११५ ॥

कैमास नें शस्त्र संभाल कर युद्धरम्भ किया। युद्ध का वर्णन।

भुजंगी ॥ लई षग्ग कैमास बीरं अमानं । धमंके धरा गोम गज्जे गुमानं ॥
उतें उप्परी बाग तत्तार षानं। मिले हिंदु मीरं दोऊ दीन मानं ॥
छं० ॥ ११६ ॥

[4]बजे राग सिंधू सु मारू अवग्गे । गजे सूर सूरं असूरं सु [5]भग्गे ॥
चढ़े व्योम विम्मान देषंत देवं । बढ़ै स्वामि काज्जै सु सज्जै उभेवं ॥
छं० ॥ ११७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गहें गहै । (२) मो.-साह । (३) ए. कृ. को.-षोहनि ।
(४) ए. कृ. को.- बज्जे । (५) ए. कृ. को.-भज्जे ।

छुटे नाल गोला हवाई उछंगं। 'न षिव मनों आनि [1]तुट्टे निहंगं।
कारुष्षै चली बान बानं कमानं। भई अंध धुंधं न [2]सुभभौति भानं ॥
छं० ॥ ११८ ॥

मिले सेल सेलं समेलं अपारं। सनाहं फटें होय होवत्त पारं ॥
मदं मत्त दंतं उषारै मसंदं। मनों भिल्लिया पत्र उष्पारि कंदं ॥
छं० ॥ ११९ ॥

लगी नाग नागं मुषी सूर ऐचै। हथम्मापुरं आनि बलिभद्र पैचै॥
झरं भोभरं भार भारं भनंकै। करै गज्ज चिक्कार [3]ताजी किनंकै॥
छं० ॥ १२० ॥

छुअं पूरनं जाम मध्यान अंची। मिले दिट्ठ तत्तार आनंग मंची ॥
चलै मातुलं ओर हक्कै कमासं। हन्यो षान षग्गं पहुंचे हहासं ॥
छं० ॥ १२१ ॥

तकै तुंवरं पै लयौ गज्ज राजं। धपे दाहिमा पागरा छंडि बाजं ॥
जरी सेल गाढ़ी विचं [4]पीलवानं। बियो घाव कीयौ सु कट्टै क्रपानं॥
छं० ॥ १२२ ॥

कटी दंत लौ सुंड लोही भभक्कै। मनों सारदा कंदरा थी उबक्कै ॥
पऱ्यो कज्जलंकूट ज्यौं तूटि हथ्थी। तजे तूंअरं भज्जिगे सब्ब सथ्थी॥
छं० ॥ १२३ ॥

भगंदंत वालौ किधौं सु प्रतीकं। महा दिग्घ कायं अरज्जुन्न भीकं ॥
दवी द्वादसं कोस भू घंट सद्दं। पढ़ै वेद बानी पुरानं प्रसिद्दं ॥
छं० ॥ १२४ ॥

पऱ्यो दाहिमा भीम ज्यौं गोल कूंडै। घटो कम्म पथ्थं न सथ्थं उमंडै॥
अलुभ्यो पगं अग्ग में इभ्भ राजं। हरी जेम कूदे करी मध्य गाजं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

किलावा रह्यौ पग्ग में लग्ग पासी। ग्रह्यौ जीवतौ बद्रिकाश्रम्म वासी ॥
सनद्धं रहि कढ्ढियं अद्ध विद्धी। चढ़ी हथ्थ [5]दिल्ली न कारज्ज सिद्धी॥
छं० ॥ १२६ ॥

(१) ए. कृ. को.-नछत्रं। (२) मो.-छुट्ट। (३) ए. कृ. को.-सुभरीसु।
(४) मो.-बाणी (५) सो कृ.को.-पति।

उभै मीत मानौ रहे लग्गि छत्ती। पछें भौर सामंत की आइ पत्ती ॥
घुरासान मारूफ तत्तार जोरी। करें एक फौजं धप्पौ साहि गोरी॥
छं० ॥ १२७॥

इत चहुआनं भुजा के भरोसैं। मनों [1]लंघनो सिंघ तुट्टो सरोसैं॥
[2]गढं इंदपथ्थं सु हायं सु कज्जें। उभै दीन जुट्टे करे षग्ग धज्जें॥
छं० ॥ १२८॥

रसं लूक लग्गै हुए टूक टूकं। रिनं षत्त पट्टैं [3]पुराने अचूकं॥
थटे जाइ आघाट बैकुंठ थानं। मिल्यौ नट्ट गोटा जिसौ आव जानं॥
छं० ॥ १२९॥

बरं चंग चंगे परी हूर सूरं। रचें रुंडमालं महेसं गरूरं॥
सिवा ओन [4]धप्पौ सु कीनौ डकारं। करें षेचरा भूचरा किल्लकारं॥
छं० ॥ १३०॥

उडै रेन गैनं भयौ अंधकारं। पराए न अप्पं न सुझ्झै लगारं॥
इसौ भांति भारथ्थ मंतो करूरं। घरी च्यार पंचै रह्यौ रथ्थ सूरं॥
छं० ॥ १३१॥

हरद्दार लौं जाइ लायौ सु भग्गौ। सबै सेन भग्गौ तिनं लार लग्गौ॥
रह्यौ पातिसाहं भुजं लाज भल्लै। षरं षंचि साइक छंडै सु भल्लै॥
छं० ॥ १३२॥

गनें कौन नामं अनेकं फवज्जं। लग्यौ दाहिमा कै तुरंगम्म कज्जं॥
बड़गुज्जरं कम्मधज्जं पुंडीरं। छलं पारि दौन्यो करे नाहिं सीरं॥
छं० ॥ १३३॥

धरे सिप्परं अड्ड ह्वै काल भेसं। लियौ संग्रहै चौंडरा गज्जनेसं॥
फटे पारसं सत्त साहस मीरं। परें पंचसै षेत हिंदू सु बीरं॥
छं० ॥ १३४॥

उभै पाहुने कीन चंदं प्रकासे। ढले मुष्ष मंगे प्रथीपत्ति पासे॥
छं० ॥ १३५॥

---

(१) ए.-लघल, लंघने, लघनं। (२) मो.- प्रति "इक एक एक सहायं सु कज्जे"।
(२) मो.-सही कें।
(३) ए. कृ. को.-पीनौ।

शहाबुद्दीन को चावंड राय ने पकड़ लिया, पृथ्वीराज की जय हुई सात हज़ार मुसलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए।

कवित्त ॥ बंधि साहि साहाब। लियौ चावंड राय बर ॥
हय कंधह लै डारि। गयौ निज सथ्थ सेन नर ॥
नीर उतरि पतिअसुर। षेत हुंछ्यौ प्रथिराजं ॥
मुसलमान सत सहस। परे सामथ करि काजं ॥
पंच सै सुभर हिंदू सु परि। उभै सत्ति भोरी सु जगि ॥
जित्यौ सु राज सोमेस सुअ। [1]घनै जैत बज्जै बजिग ॥ छं० ॥१३६॥

पृथ्वीराज का सुलतान को क़ैद में भेज कर अनंगपाल को आदर सहित दरबार में बुला कर उन के पैर पड़ना।

मुसल्लमान धर गड्डि। दाग निज सुभर दिवायौ ॥
लियें जीति प्रथिराज। समह सामंत धर आयौ ॥
सभा बैठ भर सुभर। कह्यौ कैमास राइ गुर ॥
अनंगेसह लै आउ। चल्यौ मंत्रीं सु लेन घर ॥
आन्यौ सु राज अनगेस तह। प्रथीराज लग्गौ सु पय ॥
सनमान प्रान अति प्रीति सौं। भाव भगत राजन करय ॥ छं० ॥१३७॥

दाहिम राव को हुक्म देकर सुलतान को दरबार में बुलाना, उसके आने पर पृथ्वीराज का अनंगपाल से कहना कि आप तो बड़े बुद्धिमान हैं आप इस शाह के बहकाने में क्यों आ गए?

दियौ हुकम दाहिम्म। ल्याउ दीवान साह कहु ॥
सब देषें सामंत। मुक्कि आमन अपत्ति बहु ॥

---

(१) ए. कृ. को.-बजै।

आयौ साहि हजूर। मिल्यौ प्रथिराज राज बर ॥
बैठि साह साहाब। मुष्य देषें जु [1]सुभर भर ॥
बोल्यौ जु राज प्रथिराज बर। अनँगराइ तुम अति सुमति ॥
भरमौ सु केम कहिं साहि के। इह तौ [2]पति उत्तरि अपति ॥
छं० ॥ १३८ ॥

दूहा ॥ कहै राज प्रथिराज गुर। सुभर बोलि बर अग्ग ॥
अनँग सीस उंच न करै। नाग दमन सिर नग्ग ॥ छं० ॥ १३९ ॥

सरदार गहलौत ने कहा इसमें महाराज अनंगपाल का दोष नहीं है यह सब प्रपंच दीवान का रचा हुआ है।

कवित्त ॥ कहै [3]गज्जि गहिलौत। कहूं सामंत सुनौ सहु ॥
अप्प अनी [4]एकंत। [5]असुर सुरतान बही कहु ॥
समुद सजल जल षार। ससी लग्गौ सु कलंकह ॥
सूर मिलै रस राह। पंथ लुट्टाइ गोय बहु ॥
दसरथ्थ आप काक सु विक्रम। दइ दिवान विपरीत गति ॥
पतिसाह कही सुनतें सकल। अनगपाल नट्ठी सुमति ॥ छं० ॥ १४० ॥

चामुंड राय का कहना कि कुसंग का यही फल होता है।

दूहा ॥ बदै राइ चामंड बर। इह अवस्थ होइ अंग ॥
जब सु मानसर तजि करै। हंस काग कौ संग ॥ छं० ॥ १४१ ॥

सामंतों ने जितनी बातें कहीं सब अनङ्गपाल नीचा सिर किए सुनता रहा कुछ न बोला।

जिते वचन सामँत कहे। तिते सहे अनगीस ॥
चीत चीत्ह सम सुनि रह्यौ। उच्यौ न उरध सीस ॥ छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज का शाह को एक घोड़ा और सिरोपाव (खिल्लत) देकर छोड़ देना।

(१) मो.-सुर सुभर। (२) ए. कृ. को.-पानि (३) कृ.-गाजि। (४) मो.-एकंग
(५) ए. कृ. को.-असुरन नं निबही कहूं।

चल्यौ अनंग बद्री सरन। पहुंचायौ प्रथिराज न्रप ॥
तहं जाइ राज तोंवर सुवर। तपै राज उग्रह सु तप ॥ छं० ॥ १५७ ॥

पृथ्वीराज की सहानुभूति दयालुता और बीरता की प्रशंसा।

धनि सु चित्त प्रथिराज। करुन रस आप उपन्नौ ॥
द्रब्ब दरक सत अद्ब। पुन्य कारन भरि दिन्नौ ॥
सबै सुभर अनगान। आनि आदर ग्रह बासिय ॥
धनि धनि जंपै लोइ। किञ्ति भू मंडल भासिय ॥
आषेट दुष्ट दुज्जन दलन। करै केलि सामंत सथ ॥
कबि चंद छंद बंधिय कवित। प्रथ्थिराज भारथ्थ कथ ॥ छं० ॥ १५८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल ढिल्ली आगमन फिरि प्रथिराज जुरन बद्री तप सरन नाम अठाविसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २८ ॥

[दूसरा भाग समाप्त।]